पियर एजुकेटर

हेतु

प्रशिक्षण मॉड्यूल

परिचय

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एन.ए.सी.पी. III) का मुख्य उद्देश्य उच्च जोखिम समूहों एवं सामान्य जनसंख्या में नए संक्रमणों की रोकथाम करना है । एफ.एस.डब्लू, ट्रकर्स, माइग्रेन्ट, एम.एस.एम. तथा आई.डी.यू. समूहों में एच.आई.वी. के संक्रमण को कम करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम (Targetted Intervention) सबसे प्रभावी तरीका है क्योंकि इन समूहों में एच.आई.वी. के संक्रमण का जोखिम अधिक होता है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्थान (NACO) और राज्य टी.आई परियोजना के माध्यम से उच्च जोखिम समूहों की पूरी कवरेज को प्राथमिकता देते हैं ।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एन.ए.सी.पी 3 के अन्तर्गत सामुदायिक संस्थाओं (सी.बी.ओ) एवं एन.जी.ओ टी.आई के द्वारा पियर द्वारा हस्तक्षेप (peer led intervention) को प्रोत्साहित किया गया है । सारी टी.आई. परियोजनाओं की संरचना समुदाय को सशक्त करने के लिए की गई है। इनके द्वारा प्रत्येक सदस्य को एच.आई.वी./एड्स के जोखिम को कम करने व ज़रूरी देखभाल, उपचार व सहयोग जैसे मूलभूत अधिकारों की जानकारी व सेवाएं दी जाती है।

अतः बचाव की रणनीतयां देखभाल एवं उपचार से जुड़ी हैं तथा समुदाय को लांछन व भेदभाव के विरूद्ध सशक्त बनाती हैं।

कार्यक्रम के क्रियान्वयन की उच्च स्तरीय कवरेज और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि इन समुदायों के बीच काम कर रहे सी.बी.ओ और एन.जी.ओ को सीखने के अवसर प्रदान किए जाएं।

इस प्रशिक्षण माड्यूल का मुख्य उद्देश्य टी.आई परियोजना के पियर एजुकेटर को लाभ पहुँचाना है । वह इस परियोना की' रीढ़ की हड्डी ' के समान हैं और उनकी पहल और प्रतिबद्वता लम्बे समय तक इस परियोजना को सफल बनाएगी।

माड्यूल की संरचना

पियर शिक्षा पर प्रशिक्षण के लिए एक विस्तृत पाठ्यक्रम की आवश्यक्ता को पूरा करने के उद्देश्य से इस प्रशिक्षण माड्यूल को विकसित किया गया है । इस माड्यूल में अनेक विषयों को शामिल किया गया है जिससे प्रतिभागी पियर एजुकेटर के रूप में अपनी भूमिका को समझ सकें। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य पियर के ज्ञान और कौशल का विकास करना है ।

यह प्रशिक्षण पुस्तिका दो भागों में विभाजित है : –

– **भाग 1** : एफ.एस.डबलू और एम.एस.एम पियर के प्रशिक्षण के लिए

– **भाग 2** : आई.डी.यू पियर के प्रशिक्षण के लिए

भाग 2 में कुछ ऐसे सत्र हैं जो भाग 1 में भी हैं और कुछ नए सत्र हैं जो कि केवल आई.डी.यू समूह के लिए ही हैं ।

समय सारणी

इस माड्यूल को एफ.एस.डबलू और एम.एस.एम पियर के प्रशिक्षण के लिए 4 दिन और आई.डी.यू पियर के प्रशिक्षण के लिए 3 दिन का बनाया गया है । प्रतिभागियो से अपेक्षा की जाती है कि वह इस कार्यशाला में अपना पूरा समय दें।

चर्चा और प्रतिभागियों के अनुभवों के आदान प्रदान के लिए समय का ध्यान रखते हुए प्रत्येक सत्र की योजना बनाई गई है। इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों की सीख सुनिश्चित करने व प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए समूह कार्य, ब्रेनस्टार्मिंग और खेल जैसे सहभागिता पूर्ण तरीकों का इस्तेमाल केया गया है। इस पुस्तिका में वह बिन्दु भी शामिल हैं जो प्रशिक्षकों की सत्र के संचालन में सहायता करेंगे ।

कार्यशाला से पहले

हर प्रशिक्षण कार्यशाला के लिए विस्तृत तैयारी की आवश्यक्ता होती है और हर प्रशिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह यह तैयारी पहले से पूरी कर लें । निम्नलिखित सूची प्रशिक्षकों को अपनी तैयारी सुनिश्चित करने में सहायता कर सकती है : –

क्र. सं.	सूची	स्थिति (✔ या ×)
1	नाको की ऑपरेशनल गाइडलाइन व इस प्रशिक्षण मैनुअल को पढ़ लिया है।	
2	तैयारी हेतु प्रशिक्षण माड्यूल को भली प्रकार से पढ़ लिया है।	
3	पियर और ओ.आर.डबलू की प्रतिभागिता सुनिश्चित कर ली है (खासकर पियर को योजना , कियान्वयन और मॉनिटरिंग टूल्स को समझने में सहयोग हेतु)	
4	प्रतिभागियो के ले जाने के लिए 5 फ्लिप बुक तैयार कर ली हैं।	
5	सत्र के दौरान प्रयोग की जाने वाली सभी आवश्यक सामग्री (खेल और अभ्यास के लिए) की तैयारी कर ली है	
6	सत्र के लिए आवश्यक स्थानीय व्यक्ति से संपर्क (जैसे पी.एल.एच.आई.वी, डाक्टर) कर लिया है	

प्रशिक्षण कैसे करें

प्रशिक्षक/फैसिलिटेटर को अनुभव आधारित सीखने के तरीकों (experiential & participatory) की जानकारी होनी चाहिए। उनके अन्दर खुले प्रश्न पूछने की क्षमता होनी चाहिए ताकि प्रतिभागियों के विचार/भ्रान्तियों निकल कर आ सकें। चूंकि प्रतिभागियों में अलग अलग स्तर (profile) के लोग होंगे अतत प्रशिक्षक को चाहिए कि वह सभी की सहभागिता सुनिश्चित करे।

सभी प्रशिक्षकों को तकनीकि रूप से सक्षम होना चाहिए ताकि वह परामर्श से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकें। विभिन्न विषयों को स्थानीय आवश्यक्ताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार ढ़ालने की क्षमता होनी चाहिए।

मैनुअल में दी गई प्रशिक्षण विधियों जैसे ब्रेनस्टार्मिंग, खेल के अलावा प्रशिक्षक/फैसिलिटेटर सत्र से संबंधित अन्य विधियों का भी प्रयोग कर सकता है जैसे क्विज़, तर्क–वितर्क आदि। फीडबैक फार्म का प्रतिदिन विश्लेषण करना चाहिए ताकि महत्वपूर्ण मुददे जैसे ज़रूरी विषयों की समझ और विषय एवं मुद्दों की उपयोगिता को समझने में यदि प्रतिभागियों को कठिनाई आ रही हो तो उसे सरल किया जा सके।

हर स्तर पर यह आवश्यक है कि प्रतिभागी प्रशिक्षण कक्ष में मिली सीख को क्षेत्र (फील्ड) में सीखी बातों से जोड़ सकें।

इस माड्यूल का प्रयोग केसे करें ?

प्रत्येक सत्र में निम्नलिखित सूचना शामिल है ;

- **उद्देश्य** ; प्रशिक्षक सत्र के अन्त तक क्या सिखाना चाहता है ।
- **अपेक्षित परिणाम** ; सत्र का क्या परिणाम होना चाहिए
- **समयावधि** ; हर सत्र में कुल कितना समय लगेगा
- **विधि** ; प्रशिक्षण की विधि और तकनीक जिनका सत्र में प्रयोग किया जाएगा
- **सामग्री / तैयारी** ; सामग्री जिसकी सत्र के संचालन में आवश्यकता हो जैसे चार्ट पेपर , मार्कर पेन , हैण्डआउट आदि।
- **प्रक्रिया** ; गतिविधियों एवं सत्र के संचालन के लिए चरणबद्ध निर्देश। इसमें नोट्स के रूप में विस्तृत जानकारी शामिल है जिसका प्रशिक्षक सत्रों में प्रयोग कर सकता है।

इसके अलावा हर दिन के अन्त में दैनिक फीडबैक फार्म दिए गए हैं, प्रशिक्षक को सुनिश्चित करना चाहिए कि हर दिन के अन्त में यह फार्म भरे जाएं। यदि आवश्यक हो तो प्रशिक्षक फीडबैक फार्म में दिए गए हर सत्र के शीर्षकों को पढ़ सकता है जिससे कि अशिक्षित पियर फीडबैक फार्म को उचित तरीके से भर सकें ।

मैनुअल में एनर्जाइज़र दिए गए हैं जिनका प्रयोग प्रशिक्षक अपने अनुसार बीच बीच में कर सकता है।

प्रतिभागियों को दी जाने वाली सामग्री

प्रतिभागी अपने साथ फ्लिपबुक ले जाएंगे जिनका प्रयोग वे सामुदायिक सदस्यों के साथ आपसी बातचीत (वन टू वन) के दौरान एक टूल के रूप कर सकते हैं । इसके अतिरिक्त कोई भी प्रतिभागी जिसने आई.डी.यू. का प्रशिक्षण लिया है, चाहे तो अपने साथ पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण ले जा सकता है ।

प्रशिक्षक के याद रखने के लिए मुख्य बिन्दु

क्या करें

- कार्यशाला से पहले पूरा माड्यूल पढ़ लें ।
- प्रतिभागियों की आवश्यकतानुसार समय सारिणी को बदल सकते हैं।
- प्रतिभागियों की रूचि एवं प्रतिभागिता को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण विधियों का प्रयोग करें।
- सुनिश्चित करें कि सभी प्रशिक्षण सामग्री जैसे हैण्डआउट , चार्ट आदि उपलब्ध हों।
- प्रतिभागियों की जानकारी का सम्मान करें ।
- पियर को भाग लेने और प्रस्तुतिकरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रशिक्षण के बाद सुनिश्चित करें कि एक फॉलो–अप योजना विकसित की जाए।
- ध्यान रखें कि यह एक सहभागितापूर्ण प्रशिक्षण है जिसमें आपकी भूमिका एक सुगमकर्ता (facilitator) की है।

क्या न करे

- किसी एक ही व्यक्ति को चर्चा में हावी न होने दें।
- केवल स्वयं ही न बोलें बल्कि प्रतिभागियों का ज़्यादा बोलने का मौका दें, प्रतिभागियों से ब्रेनस्टार्म एवं चर्चा करवाएं।
- प्रतिभागियों में आपसी बातचीत और मोबाइल फोन के इस्तेमाल को प्रोत्साहित न करें।
- प्रशिक्षण को नीरस न होने दें – सत्र के बीच में एनर्जाइजर का प्रयोग करें।
- केवल पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण को ही न पढ़े बल्कि अच्छे से तैयारी करें और पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण को एक टूल के रूप में देखें।

भाग 1 :
एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम/आई.डी.यू के प्रशिक्षण हेतु पुस्तिका

विषय सूची

परिचय

दिन 1

सत्र 1 : प्रथम सत्र

1 अ) : परिचय

1 ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय

1 स) : नियम बनवाना

सत्र 2 : पियर शिक्षा

2 अ) : पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा

2 ब) : पियर की भूमिका व गुण

सत्र 3 : पियर की आवश्यकता और महत्व (फिल्म प्रदर्शन)

सत्र 4 : समुदाय को समझना

4 अ) : जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना

4 ब) : नेटवर्क को समझना

दिन 2

सत्र 1 : ऑउटरीच और ऑउटरीच योजना

स्पाट विश्लेषण , हॉट स्पाट लोड मानचित्रण

सत्र 2 : यौन संचरित संक्रमण

2 अ) : यौन संचरित संक्रमणों को समझना

2 ब) : एस.टी.आई की रोकथाम और नियंत्रण में पियर की भूमिका

सत्र 3 : सकारात्मक रोकथाम व आई.सी.टी.सी और ए. आर. टी. पर रेफरल

दिन 3

सत्र 1 : कंडोम को बढ़ावा देना

1 अ) : पुरूष और महिला कंडोम

2 ब) : कंडोम की माँग और आपूर्ति

कंडोम की उपलब्धता और पहुँच का मानचित्रण

कंडोम की माँग का अनुमान

कंडोम गैप विश्लेषण

सत्र 2 : जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को संबोधित करने के लिए संचार

2 अ) : वार्तालाप आधारित आपसी बात चीत (IPC)

2 ब) : पियर द्वारा आपसी बातचीत (1 to 1)

दिन 4

सत्र 1 : मॉनिटरिंग व डॉक्यूमेन्टेशन

टूल 1 : अवसर अन्तराल विश्लेषण

टूल 2 : प्रेफरेन्स रैंकिंग (प्राथमिकता के अनुसार श्रेणी में रखना)

टूल 3 : पियर मानचित्रण

टूल 4 : पियर की साप्ताहिक योजना एवं गतिविधि शीट

सत्र 2 : संकट प्रबंधन

सत्र 3 : एच.आई.वी के अलावा अन्य मुद्दे (सामान्य स्वास्थ्य , स्वयं सेवी समूह , सामाजिक अधिकार)

सत्र 4 : प्रशिक्षण मूल्याँकन

दिवस 1

दिवस 1

सत्र 1 : प्रथम सत्र (30 मिनट)

1 अ) : परिचय (10 मिनट)	10.00 – 10.10
1 ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय (10 मिनट)	10.10 – 10.20
1 स) : नियम बनवाना (10 मिनट)	10.20 – 10.30

सत्र 2 : पियर शिक्षा (1 घंटा, 15 मिनट)

2 अ) : पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा (45 मिनट) – अवधारणा पर प्रस्तुतिकरण – ब्रेनस्टार्मिंग : पियर शिक्षा के लाभ व हानि	10.30 – 11.15
चाय अवकाश (15 मिनट)	11.15 – 11.30
2 ब) : पियर की भूमिका व गुण (30 मिनट) – केस स्टडी व रोल प्ले – ब्रेनस्टार्मिंग : पी यर की भूमिका, ज़िम्मेदारियां व गुण	11.30 – 12.00
सत्र 3 : पियर की आवश्यकता और महत्व (फिल्म प्रदर्शन) **(1 घंटा)** – फिल्म का प्रदर्शन – फिल्म में दिखाए जाने वाले मुद्दों पर चर्चा	12.00 – 01.00
भोजनावकाश (45 मिनट)	**01.00 – 01.45**

सत्र 4 : समुदाय को समझना (2 घंटे)

4 अ) : जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना (1 घंटा) – प्रस्तुतिकरण : जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारक – समूह कार्य : जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारक – समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण – समूह कार्य : पियर की भूमिका – समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण	**01.45 – 02.45**
4 ब) : नेटवर्क को समझना (1 घंटा) – संपर्क मानचित्रण : समझाना व अभ्यास – भौगोलिक एवं सामाजिक नेटवर्क की अवधारणा	02.45 – 03.45
पहले दिन का मूल्यांकन (15 मिनट)	03.45 – 04.00

सत्र 1 : प्रारंभिक सत्र

अ) : परिचय
ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय
स) : नियम बनवाना

सत्र 1 अ : परिचय

उद्देश्य	: प्रतिभागियों एवं प्रशिक्षकों का आपसी परिचय एवं प्रशिक्षण हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करना
अपेक्षित परिणाम	: सभी प्रतिभागी और पियर एजुकेटर एक दूसरे से परिचित हो जाएंगे ।
समयावधि	: 10 मिनट
विधि	: खेल एवं अभ्यास / गतिविधि
सामग्री / तैयारी	: निम्नलिखित अभ्यास के आधार पर ।

प्रकिया :

- सभी प्रतिभागियों का 4 दिवसीय प्रशिक्षण में स्वागत करके उनका इस कार्यशाला में रूचि लेने के लिए धन्यवाद प्रकट करें ।
- प्रतिभागियों को बताएं कि पहले एक खेल के माध्यम से आप लोग एक दूसरे को जानने का प्रयास करेंगे , उसके बाद प्रशिक्षण प्रारम्भ किया जाएगा ।
- निम्नलिखित गतिविधियों में से किसी एक का चुनाव करें और उसका दिशा निर्देश अनुसार संचालन करें ।

खेल / गतिविधि विकल्प 1 – जोडों में परिचय

(इस गतिविधि का संचालन तभी करें जब प्रतिभागी एक दूसरे को न जानते हों या आपके पास विभिन्न संस्थाओं का एक मिला जुला समूह हो)

⇒ पर्चियाँ बनाएं , हर पर्ची पर किसी वस्तु का चिन्ह बनाएं/लगाएं जैसे फूल , फल , जानवर व अन्य वस्तु । हर वस्तु की कम से कम दो पर्चियाँ होनी चाहिए ।

⇒ प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार पर्चियों की संख्या रखें। सभी पर्चियों को एक कटोरे में डाल दें ।

⇒ प्रतिभागियों से गोला बनाने को कहें ।

⇒ प्रतिभागियों से कहें कि वह एक – एक करके पर्चियां निकाल लें ।

⇒ प्रतिभागियों को समय दे जिससे वह अपनी पर्ची पर बने चिन्ह को पहचान सके और वैसे ही चिन्ह वाले दूसरे प्रतिभागी की पहचान करें।

⇒ जब प्रतिभागी अपने साथी की पहचान करलें, तो आपस में बात करके एक दूसरे के बारे में जानें । जैसे उनका नाम , वह कहाँ से आए हैं , वह किस प्रकार का काम करते हैं , वह कितने सालों से परियोजना से जुड़े हुए हैं तथा उनकी क्या रूचि व विशेषताएं हैं ।

⇒ प्रतिभागियों को इस बातचीत के लिए 2 मिनट दें ।

⇒ 2 मिनट के बाद हर जोडे से आगे आकर एक दूसरे का परिचय देने को कहें ।

खेल /गतिविधि – विकल्प 2 – परिवार
(इस गतिविधि का संचालन तभी करें जब प्रतिभागी एक दूसरे को जानते हों या एक ही संस्था से हों और काफी समय से एक दूसरे के साथ काम कर रहे हों)

⇒ पर्चियाँ बनाएं , पर्चियों पर किसी पशु के परिवार के अनुसार नाम दें जैसे यदि आप एक पर्ची पर हाथी का नाम लिखते हैं तो कम से कम 4 से 5 पर्चियों पर हाथी का नाम लिखें – माता हाथी , पिता हाथी , एक हाथी के बच्चे के लिए आदि । इस प्रकार हाथी के पूरे परिवार के लिए पर्चियां बनाएं।

⇒ प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार पर्चियों की संख्या रखें ।

⇒ प्रतिभागियों से गोला बनाने को कहें ।

⇒ प्रतिभागियों से कहें कि वह एक – एक करके पर्ची निकाल लें ।

⇒ प्रतिभागियों को अपनी पर्ची देखने के बाद , पर्ची पर लिखे पशु के अनुसार आवाज़ निकालने को कहें और अपने परिवार के सदस्यों को खोजने को कहें । एक ही परिवार के सदस्यों को एक साथ खड़े होने को कहें जैसे हाथी का परिवार ।

⇒ एक बार सारे प्रतिभागी अपने – अपने परिवार के साथ खड़े हो जाएं तब प्रशिक्षक एक–एक करके हर परिवार को परिचय के लिए आगे आने को कहें । परिवार के मुखिया को अपना और अपने परिवार के सदस्यों का परिचय निम्नलिखित बातें बता कर करने को कहें : –

- परिवार में वह सदस्य कौन है ? (जैसे माता हाथी)
- उसका असली नाम क्या है ?
- वह परियोजना में किस प्रकार का काम करती/करते है ?

सत्र का समापन प्रशिक्षण में इस गतिविधि के महत्व को बताते हुए करें ।

- कोई भी काम साथ में शुरू करने पहले एक दूसरे को जान लेना आवश्यक होता है ।
- इस गतिविधि से प्रतिभागी एक दूसरे के साथ सत्र के दौरान और सत्र के बाद आसानी से घुल मिल सकेंगे ।
- समूह को व्यक्तिगत प्रतिभागी की विशेषताओं/गुण जानने का अवसर मिला है। यह गुण परियोजना को आगे सफलता की ओर बढ़ने में सहयोग देते हैं।

सत्र 1 ब : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय

उद्देश्य : प्रतिभागियों की प्रशिक्षण से अपेक्षाओं को समझना ।

अपेक्षित परिणाम : अपेक्षाओं की सूची बनेगी।

समयावधि : 10 मिनट

विधि : चर्चा , विचारों का आदान प्रदान , सूचीकरण ।

सामग्री / तैयारी : 2 चार्ट पेपर , मार्कर पेन , प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना ।

प्रकिया :

- प्रतिभागियों से पूछें वह प्रशिक्षण में क्यों आएं हैं और उनकी प्रशिक्षण से क्या अपेक्षाएं हैं ।
- सबको अपनी भावनाएं प्रकट करने का अवसर दें ।
- जैसे जैसे वह अपनी अपेक्षाएं बताएं उनकी सूची एक चार्ट पर बनाते जाएं ।
- एक चार्ट पेपर पर ज्ञान संबंधी और दूसरे चार्ट पेपर पर कौशल संबंधी अपेक्षाओं की सूची बनाएं।
- सूची को पढ़कर प्रतिभागियों को बताएं कौन सी अपेक्षाएं प्रशिक्षण में पूरी होंगी और कौन सी बाद में।
- सत्र को प्रशिक्षण का उद्देश्य और समय सारिणी बता कर समाप्त करें ।

सत्र 1 स : **नियम बनवाना**

उद्देश्य : प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान नियमों से अवगत कराना जिससे प्रशिक्षण के लिए सहज एवं अनुकूल वातावरण बनाया जा सके ।

अपेक्षित परिणाम : प्रशिक्षण के दौरान नियमों की सूची तैयार करना।

समयावधि : 10 मिनट

विधि : चर्चा , सूचीकरण ।

सामग्री / तैयारी : 2 चार्ट पेपर , मार्कर पेन ।

प्रक्रिया :

- पिछले सत्र के संदर्भ में प्रतिभागियों को बताएं कि वह लोग उन विषयों के बारे में सीखेंगे जिनका परिचय पिछले सत्र में किया गया था ।
- इन्हें सीखने के लिए यह आवश्यक है कि वह लोग कुछ नियमों का पालन करें जिनसे सीखने की प्रक्रिया सरल होगी । प्रतिभागी स्वयं यह नियम बनाएंगे।
- इन नियमों का पालन करने के लिए प्रतिभागियों को प्रेरित करें (जैसे किसी को दूसरे की आलोचना नहीं करनी चाहिए , सबको प्रश्न पूछने की आज़ादी है , मोबॉइल फोन प्रशिक्षण के दौरान बंद रखे जाएं)
- प्रतिभागियों द्वारा बताए गए नियमों की सूची बनाएं ।
- प्रतिभागियों को बताएं कि उनके द्वारा बनाए गए नियमों का पालन वह स्वयं प्रशिक्षण के दौरान करेंगे।
- घ्यान रखें कि प्रतिभागी कुछ नियमों को जरूर बनाएं यदि वह उनका जिक्र न करें तो स्वयं उन नियमों पर चर्चा करें और अगर सब मान जाएं तो वह नियम बनाएं जैसे प्रशिक्षण के दौरान बाँटी गयी व्यक्तिगत सूचना गोपनीय रखी जाएगी ।
- सत्र का समापन करते हुए सारे नियमों को पढ़ें और सबकी सहमति फिर से लें।
- चार्ट पेपर जिसपर नियम लिखें हैं उसे साफ्ट बोर्ड या प्रशिक्षण कक्ष की दीवार पर लगा दें ।
- यह चार्ट प्रतिभागियों को नियमों का पालन करने की याद दिलाएगा ।

सत्र 2 : पियर शिक्षा

अ) : पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा
ब) : पियर की भूमिका और गुण

2 अ) : **लक्षित हस्तक्षेप परियोजना में पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा**

उद्देश्य : प्रतिभागियों को लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में पियर शिक्षा का महत्व समझाना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी पियर , एजुकेटर, पियर एजुकेटर, पियर शिक्षा इन शब्दों का अर्थ समझें और अपने आप को पियरएजुकेटर की भूमिका में देखें ।

समयावधि : 45 मिनट

विधि : चर्चा , समझाना ।

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन ।

प्रकिया

- प्रतिभागियों से पूछें कि '' पियरएजुकेटर कौन है ?'' , चर्चा को प्रोत्साहित करें ।
- प्रतिभागियों को पियर , एजुकेटर , पियरएजुकेटर का अर्थ बताएं ।

पियर :

⇒ समान समूह का व्यक्ति जैसे :
- स्कूल में – छात्र पियर हो सकते हैं
- औघोगिक परिवेश में – कर्मचारी पियर हो सकते हैं
- चिकित्सालय के परिवेश में – डॉक्टर पियर हो सकते हैं

⇒ इसी प्रकार यौन कार्य में सभी यौन कर्मी (किसी भी श्रेणी से – सड़क पर आधारित , ढ़ाबे पर आधारित , घर आधारित , लॉज आधारित व कोठे पर आधारित) पियर हो सकती हैं । एम.एस.एम के परिवेश में –सभी पुरूष जो अन्य पुरूषों के साथ यौन संबंध रखते हैं , पियर हो सकते हैं । आई.डी.यू के परिवेश में सभी महिलाएं और पुरूष जो इंजेक्शन से नशा करते हैं , पियर हो सकते हैं ।

⇒ इस प्रकार पियर उस व्यक्ति को कहते हैं जो उसी समूह का होता है इसलिए अपने समूह के मुद्दों और लोगों को बेहतर समझता है ।

एजुकेटर

- एजुकेटर उस व्यक्ति को कहते हैं जो शिक्षा / सूचना प्रदान करता है और परिवर्तन लाने के लिए जागरूकता फैलाता है ।
- शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ औपचारिक शिक्षा से नहीं होता है इसमें दो लोगों के बीच होने वाली वार्ता भी शामिल है ।

पियर एजुकेटर :

- पियर उसी समूह का वह व्यक्ति है जो समूह के अन्य सदस्यों के लिए शिक्षक की भूमिका निभाता है और अपने साथियों के साथ काम करके समूह के लोगों के आचरण और व्यवहार में बदलाव लाने का प्रयास करता है।

- इस प्रकार एफ.एस.डबलू/एम.एस.एम/आई.डी.यू पियर एजुकेटर वह व्यक्ति है जो एफ.एस. डबलू/एम.एस.एम/आई.डी.यू समूह का सदस्य होता है और अपने समूह के साथ काम करता है ।
- लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में समूह के सदस्यों में एच.आई.वी/एड्स एवं एस.टी.आई पर सूचना प्रदान करने की , जोखिम को कम करने की , कंडोम के प्रयोग को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी पियर की होती है । साथियों के इस दबाव से व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिलती है ।
- कंडोम , ल्यूब्रीकेन्ट, सुइंयों और सिरिंज के वितरण की ज़िम्मेदारी भी पियर की होती है ।
- पियर परियोजना की सफलता का आंकलन करने के लिए मूलभूत आँकड़े **(basic data)** देते हैं ।
- कोर ग्रुप में एच.आई.वी. के संक्रमण को कम करने के लिए एक पियर को एन.जी.ओ./सी.बी.ओ. गाइडलाइन के अनुसार मानदेय दिया जाता है।
- समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत जोखिमों को समझने की ज़िम्मेदारी एक पियर की होती है और वह अन्य सदस्यों के साथ काम करके स्वस्थ और अच्छे जीवन को सुनिश्चित करने के लिए इन जोखिमों को संबोधित करता है ।

(Adapted from 'Training Module for use with Peer Educators', Care India)

- समझाने के बाद निम्नलिखित शीर्षकों के साथ 2 चार्ट पेपर सामने लगाएं : –
    - पियर शिक्षा के क्या फायदे हैं ?
    - पियर शिक्षा के क्या नुकसान हैं ?
- प्रतिभागियों को पूरी स्वतंत्रता के साथ अपने विचारों को प्रकट करने को कहें तथा उन्हें चार्ट पेपर पर लिखें।
- इस गतिविधि के समापन से पहले प्रतिभागियों के बीच एक मत बनाने में सहायता करे कि पियर शिक्षा या समुदाय आधारित आउटरीच अपनी कमियों के बाद भी सबसे फायदेमंद और स्थायी विकल्प है ।
    - लक्षित हस्तक्षेप में पियरएजुकेटर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
    - समुदाय के सदस्य होने के नाते वह अपने साथियों के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं और इसी लिए समुदाय के विषय में पूरी जानकारी होने के कारण वह कार्यक्रम में अपना पूरा योगदान देते हैं ।
    - पियर परियोजना के कर्मचारी और समुदाय के सदस्यों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं।
    - परियोजना में रहते हुए वह अपने जीवन और नौकरी के कौशल को भी विकसित करते हैं और इस प्रकार उनका आत्म विश्वास और आत्म सम्मान भी बढ़ता है ।
    - इससे वह अपनी पहचान पुनः बना पाते हैं और पियर एजुकेटर का बढ़ा हुए आत्म विश्वास और आत्म सम्मान, समुदाय को सशक्त बनाने में सहायक होता है ।
    - स्वास्थ्य एजुकेटर के रूप में शुरूवात करके पियरएजुकेटर एक लीडर के रूप में समुदाय को गतिशील बनाते हैं जिससे कि सामाजिक बदलाव आता है।

- महत्वपूर्ण बिन्दुओं और अवधारणाओं पर चर्चा करते हुए सत्र का समापन करें ।

2 ब) : पियर की भूमिका व गुण

उद्देश्य : प्रतिभागियों को लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में पियर की भूमिका समझाना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागियों को स्पष्ट करे कि पियर एजुकेटर के रूप में उन्हें क्या करना है । इससे उन्हें अपनी भूमिका निभाने में मदद मिलेगी ।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : रोल प्ले , सूचीकरण

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन ।

प्रकिया

- पिछले सत्र का संदर्भ लेते हुए (जिसमें प्रतिभागियों ने पियर शिक्षा का अर्थ समझा था) , प्रतिभागियों को बताएं कि इस सत्र में आप लोग पियर एजुकेटर की भूमिका पर चर्चा और विचार विमर्श करेंगे ।
- 3 प्रतिभागियों को बुलाएं और उन्हें निम्नलिखित केस स्टडी के बारे में बताकर उनसे इसपर एक रोल प्ले करने को कहें ।

केस स्टडी 1

एक पियर एजुकेटर जो परियोजना के साथ एक साल से है और संबंधित आउटरीच कार्यकर्ता समुदाय के एक ऐसे सदस्य से मिलते हैं जो पियर एजुकेटर की भूमिका के लिए चुना गया है । पुराना पियर एजुकेटर इस नए सदस्य को उसकी भूमिका समझाता है ।

- उन्हे तैयारी करने के लिए 5 मिनट दें ।
- रोल प्ले के समय सह प्रशिक्षक पियर एजुकेटर की उन भूमिकाओं की सूची बनाएं जो रोलप्ले के माध्यम से निकल कर आएं।
- रोल प्ले समाप्त होने के बाद भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों की उस सूची को पढ़ें जो सह प्रशिक्षक ने बनाई है और बाकी प्रतिभागियों से उन भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों को सूची में जोड़ने को कहें जो रोल प्ले में छूट गयीं थी ।
- यदि कोई बिन्दु छूट जाए तो उसे जोड़ने से पहले उसपर चर्चा करें और जब प्रतिभागी स्वीकार कर लें तब ही उन बिन्दुओं को सूची में जोडें ।
- पियर एजुकेटर की भूमिका और ज़िम्मेदारियों की सूची बनाकर बोर्ड पर लिखें । नीचे दी गयी सूची से संदर्भ ले सकते हैं : –

पियर शिक्षक की भूमिका

- आउटरीच करना ।
  - ➢ समुदाय के नए सदस्यों की पहचान करने के साथ अपने नेटवर्क के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखना ।
    - ○ एफ.एस.डबलू/एम.एस.एम परियोजना में एक पियर समुदाय के 60 सदस्यों के साथ निरंतर संपर्क बनाएगा ।
    - ○ आई.डी.यू. परियोजना में एक पियर समुदाय के 40 सदस्यों के साथ निरंतर संपर्क बनाएगा ।
  - ➢ हर माह में उनसे सप्ताह में एक बार या 15 दिन में एक बार संपर्क करना ।
- अपने सभी संपर्कों से 15 दिन में कम से कम एक बार संपर्क करें और यह समझाएं कि उनसे नियमित संपर्क बनाए रखना क्यों महत्वपूर्ण है ।
- ज़रूरत पड़ने पर समुदाय के सदस्यों को एस.टी.आई , एच.आई.वी/एड्स , एन.एस.ई.पी , ओ.एस.टी , कंडोम उपयोग आदि पर संवाद आधारित आई.पी.सी देने में सक्षम होना ।
- ओ.आर.डबलू. के साथ हर सदस्य के जोखिम को समझना और उसके अनुसार योजना बनाना।
- समुदाय को सेवा और सामग्री लेने के लिए प्रेरित करना
  - ➢ समुदाय के सदस्यों को डी.आई.सी आने के लिए प्रेरित करना और समझाना कि उनको डी.आई.सी क्यों आना चाहिए
  - ➢ कंडोम वितरण करना
  - ➢ सुइयों और सिरिंज का वितरण करना (सिर्फ आई.डी.यू. पियर के लिए)
  - ➢ ज़रूरत पड़ने पर समुदाय के सदस्यों को रेफर करना
- ओ.आर.डबलू और समुदाय के साथ उन स्टेकहोल्डर की पहचान करना जिनका समुदाय के सदस्यों के जीवन पर साकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता हो । स्टेकहोल्डर के साथ पैरवी करना।
- प्रशिक्षण प्राप्त करना ।
- डी.आई.सी का रखरखाव ।
- सरकार द्वारा चलाए जा रहे कल्याण कार्यक्रमों के लिए माँग पैदा करना और लाभार्थियों की पहचान में सहायता करना ।
- सेवाओं की बेहतरी और सूचना एकत्रित करने के लिए निरंतर कंडोम डिपो पर जाना।
- उच्च जोखिम व्यवहार की पहचान करने और समझने के लिए प्राथमिकता के आधार पर समूहों के कौशल का विकास करना जैसे कंडोम का प्रयोग, कण्डोम के लिए मोलभाव और यौन जनित रोगों की पहचान इत्यादि।
- समीक्षा बैठकों में भाग लेना।
- दैनिक रिपोर्ट बनाकर ओ.आर.डब्लू को प्रस्तुत करना ।
- क्रियान्वित गतिविधियों की जानकारी देना ।
- सभी प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लेना ।

(From NACP III – Operational Guidelines for Targeted Interventions)

- रोलप्ले का संदर्भ लेते हुए पियर एजुकेटर की विशेषताओं पर चर्चा करें । चार्ट पेपर पर बिन्दु लिखें ।
- यदि ज़रूरत पड़े तो सूची में और बिन्दु जोड़ें। नीचे दी गयी सूची का संदर्भ लें : –

पियर एजुकेटर की विशेषताएं

- ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध होना
- परियोजना के उद्देश्यों और लक्ष्यों के प्रति समर्पित
- समुदाय के मूल्यों के प्रति संवेदनशील
- समुदाय के लिए ज़िम्मेदार
- दूसरों के विचारों और व्यवहार के प्रति आदर और सहनशीलता
- अच्छा श्रोता
- अच्छा वक्ता
- आत्म–विश्वास
- नेतृत्व करने की क्षमता
- फील्ड मे सीखने और प्रयोग करने को तैयार
- संकट के समय पर समुदाय के लोगों के लिए उपलब्ध होना
- नए पियर को तैयार करने और ज़िम्मेदारियों को बांटने की क्षमता
- परियोजना की बेहतरी के लिए ज़िम्मेदारियाँ लेने के लिए सामुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहित करना

(From NACP III – Operational Guidelines for Targeted Interventions)

सत्र का समापन

- लक्षित हस्तक्षेप परियोजना में परिवर्तन लाने के लिए, पियर की भूमिका निर्धारित होती है।
- पियर की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उच्च जोखिम समूह (जिनका वह नेतृत्व करते हैं) का विश्वास प्राप्त करना और उनमें अपनी एक पहचान बनाना है ।
- पियर मे कुछ बुनियादी गुण होने चाहिए जो उनके काम में उनकी सहायता करेंगे । जिन पियर में यह गुण नहीं हैं उन्हें इन गुणों को सीखने का प्रयास करना चाहिए जिससे वह अपना काम और अच्छी तरह कर सकें ।

सत्र 3 : पियर की आवश्यकता और महत्व (फिल्म प्रदर्शन)

सत्र 3 : **पियर की आवश्यकता और महत्व (फिल्म प्रदर्शन)**

उद्देश्य : पियर को विश्वास दिलाकर प्रोत्साहित करना कि वह अपने साथियों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं ।

पियर शिक्षा एवं उनकी भूमिका की जानकारी देना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागीयों को अपने काम के प्रति समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित करना ।

प्रतिभागी उन चुनौतियों को समझ सकें जिनका सामना एक पियरएजुकेटर करता है और उनसे निपटने के तरीके समझ सकें ।

समयावधि : 1 घंटा

विधि : चर्चा , फिल्म की स्क्रीनिंग ।

यह फिल्म एक वैश्यालय के बारे में है और एफ.एस.डब्लू पियर के प्रशिक्षण हेतु उचित है । एम.एस.एम पियर के प्रशिक्षण के लिए भी प्रशिक्षक इस फिल्म का प्रयोग कर सकते हैं लेकिन उनहें ध्यान रखना होगा कि वह चर्चा को एम.एस.एम के मुद्दों पर ही केन्द्रित करें । यदि प्रशिक्षक चाहें तों वह एम.एस.एम के मुद्दों पर आधारित फिल्म की भी सक्रीनिंग कर सकते हैं ।

आई.डी.यू पियर प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक एनिमेशन फिल्म को दिखा सकते हैं जो आई.डी.यू के लोगों के साथ काम करने वाले लोगों के प्रशिक्षण पैकेज का भाग है ।

सामग्री/तैयारी : फिल्म कमला दीदी और एक पियर एजूकेटर को तैयार करना

प्रकिया

- पियर को अपने साथियों के साथ काम करने के लिए प्रेरित करने हेतु फिल्म दिखाएं जिसमें पियर की भूमिका और फील्ड में आने वाली चुनौतियों को दर्शाया गया है ।
- पूरी फिल्म को एक बार में दिखाना चाहिए। यदि प्रशिक्षक चाहे तो चर्चा कराने के लिए फिल्म छोटे छोटे भागों में दोबारा चला सकते है और महत्वपूर्ण जगहों पर फिल्म को रोक कर चर्चा कर सकते हैं ।

- चर्चा निम्नलिखित विषयों पर केन्द्रित हो : –

    - फिल्म में कौन से मुद्दों को दर्शाया गया है ? (समुदाय के सदस्यों का पियर के नियमित क्षेत्रीय भ्रमण के कारण खीजना, सुरक्षित यौन संबंधों पर मुख्य संदेश दौहराने की आवश्यक्ता , अच्छे पियर का चुनाव , पियर के गुण और भूमिका , उन मुद्दों को संबोधित करना जिनका समुदाय के सदस्य सामना करते हैं , सामूहीकरण इत्यादि)
    - क्या यह मुद्दे फील्ड स्तर पर घटित होते हैं ?

- एक पियर के रूप में हम लोग चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं ? क्या कमला ने स्थितियों को ठीक से संभाला ? क्या उस स्थिति को संभालने के लिए कमला कुछ और कर सकती थी ?
- एक अच्छे पियर के कौन से गुणों की झलक कमला में दिखती है ?
- ऐसे कौन से मुद्दे इस फिल्म में नहीं दशाए गए हैं जिनका सामना पियर फील्ड स्तर पर कर सकता है? ऐसे कौन से उपाय हैं जिनके द्वारा उन मुद्दों का सामना किया जा सकता है ?

- इस बात पर ज़ोर देते हुए प्रशिक्षण को समाप्त करें कि फिल्म में दर्शाए गए मुद्दे पर आने वाले 4 दिनों में कई सत्रों में अलग–अलग चर्चा की जा सकती है।

सत्र 4 : समुदाय को समझना
अ) : जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना
ब) : नेटवर्क को समझना

सत्र 4 अ : जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना

उद्देश्य : प्रतिभागियों को यौन कार्य/सुइयों के साझा प्रयोग के जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों व उनके बीच के अन्तर को समझाना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी उन कारकों के बारे में जानेंगे जिनसे आर.टी. आई/एस.टी.आई और एच.आई.वी./एड्स संक्रमण का जोखिम बढ़ता है और इन जोखिमों को कम करने के विभिन्न तरीके भी सीखेंगे

समयावधि : 1 घंटा

विधि : चर्चा , ब्रेनस्टॉमिगं , समूह कार्य ।

सामग्री/तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन।

प्रक्रिया

- प्रशिक्षक को प्रतिभगियों के बीच चर्चा करानी चाहिए कि एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम/आई.डी.यू को एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी/एड्स होने का जोखिम अधिक क्यों होता है ।
- जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों का उदाहरण देते हुए चर्चा की शुरूआत करें।

जोखिम व्यवहार

- यह वह व्यवहार है जो लोगों को एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी/एड्स से संक्रमित होने के खतरे में डालता है । जोखिम के मुख्य कारक निम्नलिखित हैं : –
  - असुरक्षित योनि, गुदा व मुख मैथुन
  - उपयोग की हुई सुइयों व सिरिंजों का साझा प्रयोग

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- जोखिम को बढ़ाने वाले कारक वह होते हैं जो जोखिम को बढ़ाते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से लोगों में एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी/एड्स के संक्रमण का खतरा बढ़ाते हैं। जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों के उदाहरण निम्नलिखित हैं : –
- समूह में यौन क्रिया करना
- गरीबी (कई लोग पैसों के लिए बिना कंडोम के संभोग करते हैं और पैसे बचाने के लिए पुरानी सुइयों का प्रयोग करते हैं)
- महिला होना (हिंसा का शिकार व जबरन बिना कंडोम के संभोग करने की संभावना)

जोखिम एवं जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों में मुख्य अन्तर यह है कि जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों से किसी व्यक्ति को एस.टी.आई/आर.टी.आई या एच.आई.वी/एड्स नहीं होता है लेकिन इनसे जोखिम पूर्ण व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है । एच.आर.जी से संबंधित जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों के कुछ मुख्य उदाहरण : –

एफ.एस.डब्लू के लिए जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- वैश्यालय के मालिकों का दबाव
- नियमित साथी पर निर्भरता
- निम्न आर्थिक स्थिति
- नशीले पदार्थों का सेवन
- ग्राहकों की अधिक संख्या
- हिंसा के शिकार (घरेलू भी) आदि

एम.एस.एम के लिए जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- स्थानीय गुंडों द्वारा उत्पीड़न
- निम्न आर्थिक स्थिति
- नशीले पदार्थों का सेवन
- पार्टनर की अधिक संख्या
- नियमित साथी पर निर्भरता

आई.डी.यू के लिए जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- पुलिस द्वारा उत्पीड़न
- निम्न आर्थिक स्थिति
- सुइंयों का साझा उपयोग करने वाले साथियों की संख्या

- प्रतिभागियों को उपसमूहों में विभाजित करें । हर समूह को एफ.एस.डब्लू एवं एम.एस.एम की एक टॉईपॉलिजी (वर्गीकरण) दें जैसे वैश्यालय आधारित यौन कर्मी , सड़क आधारित यौन कर्मी , लॉज आधारित यौन कर्मी , कोती , पंथी , डबल डेकर आदि । आई.डी.यू का टॉईपॉलिजी (वर्गीकरण) में कोई विभाजन नहीं होगा ।
- हर समूह टॉईपॉलिजी के अनुसार सभी प्रकार के जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारक लिखें । संदर्भ के लिए तीनों समूह के उदाहरण निम्नलिखित हैं

एच.आर.जी एवं उनके उपवर्ग (typology) :

सड़क आधारित यौन कर्मी (एफ.एस.डब्लू)

जोखिम व्यवहार :

- असुरक्षित योनि, गुदा व मुख मैथुन

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- अचानक पुलिस का छापा
- ऑटो चालक व गुंडों द्वारा हिंसा/उत्पीड़न की संभावना
- अनचाहे कई साथियों की संभावना अर्थात एफ.एस.डब्लू को हो सकता है एक ही आदमी ले जाए लेकिन होटल पहुँचने पर उसे अनेक लोगों के साथ संभोग करना पड़े
- कंडोम साथ रखने में कठिनाईयाँ

कोती (एम.एस.एम)

जोखिम व्यवहार :

- असुरक्षित गुदा व मुख मैथुन

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- पहचान खुलने के डर के कारण जल्दीबाजी में यौन संबंध होने से जोखिम का बढ़ना
- शौचालयों / बस स्टैन्ड पर कंडोम की अनउपलब्धता जहाँ जल्दबाजी में संबंध स्थापित किए जाते हैं।

आई.डी.यू.

जोखिम व्यवहार :

- सुई/सिरिंजों का साझा उपयोग
- असुरक्षित योनि, गुदा व मुख मैथुन

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

- हर बार नशा लेने के लिए नई सुई/सिंरिंज न खरीद पाना
- नशे की हालत में जोखिम भरा यौन व्यवहार करने की संभावना
- समाज और परिवार के सदस्यों द्वारा लांछन

- प्रतिभागियों को उन कारकों पर ब्रेनस्टार्म करने के लिए प्रोत्साहित करें , जिनसे एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम /आई.डी.यू को एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी/एड्स होने का जोखिम अधिक होता है। अप्रत्यक्ष रूप से जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों की सूची बनाए । (यह सुनिश्चित करें कि हर समूह में कम से कम एक ऐसा व्यक्ति हो जो लिख सकता है)
- हर उप–समूह से एक प्रतिभागी को अपने समूह की जानकारी अन्य प्रतिभागियों के साथ बांटने को कहें। बाकी प्रतिभागियों को यदि कोई विन्दु छूट गया हो तो जोड़ने को कहें ।

- जोखिम/जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों की सूची बनाने के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि उन्हें क्या लगता है कि किन रणनीतियों से इन जोखिम/जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों से निपटा जा सकता है। इन जोखिमों को कम करने में एक पियर की क्या भूमिका हो सकती है । पियर की भूमिका को हर जोखिम व उसे बढ़ाने वाले कारक के सामने एक चार्ट पेपर पर लिखें।

सड़क आधारित यौन कर्मी (एफ.एस.डब्लू.)	
जोखिम व्यवहार	**पियर की भूमिका – जोखिम कम करने की रणनीति**
• असुरक्षित योनि , गुदा व मुख मैथुन	• योनि , गुदा व मुख मैथुन में कंडोम के सही एवं लगातार प्रयोग को प्रोत्साहित करना • पर्याप्त संख्या में कंडोम प्रदान करना • कंडोम प्रदर्शन करना व दोबारा करवाना
जोखिम को बढाने वाले कारक	
• पुलिस का अचानक छापा • ऑटो चालक व गुंडों द्वाराहिंसा/उत्पीड़न की संभावना • कंडोम साथ रखने में कठिनाईयाँ	• ओ.आर.डब्लू के साथ मिलकर स्थानीय पुलिस के साथ पैरवी करना • यदि संभव हो तो पुलिस छापे के बाद गिरफ्तार हुई एफ.एस.डब्लू का सहयोग करना • सड़क पर ग्राहक तय करते समय एक दूसरे का ध्यान रखना
कोती (एम.एस.एम)	**पियर की भूमिका – जोखिम कम करने की रणनीति**
• असुरक्षित गुदा व मुख मैथुन	• हर प्रकार की यौन क्रिया में कंडोम के सही एवं लगातार प्रयोग का प्रोत्साहन देना • पर्याप्त संख्या में कंडोम व ल्यूब उपलब्ध कराना • कंडोम प्रदर्शन करना व दोबारा करवाना
जोखिम को बढाने वाले कारक	
• पहचान खुलने के डर के कारण जल्दीबाजी में यौन संबंध होने से जोखिम का बढ़ना • शौचालयों / बस स्टैन्ड पर कंडोम की अनउपलब्धता जहाँ जल्दबाजी में संबंध	• समूह के साथ काम करके उनका आत्म सम्मान बढ़ाना और यौनिकता को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना । • अहम जगहों पर कंडोम डिपों तैयार कराना जैसे शौचालय , बस स्टाप आदि । • कोतियों को एक दूसरे का ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित करना। यदि जरूरत हो तो छोटे सहायता समूह तैयार करें।

स्थापित किए जाते हैं।	
आई.डी.यू	**पियर की भूमिका – जोखिम कम करने की रणनीति**
• सुई/सिरिंजों का साझा उपयोग • असुरक्षित योनि, गुदा व मुख मैथुन	• पर्याप्त मात्रा में सुई/सिंरिंज उपलब्ध कराना • हर प्रकार की यौन क्रिया में कंडोम के सही एवं लगातार प्रयोग का प्रोत्साहन देना • कंडोम प्रदर्शन करना व दोबारा करवाना
जोखिम को बढाने वाले कारक	
• हर बार नशा लेने के लिए नई सुई/सिंरिंज न खरीद पाना • नशे की हालत में जोखिम भरा यौन व्यवहार करने की संभावना • समाज और परिवार के सदस्यों द्वारा लांछन	• एन.एस.ई.पी. की जानकारी देना व प्रोत्साहित करना ताकि हर बार नशा लेते समय नई नीडिल/सिंरिंज का प्रयोग हो सके। • हर प्रकार की यौन क्रिया में कंडोम के सही एवं लगातार प्रयोग का प्रोत्साहन देना। • ओ.आर.डब्लू के साथ मिलकर स्थानीय पुलिस और सामान्य जनता के साथ पैरवी करना। • आई.डी.यू और उसके परिवार को काउन्सलर द्वारा एक साथ परिवारिक परामर्श दिलवाना

- एक बार जब समूह कार्य सम्पन्न हो जाए तो एक एक समूह से प्रस्तुतिकरण करवाएं। बाकी प्रतिभागियों से यदि कोई बिन्दु छूट गया हो तो जोड़ने को कहें । यदि उनकी कोई शंका हो तो उसे संबोधित करें।
- सत्र का समापन निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा करें : –
  - जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझे व संबोधित किए बिना, व्यवहार परिवर्तन संभव नहीं है ।
  - जब जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को संबोधित किया जाएगा तभी वह ज्ञान और सूचना का बेहतर उपयोग कर पाएंगे।
  - इस लिए एक पियर के रूप में जोखिम, जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना, उन्हें स्वीकारना व संबोधित करना बहुत ज़रूरी है।

4 ब नेटवर्क को समझना

उद्देश्य : पियर एजुकेटर को नेटवर्कों के प्रकार समझाना जिससे वह एच.आर.जी तक पहुंच सकें।
पियर एजुकेटर को अपने संपर्कों का मान चित्रण करने में सहायता प्रदान करना ।

अपेक्षित परिणाम : पियर एजुकेटर के बीच नेटवर्क के प्रकार की समझ बनेंगी।
पियर एजुकेटर संपर्कों का मान चित्रण कर आउटरीच की योजना बना सकेंगे ।

समयावधि : 1 घंटा

विधि : चर्चा , प्रस्तुतिकरण , टूल्स का अभ्यास ।

सामग्री/तैयारी : चार्ट पेपर, मार्कर पेन ।

प्रक्रिया

प्रतिभागियों को सूचित करे कि अब आप लोग विभिन्न प्रकार के नेटवर्कों पर चर्चा करेंगे जो पियर के चुनाव और ऑउटरीच की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण है ।

हर प्रतिभागी को संपर्क मानचित्रण अभ्यास पूरा करने के निर्देश दें ।

संपर्क मानचित्रण

उद्देश्य : एम.एस.एम/ यौन कार्यकर्ताओं के साथ हर स्पाट पर संपर्कों का मानचित्रण करना और इन संपर्कों के आधार पर ऑउटरीच की योजना बनाना ।

आवृत्ति : हर 6 माह में एक बार जिससे हर स्पाट में एम.एस.एम/ एफ.एस.डबलू. के साथ पहुँच सुनिश्चित की जा सके ।

दिशा निर्देश

- शहर का नक्शा बनाएं और वह जगह जहाँ यौन कार्यकर्ता काम करते हैं उनपर निशान लगाएं । हर स्पाट पर एफ.एस.डबलू. /एम.एस.एम की संख्या लिखें ।
- नक्शे में हर ओ.आर.डब्लू और पियर की पहचान के लिए अलग अलग रंग का इस्तेमाल करें ।
- अलग अलग रंगों का प्रयोग करके लिखें कि ओ.आर.डब्लू एवं पियर हर स्पाट में कितने यौन कार्यकर्ताओं को जानते हैं । उदाहरण के लिए पियर लक्ष्मी के लिए लाल रंग का प्रयोग करें और उसका प्रत्येक हॉटस्पॉट में जितने भी यौन कर्मियों से संपर्क हो उन्हें लाल रंग से दर्शाएं ।
- फिर हर हाट स्पाट में पियर और ओ.आर.डब्लू के अनुसार संपर्कों के नाम लिखें ।
- यदि किसी पियर को लिखना न आता हो तो ओ.आर.डब्लू उसे संपर्कों की सूची बनाने में मदद करे ।

जिला :	लक्षित हस्तक्षेप क्षेत्र :			शहर का नाम :	
दिनांक :					
एफ.एस.डब्लू की कुल संख्या का अनुमान		शहर में कितने एफ.एस.डब्लू से संपर्क हुआ है			
क्रमांक	**स्पाट का नाम**	**पी.ई 1 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 2 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 3 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 4 संपर्कों की संख्या**
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
कुल					

जिला :	लक्षित हस्तक्षेप क्षेत्र :			शहर का नाम :	
दिनांक :					
एफ.एस.डब्लू की कुल संख्या का अनुमान		शहर में कितने एफ.एस.डब्लू से संपर्क हुआ है			
क्रमांक	**स्पाट का नाम**	**पी.ई 1 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 2 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 3 संपर्कों की संख्या**	**पी.ई 4 संपर्कों की संख्या**
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
9					
10					
11					
12					
13					
14					
कितने संपर्कों को अच्छी तरह जानते हैं					
संख्या					

- जो संपर्क एक से अधिक सूचियों में हो उन्हें अलग रंग से भरें ।
- निम्नलिखित पर चर्चा करें : –
    - किस स्पाट में संपर्क सीमित हैं ?
    - ऑटरीच कहाँ नहीं हो रही है ? उसे कैसे बढ़ाया जाए ?
    - हर स्पाट में सपर्क कौन हैं ? परियोजना किस तक नहीं पहुँच पा रही है ?
- याद रखें : सबके संपर्क एक जैसे नहीं हो सकते हैं – समुदाय के एक ही सदस्य की दो बार गिनती हो सकती है ।

भौगोलिक नेटवर्किंग वह नेटवर्किंग है जिसके अन्तर्गत एक निर्धारित भूगौलिक क्षेत्र में एच.आर.जी से संपर्क किया जा सकता है । इस अवधारणा को ध्यान में रखते हुए एक पियर को एक क्षेत्र में काम कर रहे एच.आर.जी से संपर्क करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है चाहे वह उनको जानता हों या नहीं । इसका अर्थ यह है कि एक पियर को इन एच.आर.जी से उस क्षेत्र में जाकर मिलकर उनके साथ संपर्क बनाना पड़ता है चाहे वह एच.आर.जी किसी भी आयु के क्यों न हो या किसी भी समय क्यों न काम करते हों आदि । इसके लिए उसे उच्च जोखिम समूह के यौनकार्य के समय के बाद कार्य करना पड़ सकता है ताकि वह उन पुरूषों/महिलाओं से मिल सकें।

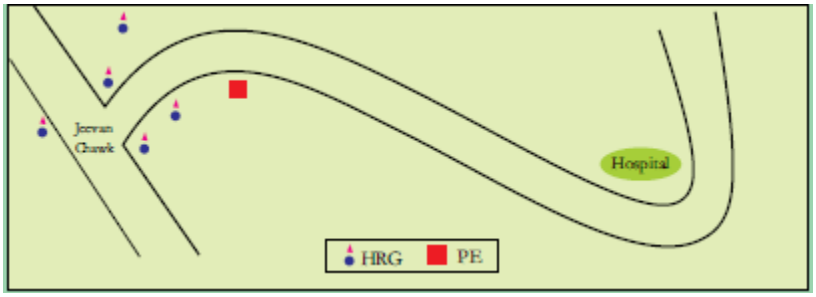

सामाजिक नेटवर्किंग का अर्थ एच.आर.जी से समुदाय में सपर्क करना है । इस अवधारणा को ध्यान में रखते हुए एक पियर को एक समुदाय में अपने जानकारों से संपर्क करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है । इसका अर्थ यह है कि उन्हें अपने काम के लिए विभिन्न स्पाट में काम करने के अलावा परियोजना का भी काम करना पड़ सकता है । परियोजना के अन्तर्गत एक स्पाट के लिए एक से अधिक पियर की नियुक्ति की जा सकती है ।

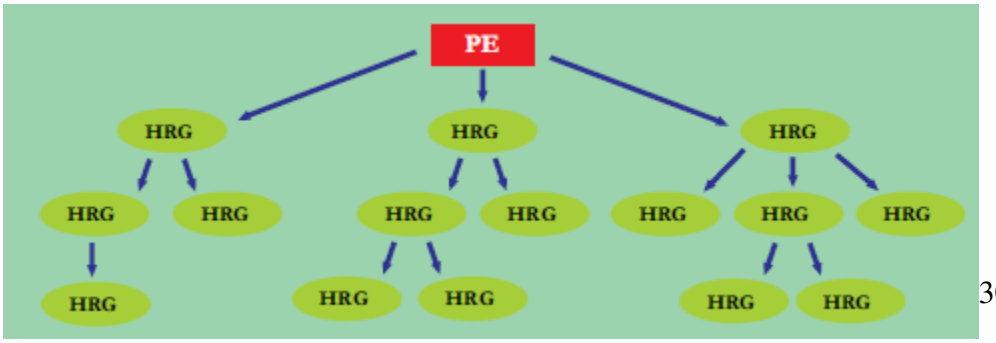

- प्रतिभागियों को दोनो नेटवर्कों के फायदे और नुकसान के बारे में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- चर्चा को निम्नलिखित रूप से समेंकित करें : –
    - ऑटरीच की योजना बनाने और पियर के चुनाव के लिए दोनो ही नेटवर्क महत्वपूर्ण हैं ।
    - पियर का चुनाव स्थिति पर निर्भर करता है , दोनो नीतियों के प्रयोग की आवश्यक्ता भी पड़ सकती है । परियोजना के शुरू में ज़्यादा समय लेने के बाद भी सामाजिक नेटवर्किंग अधिक प्रभावी हो सकती है ।
    - एक बार पियर /स्वेच्छाकर्मी के सभी सामाजिक संपर्कों से परियोजना का परिचय हो जाए और हर पियर का अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ व्यवहार बन जाए तब परियोजना को भौगोलिक नेटवर्क की ओर बढ़ना चाहिए ।
    - परियोजना की आवश्यकता और उस समय की पहुँच के अनुसार यह निर्धारित करना चाहिए कि परियोजना कौन से नेटवर्क को प्राथमिकता दे ।

दिवस 1 का मूल्याँकन

तिथि : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1अ	**परिचय**				
1ब	**अपेक्षाएं कार्यप्रणाली के विषय में सूचित करना**				
1स	**नियम बनाना**				
2अ	**पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा**				
2ब	**पियर की भूमिका व गुण**				
3	**पियर की आवश्यकता और महत्व –फिल्म स्क्रीनिंग**				
4अ	**जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को समझना**				
4ब	**नेटवर्क को समझना**				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि, सामग्री, विधि और फिल्म पर भी टिप्पणियाँ करें

दिवस 2

दिवस 2

पहले दिन का पुनरावलोकन (15 मिनट) 10.00 – 10.15

सत्र 1 : आउटरीच और आउटरीच योजना (2 घंटे)

- आउटरीच एवं आउटरीच की योजना का परिचय 10.15 – 11.15
- व्यापक चित्रण (broad mapping)

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.15 – 11.30

सत्र 1 कमशः

- स्पॉट विश्लेषण – समझाना एवं अभ्यास 11.30 – 12.30
- हॉट–स्पॉट लोड मानचित्रण – समझाना एवं अभ्यास

सत्र 2 : यौन संचरित संक्रमण (1 घंटा, 30 मिनट)

2 अ– यौन संचरित संक्रमण को समझना (1 घंटा) 12.30 – 01.30

- अवधारणाओं पर प्रस्तुतिकरण
- चर्चा

भोजनावकाश (45 मिनट) 01.30 – 02.15

सत्र 2 कमशः

2 ब– एस.टी.आई. की रोकथाम एवं नियंत्रण में पियर की भूमिका 02.15 – 02.45

- चर्चा – यौन संचरित संक्रमण (एस.टी.आई.) का इलाज न करने के कारण
- समूह कार्य – पियर की भूमिका
- समूह कार्य का प्रस्तुतिकरण

सत्र 3 : सकारात्मक रोकथाम एवं आई.सी.टी.सी. (1 घंटा) और ए.आर.टी पर रेफरल 02.45 – 03.45

- धारणा का परिचय
- ब्रेनस्टॉर्मिंग– एच.आई.वी. की रोकथाम एवं उससे संबंधित मुद्दों की आवश्यकता
- ब्रेनस्टॉर्मिंग– पी.एल.एच.आई.वी. हेतु सेवाएँ
- चर्चा– आई.सी.टी.सी. और ए.आर.टी को रेफरल

दिवस मूल्यांकन (15 मिनट) 03.45 – 04.00

सत्र 1 : ऑउटरीच और ऑउटरीच योजना
स्पाट विश्लेषण , हॉट स्पाट , लोड मानचित्रण

सत्र 1 : ऑउटरीच और ऑउटरीच योजना

उद्देश्य : प्रतिभागियों को फील्ड की स्थिति का महत्व समझकर उसके अनुसार काम करने में मद्द करना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी फील्ड की विभिन्न परिस्थितियों को समझकर उनके अनुसार काम करने की योजना बना सकेंगे ।

समयावधि : 2 घंटा

विधि : चर्चा, मैपिंग, प्रस्तुतिकरण, स्मझाना ।

सामग्री/तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन, अलग– अलग रंगों और आकार की बिन्दी।

इस गतिविधि के लिए ओ.आर.डब्लू की उपस्थिति आवश्यक है । प्रशिक्षक को यह बात सुनिश्चित करनी चाहिए कि इस गतिविधि के दौरान 6 से 8 पियर के लिए एक ओ. आर.डब्लू ज़रूर हो ।

प्रक्रिया

- ऑउटरीच की सफलता के लिए शुरूआत में प्रतिभागियों को बताएं कि फील्ड की स्थिति के महत्व को समझकर और उसका अध्ययन कर उसके अनुसार काम करना बहुत ज़रूरी है ।
- ऑउटरीच और ऑउटरीच योजना के महत्व पर चर्चा करें ।

ऑउटरीच

उच्च जोखिम समूहों को एस.टी.आई एवं एच.आई.वी /एड्स से बचाव के लिए सेवा प्रदान करने का यह एक व्यवस्थित तरीका है । ऑउटरीच का मुख्य उद्देश्य है एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी /एड्स और अन्य रक्त द्वारा होने वाले संक्रमण को एच.आर.जी समूहों (विशेषकर आई.डी.यू) में फैलने से रोकना।

ऑउटरीच में निम्नलिखित शामिल है : –

- एच.आर.जी समुदाय के सदस्यों से सम्पर्क करना ।
- उनके साथ व्यवहार/संबंध बनाना ।
- उनको सूचना, सेवा और सामग्री प्रदान करना जिससे एस.टी.आई/आर.टी.आई एवं एच.आई.वी /एड्स की रोकथाम की जा सके ।
- उनको स्वास्थ्य और अन्य सेवाओं के साथ जोड़ना ।

ऑउटरीच योजना

यह वह प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न टूल प्रयोग किए जाते हैं जिससे कि इन समूहों में जोखिम व जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों के लिए व्यक्तिगत स्तर पर योजना बनाकर सेवाओं के उपयोग का फॉलोअप किया जा सके।

ऑउटरीच योजना के महत्व निम्नलिखित हैं : –

1. **पीयर के कार्यक्षेत्र का निर्धारणः** जब एक पियर की साइट और ज़िम्मेदारी निर्धारित होती है तब कार्य सुचारू रूप से चलता है और कार्य का दोहराव (duplication) नहीं होता ।
2. **क्षेत्र का लगातार भ्रमणः** अपनी निर्धारित साइट में क्लीनिक पर मासिक जांच के लिए आने वाले एच.आर.जी. का पियर ध्यान रखती है ।
3. **व्यक्तिगत ट्रेकिंगः** पियर इस बात को ट्रैक कर सकते हैं कि उस माह में विभिन्न सेवाओं के लिए कितने एच.आर.जी से संपर्क किया गया है । (क्लिनिक/शिविर में आने वालों की संख्या , वन टू वन सत्र , संपर्क की संख्या , वन टू ग्रूप सत्र और कंडोम वितरण)
4. **आंकड़े एकत्रित करना, उनका विश्लेषण व उपयोग करनाः** दैनिक गतिविधि रिपोर्ट का उपयोग कर पियर डेटा उत्पन्न करता है और इसका इस्तेमाल कर अपनी साइट पर सभी एच.आर.जी को ज़रूरी सेवाएं प्रदान करता है।
5. **पियर साइट का प्रबंधक बन जाता हैः** पियर अपनी साइट में आयोजित होने वाली गतिविधियों की योजना बनाता है, बजट के विषय में बताता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी एच.आर.जी को सेवा प्राप्त हो ।

- प्रतिभागियों को 3 या 4 के समूहों में विभाजित करें । आप सभी गतिविधियों के लिए इन्हीं उपसमूहों का उपयोग कर सकते हैं या हर गतिविधि के लिए नए उप समूह भी बना सकते हैं ।
- प्रतिभागियों से कहें कि वह उस क्षेत्र का एक नक्शा तैयार करें जहां वह कार्य करते हैं। प्रत्येक समूह के लिए चार्ट पेपर , रंगीन मार्कर पेन और विभिन्न प्रकार की बिन्दियाँ उपलब्ध कराएँ ।
- प्रतिभागियों से चार्ट पेपर पर जिस क्षेत्र में वह काम करते है वहाँ का एक नक्शा बनाकर उसमें महत्वपूर्ण स्थान जैसे वहाँ की सड़कों , स्कूल, अस्पताल, पेड़, कुछ दुकानें, बियर बारों आदि को शामिल करने के लिए कहें ।
- नक्शा बनवाने के बाद उनसे कहें कि वह अपने नक्शों पर प्रत्येक स्थान पर निशान लगाएं जहां एच. आर.जी स्थित हैं (एफ.एस.डब्लू , एम.एस.एम , आईयूडी) और एच.आर.जी. की संख्या भी लिखें . उदाहरण के लिए अगर क्षेत्र में एक वेश्यालय है तो वह घरों को बनाएं और प्रत्येक वेश्यालय में महिलाओं की संख्या डालें । अगर यह एम.एस.एम साइट है जैसे सार्वजनिक मूत्रालय, तो वहाँ कितने एमएसएम होते हैं लिखवाएं ।
- प्रतिभागियों से कहें कि साइट पर एच.आर.जी के मिलने का समय भी लिखें।
- यह क्षेत्र का एक व्यापक मानचित्रण है जिसमें प्रत्येक पी.ई काम करता है । प्रतिभागियों को बताएं कि यह सिर्फ एक टूल है जिसका वह अपने काम के लिए उपयोग कर सकते हैं ।
- इसके बाद एक एक करके विभिन्न टूल पर चर्चा करें जिसका वह अपने काम के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसके उपयोग से वह अपनी साइट को समझ सकते हैं और उसके अनुसार अपनी कार्य योजना बना सकते हैं ।
- पहले स्पॉट विश्लेषण समझाएं, साथ ही इस टूल का उद्देश्य एवं उसे प्रयोग करने की प्रक्रिया समझाएं।

स्पॉट विश्लेषण

उद्देश्य

उच्च जोखिम स्थानों/साइट से संबंधित परियोजना के अनेक क्षेत्रों के मूल्यांकन के दौरान एकत्र की गयी जानकारी का संकलन करना और योजना बनाने मे सहायता करना।

आवृत्तिः हर 6 महीने में क्योंकि क्षेत्र की वास्तविकता बदल सकती है

दिशा– निर्देश

एक स्पॉट की योजना बनाने के लिए उस स्पॉट से संबंधित निम्नलिखित सूचना होना आवश्यक है:–

- **ग्राहक का भारः** उच्च भार (10 या 10 से अधिक ग्राहक प्रति सप्ताह) , मध्यम भार (5 से 9 ग्राहक प्रति सप्ताह) , निम्न भार (4 ग्राहक से कम प्रति सप्ताह)
- **यौन कार्यकर्ता के उपवर्ग** (एफ.एस.डब्लू.): घर आधारित, गली आधारित , वैश्यालय आधारित , लॉज आधारित , ढाबा आधारित
- **एम.एस.एम. के उपवर्गः** कोती, पन्थी, डबल डेकर, ट्रान्सजेण्डर
- **एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम. की आयु** : 20 साल से नीचे , 20 से 30 साल , 30 से 40 साल , 40 साल से ऊपर
- **मिलने का समय** : सुबह (प्रातः 6 से 10 बजे) , दोपहर (10 से 2 बजे) , शाम (2से 8 बजे) और रात (8 से प्रातः 6 बजे)
- **मिलने की आवृत्ति** : दैनिक, साप्ताहिक, मासिक

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें :–

ग्राहक का भारः : ध्यान रखें कि जिन एफ.एस.डब्लू और एम.एस.एम की ग्राहक संख्या ज़्यादा हो उनसे प्राथमिकता के आधार पर संपर्क करें ।

उपवर्ग : योजना बनाते समय यौन कार्यकर्ता के उपवर्ग और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। सडक आधारित यौन कार्यकर्ताओं से उस जगह संपर्क किया जा सकता है जहाँ वह अपनी क्लाइन्ट को चुनती हैं तथा जहां पर वह यौन कार्य करती हैं । ऑउटरीच वर्कर उनसे सीधे या नेटवर्क कार्यकर्ताओं के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं । लॉज आधारित यौन कार्यकर्ताओं से संपर्क करने के लिए ऑउटरीच वर्कर को लॉज मालिक और उनके साथ कार्य कर रहे लड़कों के साथ संपर्क बनाए रखना पड़ेगा । लॉज आधारित यौन कार्यकर्ताओं से लॉज में भी संपर्क किया जा सकता है।

आयु : एफ.एस.डब्लू और एम.एस.एम की आयु के अनुसार आवश्यकताएं बदलती हैं इसलिए योजना बनाते समय आयु का ध्यान रखना चाहिए।

मिलने का दिन/समय : एच.आर.जी. के मिलने का समय और दिन आउटरीच की योजना बनाने में मदद करता है । उदाहरण के लिए, एक महीने में कुछ दिन ऐसे होंगे जब अधिक एफ.एस. डब्लू/एम.एस.एम. एक विशेष स्थान पर आते हैं जैसे बाजार । आउटरीच को महीने के उन दिनों में मजबूत करने की आवश्यकता है । इसी तरह, शाम और रात कुछ स्थानों में बहुत व्यस्त हो सकती है । इसलिए, परियोजना को सुनिश्चित करना चाहिए कि उस समय पर आउटरीच के लिए योजना बनाई जाए।

टेबल 1 : SPOT आकलन

जिला : तालुका : स्थान : आकलन की दिनांक :

| | प्रकार | | |

समझाने के बाद , समूह को टूल का अभ्यास करने के लिऐ प्रोत्साहित करें । प्रतिभागी फ्लिप चार्ट , मार्कर पेन और बिंदी का उपयोग कर सकते हैं ।

- टूल पूरा करने के बाद एक समूह को प्रोत्साहित करें कि वह बड़े समूह में प्रस्तुतिकरण करें ।
- निम्न चर्चा को प्रोत्साहित करें :
    - समूह द्वारा इस्तेमाल की गयी प्रक्रिया
    - अभ्यास का परिणाम
    - आउटरीच योजना बनाने में इस अभ्यास से कैसे मदद मिलती है
    - इस टूल को पूरा करने में क्या गलतियां हुई
    - इन गलतियों के क्या परिणाम है
    - फिर अगले टूल पर चर्चा करें

हॉटस्पॉट लोड मैपिंग

उद्देश्य

विभिन्न हॉटस्पॉट में एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम. की अनुमानित संख्या, प्रत्येक दिन, सप्ताह व माह में एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम. से मिलने की संख्या व नियमित संपर्क की संख्या के अन्तराल को समझाना।

इसके अलावा संभावित नियमित संपर्क के बारे में जानकारी ले : एफ.एस.डब्लू / एम.एस. एम की संभावित संख्या जिनसे टी.आई. टीम एक महीने में संपर्क कर सकती है ।

निर्देश :

- टी.आई. क्षेत्र की साइट/हॉटस्पॉट (वह क्षेत्र जहां से एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम अपने ग्राहको को चुनते हैं/पटाते हैं) को दर्शाते हुए एक मैप बनाएं।
- एफ.एस.डब्लू उपवर्ग के आधार पर विभिन्न हॉटस्पॉट को अलग अलग रंग से दर्शाएं जैसे घर आधारित, वेश्यालय आधारित, सड़क आधारित आदि ।
- प्रत्येक हॉटस्पॉट पर प्रतिदिन आने वाले एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम. की संख्या लिखें।
- इसके बाद प्रत्येक हॉटस्पॉट पर सप्ताह में आने वाले एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम. की संख्या लिखें।
- सप्ताह में किसी विशेष दिन को ध्यान में रखें जब एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम की संख्या अधिकतम होती है और कारणं बताएं जैसे बाजार के दिन पर एफ.एस.डब्लू / एम.एस. एम की संख्या अधिक है।
- इसके बाद माह में किसी विशेष दिन को ध्यान में रखें जब एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम की संख्या अधिकतम होती है और कारणं बताएं जैसे तन्खा वाले दिन।

- सभी हॉटस्पॉट पर दैनिक, साप्ताकिह व मासिक मिलने वाले लोगों की संख्या जोड़ें और टी.आई. क्षेत्र में एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम. की संख्या को दर्शाएं।
- इन साइट पर दर्शाई गई एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम की संख्या से अनुमानित, संपर्क एवं नियमित संपर्क की संख्या की तुलना करें और निम्नलिखित का विश्लेषण करें :
    - क्या टी.आई. क्षेत्र/हॉटस्पॉट पर मौजूद कुल एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम की संख्या, संपर्क (contact) और नियमित संपर्क (regular contact) की संख्या से कम या ज़्यादा है? क्यों?
    - क्या संपर्क न किए गए एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम और उनके उपवर्ग के बीच कोई संबंध है? कौन सा उपवर्ग आउटरीच के समय छूट जाता है ?
    - क्या कोई एक विशिष्ठ उपवर्ग, सप्ताह या महीने में अधिक संख्या में मिलते हैं जैसे क्या गली आधारित यौन कर्मी ज़्यादा संख्या में दिखते हैं? क्यों?

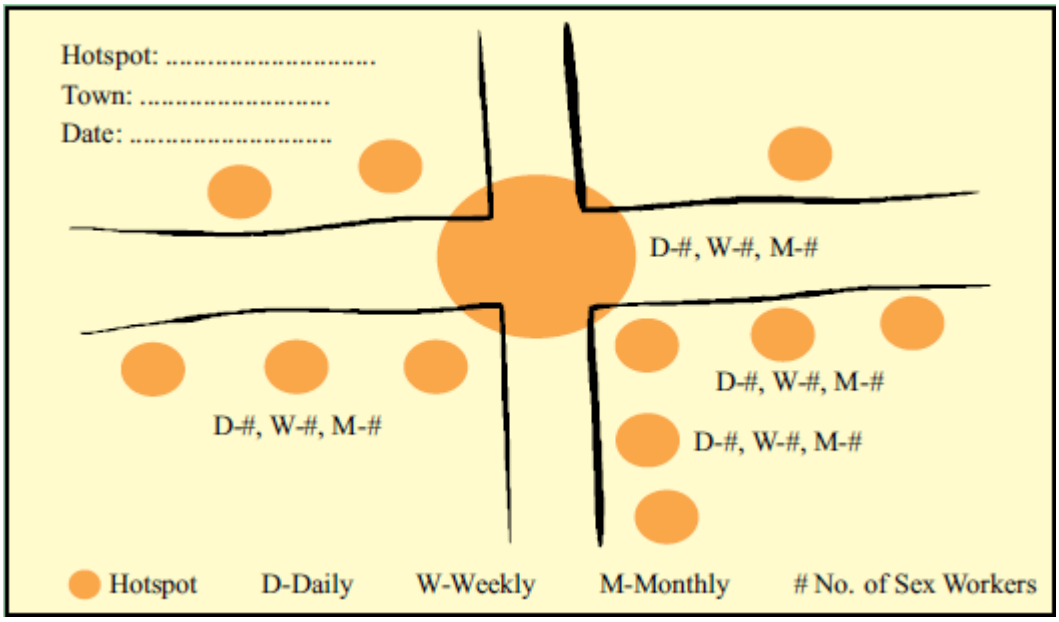

    - क्या यौन कर्मी क्षेत्र के बाहर से हैं?
    - क्या कोई ऐसी विशिष्ट साइट हैं जहाँ संपर्क और नियमित संपर्क, महीने में मिलने वाले एच. आर.जी. की संख्या से कम है ? क्यों ?
    - लक्षित हस्तक्षेप क्षेत्र में कौन से ऐसे हॉटस्पॉट हैं जहां आउटरीच के समय अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है? इन हॉटस्पॉट पर आउटरीच के लिए कौन से पियर /आउटरीच वर्कर ज़िम्मेदार हैं? अधिक संख्या में संपर्क सुनिश्चित करने के लिए आउटरीच को कैसे बेहतर बनाया जाए?

- समझाने के बाद , समूह को टूल का अभ्यास करने के लिऐ प्रोत्साहित करें । प्रतिभागी फ्लिप चार्ट , मार्कर पेन और बिंदी का उपयोग कर सकते हैं ।
- टूल पूरा करने के बाद एक समूह को प्रोत्साहित करें कि वह बड़े समूह में प्रस्तुतिकरण करें ।
- निम्न चर्चा को प्रोत्साहित करें :
    - समूह द्वारा इस्तेमाल की गयी प्रक्रिया
    - अभ्यास का परिणाम
    - आउटरीच योजना बनाने में इस अभ्यास से कैसे मदद मिलती है
    - इस टूल को पूरा करने में क्या गलतियां हुई
    - इन गलतियों के क्या परिणाम है

सत्र 2 : यौन संचरित संक्रमण
2 अ) : यौन संचरित संक्रमण को समझना
2 ब) : एस.टी.आई. की रोकथाम एवं नियंत्रण में पियर की भूमिका

2 अ : यौन संचरित संक्रमण को समझना

उद्देश्य : प्रतिभागियों को एस.टी.आई. की मूलभूत जानकारी देना।
एसटीआई से संबंधित भ्रान्तियों एवं शंकाओं को दूर करना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी निम्न पर जानकारी ले पाएंगेः

- एसटीआई के प्रकार
- एसटीआई के चिन्ह (sign) एवं लक्षण
- एसटीआई का प्रसार एवं उपचार
- एस.टी.आई. व एच.आई.वी. के बीच संबंध

अवधी : 1 घंटे

विधि : चर्चा, प्रस्तुतिकरण, समझाना

सामग्री / तैयारी : पिक्चर कार्ड – एस.टी.आई. , चार्ट पेपर और मार्कर पेन

जैसा कि यह एक तकनीकी सत्र है, यदि आवश्यक हो तो प्रशिक्षक एक डाक्टर को रिसोर्स व्यक्ति के रूप में बुला सकता है।

प्रक्रिया :

नोट : जितना संभव हो प्रशिक्षण के दौरान स्थानीय भाषा का प्रयोग करें जिससे प्रतिभागी विषय–वस्तु को अच्छे से समझ सकें।

- सत्र की शुरुआत में प्रतिभागियों से पूछें अगर किसी के मन में एस.टी.आई. से संबंधित कोई प्रश्न हो तो पूछें या कोई अनुभव जो वह बताना चाहें ।
- प्रश्न को एकत्रित करने और स्थितियों को सुनने के बाद, प्रतिभागियों को एस.टी.आई. से संबंधित महत्वपूर्ण बातें बताएं जो इस सत्र में शामिल हैं । प्रत्येक विषय पर विस्तार से चर्चा करें ।
- प्रतिभागियों से पूछें , यदि किसी को कोई भी शंका है । सभी शंकाओं को दूर करने का प्रयास करें।

एस.टी.आई. का प्रसार एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम/आई.डी.यू के बीच अधिक है और यह उनके व्यावसायिक खतरों में से एक है । इनके बीच एस.टी.आई. की अधिक दर का कारण एसटीआई के बारे में जानकारी और ज्ञान की कमी है । इन समुदायों में इस समस्या के अलावा, एस.टी.आई. के बारे में बहुत सी भ्रन्तियां और शंकाएं हैं । इसके अलावा अधिकतर एफ.एस.डब्लू अशिक्षित है जिसके कारण वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी समझने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए एस.टी.आई. के बारे में पता करने की रुचि नहीं रखती हैं ।

अतः उपरोक्त मुद्दों को देखते हुए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम/आई.डी.यू समुदायों में एसटीआई के बारे में और उसके लक्षणों पर उचित जानकारी का प्रसार किया जाए ।

एस.टी.आई. का अर्थ :

एस.टी.आई. का मतलब यौन संचरित संक्रमणं है । यह वायरस, बैक्टीरिया या फफूंद सूक्ष्मजीव (fungal microorganisms) की वजह से होता है , जो एक संक्रमित साथी के साथ असुरक्षित यौन संबंध के माध्यम से संचरित होते हैं ।

एस.टी.आई. के लक्षण (पिक्चर कार्ड का प्रयोग करें)

पुरूषों में एस.टी.आई.

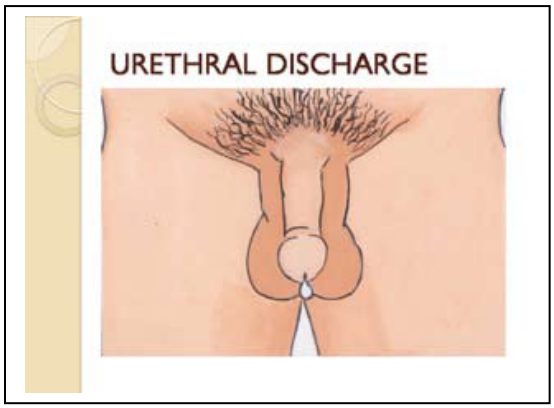

मूत्र मार्ग से स्राव

- पेशाब करते समय जलन व दर्द
- बार बार पेशाब आना
- मूत्र मार्ग से पीले या सफेद रंग का स्राव आना
- स्राव म्यूकस के समान पतला या मोटा हो सकता है

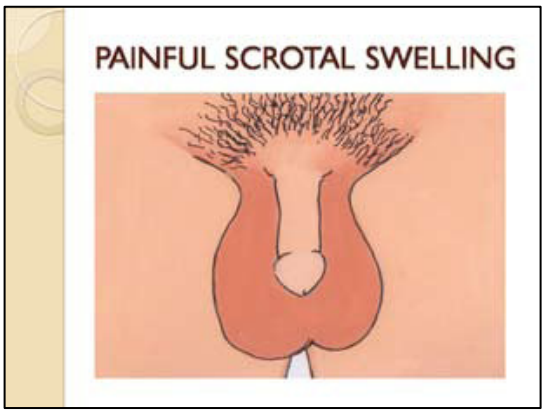

अण्डकोष में दर्द व सूजन

- अण्डकोष में दर्द और सूजन
- पेशाब करते समय जलन व दर्द
- बेचैनी एवं बुखार जैसे लक्षण
- मूत्र मार्ग से स्राव का इतिहास

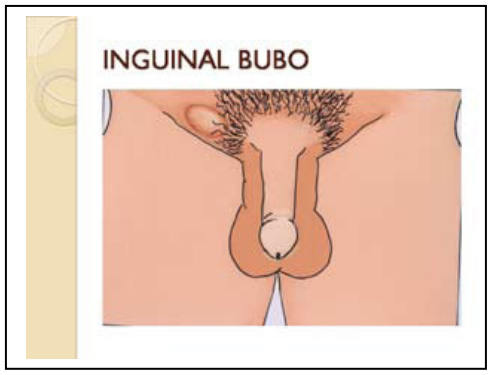

इन्गायूनल बूबो (कांच में गांठ)

- कांच में दर्द और सूजन
- जननांग के अलसर/घाव और स्राव का इतिहास
- बेचैनी एवं बुखार जैसे लक्षण

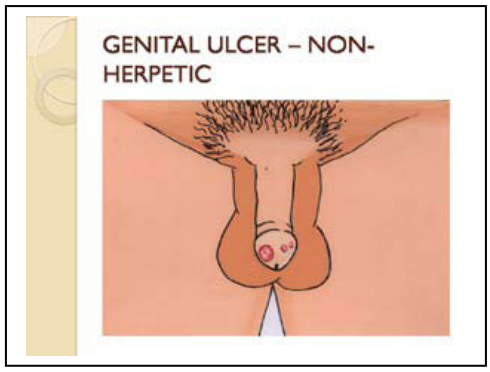

जननांग के अलसर/घाव नॉन हरपेटिक

- जननांगों में एक या कई अलसर – दर्द वाले एवं बिना दर्द वाले
- जननांगों में जलन
- लिम्फ नोड का बढ़ना

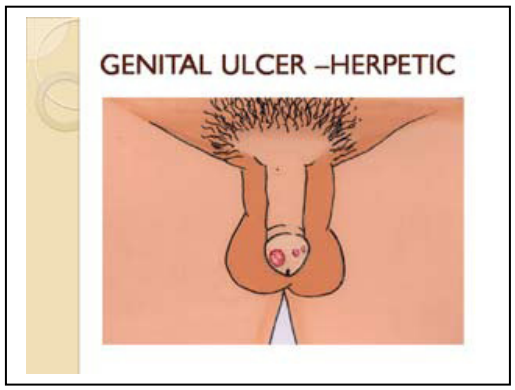

जननांग के अलसर/घाव हरपेटिक

- पानी भरे हुए दाने, दर्द, जननांगों में घाव
- जननांगों में जलन
- घाव का बार बार होना

महिलाओं में एस.टी.आई.

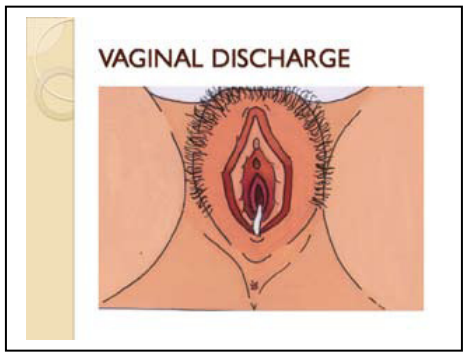

योनि से स्राव

- योनि से स्राव (पनीर जैसा सफेद)
- स्राव का प्रकार – मात्रा, रंग और गंध
- जननांगों के आसपास खुजली

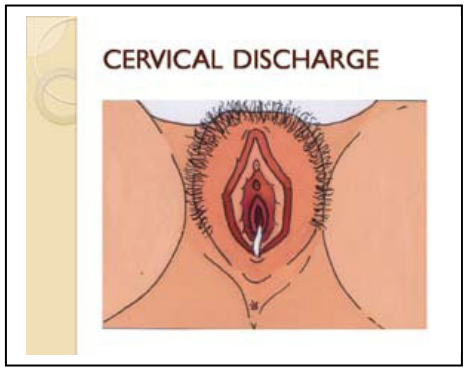

बच्चेदानी के मुंह (सरवाइकल) से स्राव

- बदबूदार पीले रंग का स्राव
- स्राव का प्रकार , मात्रा , रंग और गंध
- पेशाब करते समय जलन, बार बार पेशाब आना

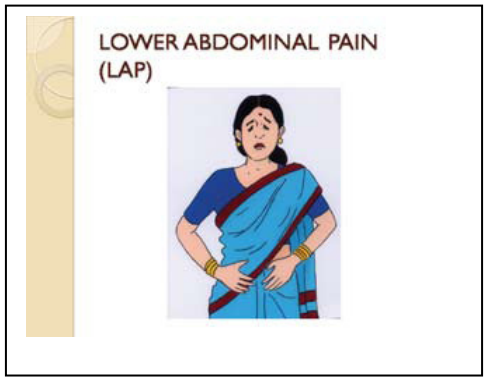

पेढू में दर्द

- पेढू में दर्द
- बुखार
- योनि से स्राव
- अनियमित माहवारी जैसे बहुत ज्यादा या अनियमित रक्तस्राव
- महवारी के दौरान दर्द
- पीठ/कमर में दर्द
- cervical motion tenderness

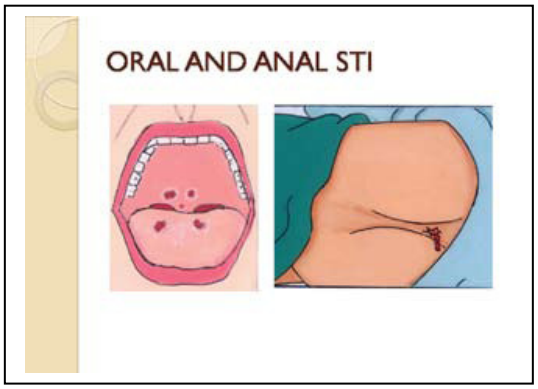

मुख एवं गुदा की एस.टी.आई.

- फोड़े
- फुन्सी
- छाले
- स्राव
- मुख या गुदा भाग में उभार/सूजन

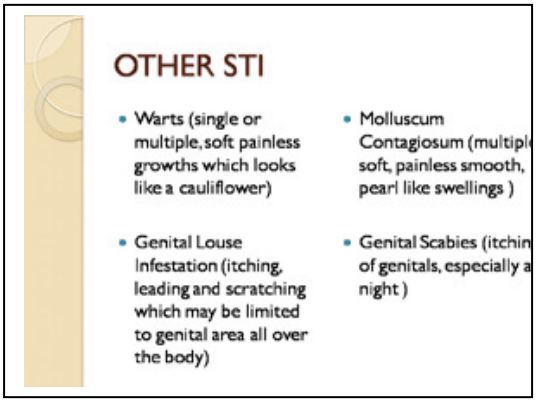

अन्य एस.टी.आई.

- मस्से (एक या अनेक, बिना दर्द का उभार जो गोभी की तरह दिखे)
- जननांगों में जुएं (खुजली व खरोचना)
- जननांगों में स्केबीस (जननांगों में खुजली विशेषकर रात के समय
- मॉलास्कम कॉन्टेजियोसम (कई, कोमल, बिना दर्द के, मोती जैसी सूजन)

एस.टी.आई. का संचरण व बचाव

अधिकांशतः एस.टी.आई. यौन संबंधों के द्वारा ही फैलते हैं। सिफलिस, हैपटाइटिस बी, एच.आई.वी. इत्यादि बीमारियां संक्रमित रक्त चढ़ाने अथवा सुई व सिरिंजों के साझा प्रयोग से फैलते हैं। हांलाकि उपयुक्त सावधानी बरत कर इन संकमणों से बचा जा सकता है। इन रोगों से बचने के लिए रक्त की जांच कराना एक महत्वपूर्ण कदम है।

उपचार

जितनी जल्दी हो सके एस.टी.आई. का इलाज कराना चाहिए। अधिकांश एस.टी.आई. पूरी तरह से ठीक हो सकते हैं (एच.आई.वी. और हैपटाइटिस को छोड़कर)। जैसे ही लक्षण/चिन्ह दिखाई दें तुरन्त डाक्टर के पास जाना चाहिए। परन्तु एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम. के परिपेक्ष में नियमित रूप से मासिक स्वास्थ्य जांच कराना ही सबसे सुरक्षित तरीका है। जब डाक्टर एस.टी.आई. के लिए दवा देता है तो दवा का पूरा कोर्स करना बहुत ज़रूरी है। दवा बीच में छोड़ देने से दोबारा संक्रमण होने का खतरा बना रहता है। जब तक एस.टी.आई. पूरी तरह ठीक न हो जाए यौन संबंध न बनाएं, यदि ऐसा करना संभव न हो तो कम से कम कण्डोम का प्रयोग अवश्य करें।

एस.टी.आई. इलाज न कराने के परिणाम

- गंभीर बीमारियां हो सकती हैं
- एच.आई.वी. (घाव वाला एस.टी.आई.) होने की संभावना
- सिफलिस का इलाज न कराने से मानसिक निष्क्रियता आ सकती है ।
- यदि गर्भवती मां संक्रमित (सिफलिस, गनौरिया) है तो कुछ यौन जनित संक्रमण अगली पीढ़ी में भी जा सकते है ।
- लम्बे समय तक गनौरिया होने से मूत्राशय की नली संकीर्ण या बन्द भी हो सकती है।
- लम्बे समय तक बच्चेदानी के मुंह में सूजन (सर्विसाइटिस) होने से बांझपन आ सकता है ।

लक्षण व बिना लक्षण वाले एस.टी.आई. :

कुछ एसटीआई में बाहरी कोई लक्षण नहीं दिखते हैं लेकिन अंदरूनी लक्षण हो सकते हैं । इसी लिए एक चिकित्सक द्वारा अंदरूनी जांच आवश्यक है । इसके अलावा, सिफलिस के लक्षण कुछ समय में गायब हो जाते हैं और केवल खून की जांच से ही इसकी पुष्टि हो सकती है ।

पुरुषों की तुलना में महिलाओं को और अधिक संक्रमण होने का खतरा है।

शारीरिक कारण

- महिलाओं में प्रजनन क्षेत्र में म्यूकस झिल्ली का चौड़ा क्षेत्र तथा लंबे समय तक वीर्य का योनि में रहना।
- महिलाओं के प्रजनन अंगों के अन्दर होने के कारण रोग के लक्षण देर से पता चलते हैं।

सामाजिक कारण

- विशेषकर निम्न सामाजिक स्तर के परिवारों में प्रजनन स्वास्थ्य सहित स्वास्थ्य के अन्य मुद्दों की परिवार अनदेखी करता है।
- बीमारी के बारे में जानकारी या सूचना का अभाव
- महिला का उनके प्रजनन स्वास्थ्य पर. कम नियंत्रण होता है
- एसटीआई का संबंध यौन व्यवहार के साथ है इसलिए सामाजिक तौर पर यह बात स्वीकार नहीं हो महिला अपने रोग के बारे में बताए।

साथी के उपचार का महत्व

- किसी भी एक साथी को अगर एसटीआई है, तब दोनो को डॉक्टर की सलाह के अनुसार उपचार कराना चाहिए व दवा लेनी चाहिए ताकि पुनः संक्रमण न हो। साथी में एसटीआई के लक्षण न होने पर भी ऐसा किया जाना चाहिए ।

(Adapted from 'Training Manual for Counselors STI/RTI Clinics', NACO and 'PE Basic Training Manual'. Pathfinder International Mukta Project)

- यदि प्रतिभागियों का एफ.एस.डब्लू समूह है तो अंदरूनी जांच की आवष्यकता पर चर्चा करें।
- समझाएँ कि महिलाओं में एसटीआई कभी–कभी लक्षण रहित हो सकता है इससिए मासिक स्वास्थ्य जांच बहुत ज़रूरी है। इस बात पर ज़ोर देने के लिए एक छोटा सा खेल खेलें ।

अंदरूनी जाँच के महत्व पर खेल (एफ.एस.डब्लू समूह के लिए)

- एक मार्कर पेन लें (अच्छा हो पेन लाल रंग का हो) और अपने दाहिने हाथ के जोड़ के अंदरूनी हिस्से में एक छोटी सी लाल रंग की बिन्दी इस तरह से लगाएं कि जब आप अपनी कोहनी बंद करें तो वह दिखे नहीं ।
- अब अपनी कोहनी को इस तरह बंद करे कि आपका हाथ आपके कंधे की ओर जाए।
- अपने बंद हाथ का बायाँ हिस्सा दिखाते हुए प्रतिभागियों को बताएं कि मान लें कि यह योनि का मुख द्वार है (वास्तविक योनि के मुख द्वार व बंद कोहनी की सहायता से प्रतीत होता मुख द्वारा के बीच की समानता को देखने के लिए प्रोत्साहित करें जोकि बंद होंठों के जैसा लगता है)
- प्रतिभागियों से पूछें कि कोहनी द्वारा बना योनि जैसा दिखने वाले मुख द्वार में कुछ दिखाई दे रहा है।
- फिर धीरे धीरे, (नाट्कीय रूप से) दूसरे हाथ की दो उंगलियों का प्रयोग कर ' योनि ' (मुड़ा हुआ हाथ) के होठों को खोलने की कोशिश करें ऐसे कि लाल बिंदी जो पहले आपने मुडे हुए हाथ में बनाई थी वह दिखाई दे ।
- अब, एक बार फिर प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वह योनि (मुड़ा हुआ हाथ जो खुल गया है) के अंदर. कुछ भी देख पा रहे हैं ।
- संभावित प्रतिक्रिया के बाद (एक लाल बिंदी, एक खरोंच, आदि) निम्नलिखित समझाएंः
- हो सकता है कोई योनि के बाहर से कुछ भी नहीं देख सके (जैसे पहले लाल डॉट नहीं देख सके थे) लेकिन इसका मतलब यह नहीं वह एसटीआई से पीड़ित नहीं है।
- योनि की अंदरूनी जांच करने पर फोड़े या स्राव को देखा जा सकता है जो बाहर से नहीं दिखते है । इसे बिना लक्षण वाले एसटीआई कहते हैं ।
- ये केवल एक अंदरूनी जांच के माध्यम से ही देखे जा सकते है ।
- इस प्रकार क्लीनिक पर नियमित रूप से अंदरूनी जांच कराना बहुत ज़रूरी है ।

निम्नलिखित पर जोर देते हुए सत्र का समापन करें : –

- पियर को एस.टी.आई के बारे में यह जानकारी समुदाय के सभी सदस्यों को प्रदान करनी चाहिए ।
- आने वाले सत्र में पियर समुदाय के सदस्यों के साथ बात चीत करते समय फ्लिप बुक का उपयोग करना सीखेंगे ।

2 ब : एस.टी.आई की रोकथाम और नियंत्रण में पियर की भूमिका

उद्देश्य : समुदाय के सदस्यों में एस.टी.आई. के नियंत्रण में उनकी भूमिका को स्पष्ट करना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी एसटीआई से बचाव तथा नियंत्रण में अपनी भूमिका की सूची बना पाएंगे।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : समूह कार्य, चर्चा

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन

प्रक्रिया :

- कई एमएसएम/एफ.एस.डब्लू/आई.डी.यू को ऐसे एसटीआई है जिनका इलाज नहीं हुआ है –प्रतिभागियों से इसका कारण पूछें ।
- प्रतिभागियों द्वारा बताए गए कारणों की एक सूची बनाएं ।
- एसटीआई के शीघ्र इलाज के महत्व को देखते हुए (पिछले सत्र का संदर्भ लें) तथा प्रतिभागियों द्वारा बताए गए कारणों के आधार पर उन्हें बताएं कि समूह कार्य में वह इस बात पर चर्चा करेंगे कि स्थिति को बदलने में पियर एजुकेटर क्या कर सकते हैं ।
- प्रतिभागियों को 4 समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक समूह को पियर की भूमिका पर चर्चा करने को कहें। प्रत्येक समूह को बड़े समूह के सामने अपनी चर्चा प्रस्तुत करने को कहें ।
- प्रतिभागियों के साथ चर्चा के बाद ही छूटी हुई भूमिकाओं को जोड़ते हुए एसटीआई प्रबंधन में पियर की भूमिका की एक व्यापक सूची बनवाएं ।

एस.टी.आई. प्रबंधन में पियर की भूमिका

- समुदाय के पसंदीदा स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की पहचान करें और उनके साथ नेटवर्क करें।
- यौन कर्मियो, एम.एस.एम, आई.डी.यू. और उनके ग्राहकों को एसटीआई के बारे में जानकारी दें।
- क्लिनिक में स्वास्थ्य जाँच कराने के लिए उन्हें प्रेरित करें।
- उनके साथ क्लिनिक में जाना (अगर वे तैयार हैं) ताकि उनका विश्वास प्राप्त कर सकें।.
- सिफलिस जांच (वर्ष में दो बार) के लिए समुदाय के सदस्यों को प्रेरित करें।
- उपचार के बारे में उनसे पूछताछ करें व परामर्श दें।
- साथी को क्लिनिक पर लाने की कोशिश करें।

- कंडोम के लगातार इस्तेमाल के बारे में जानकारी एवं परामर्श दें।.
- सेवाओं की गुणवत्ता की निगरानी –गोपनीयता बनाए रखना, परियोजना के कर्मचारियों के अनिर्णायक एवं दोस्ताना व्यवहार पर ध्यान देना।
- क्लिनिक प्रबंधन टीम के सक्रिय सदस्य होना ।
- क्लिनिक बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेना तथा फीडबैक देना ताकि क्लिनिक टीम एवं आउटरीच टीम द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के नियोजन में सहायता मिल सके।
- क्लिनिक/एसटीआई सेवा प्रदाताओं और समुदाय के सदस्यों के बीच एक कड़ी का काम करना।
- एक ओ.आर.डब्लू के साथ मिलकर उन हॉटस्पॉट की योजना बनाना जहां क्लीनिक पर एच.आर.जी. कम मात्रा में आ रहे हों।
- समुदाय के नए सदस्यों को सेवा का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

(Adapted from 'PE Basic Training Manual', Pathfinder International Mukta Project)

सत्र 3: सकारात्मक रोकथाम (प्रिवेन्टिव प्रिवेन्शन) एवं आई.सी.टी.सी. और ए.आर.टी. पर रेफरल

उद्देश्यः	प्रतिभागियों को सकारात्मक रोकथाम के महत्व, पी.एल.एच.आई.वी के जोखिम को कम करने के लिए परामर्श और पी.एल.एच.आई.वी के यौन अधिकारों के सम्मान के महत्व को समझने में मदद करना। एक एच.आई.वी. पॉजिटिव व दूसरे निगेटिव जोड़ों से जुड़े मुद्दों की पहचान करना तथा उन्हे स्थानीय स्वास्थ्य सेवाएं दिलवाने में मदद करना ।
अपेक्षित परिणामः	प्रतिभागी एच.आई.वी. पॉजीटिव लोगों में रोग की रोकथाम के विभिन्न पहलुओं को समझकर अपने साथियों को परामर्श दे पाएंगे।
समयावधि :	1 घंटा
विधि :	पी.एल.एच.आई.वी द्वारो अनुभव बांटना , चर्चा, , प्रस्तुतिकरण , समूह कार्य, रोल–प्ले , ब्रेनस्टार्मिंग
सामग्री/तैयारीः	पी.एल.एच.आई.वी के लिए स्थानीय सेवाओं पर उपलब्ध जानकारी

प्रकिया

- एचआईवी पॉजिटिव समुदाय से एक सदस्य को आमंत्रित करें और उनसे अनुरोध करें कि निम्नलिखित पर अपने अनुभव के बारे में प्रतिभागियों को बताएं :
  - वह अवस्था जब उसने पॉजिटिव होने के बारे में जाना
  - उस व्यक्ति की मौजूदा अवस्था
  - वह किन अनुभवों से गुज़रा/गुज़री है
  - उसने चुनौतियों का सामना कैसे किया
  - उसे किसे और कहां से सहयोग मिला
- यदि उपरोक्त संभव नहीं है तो प्रतिभागियों से पूछें क्या वह अपने आसपास या किसी मित्र या अन्य एच.आई.वी. पॉज़िटिव व्यक्ति के बारे में जानते हैं। उनसे यह भी पूछें कि पॉज़िटिव व्यक्ति को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है – सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, वित्तीय एवं देखभाल आदि से संबंधित ।
- एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के रोग की रोकथाम (पॉजिटिव प्रिवेन्शन) के विषय के बारे में बताएं।

एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के रोग की रोकथाम (पॉजिटिव प्रिवेन्शन) क्या है?

एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के रोग की रोकथाम करने की प्रक्रिया को पॉजिटिव प्रिवेन्शन कहते है । इसका उद्देश्य एचआईवी पॉजिटिव लोगों का आत्म सम्मान, आत्मविश्वास और अपने स्वास्थ्य की रक्षा तथा दूसरों में संक्रमण को फैलने से रोकने की क्षमता में वृद्धि करना।

समूह के साथ निम्न सवालों पर ब्रेनस्टॉम करवाएं :–

- पी.एल.एच.आई.वी को एचआईवी संक्रमण की रोकथाम के बारे में क्यों जानना चाहिए?
- पॉजिटिव प्रिवेन्शन के महत्वपूर्ण संदेश क्या हैं?
- उन दम्पत्तियों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करें जिनमें एक व्यक्ति एचआईवी पॉजिटिव है और दूसरा नहीं ?
- चर्चा का संक्षिप्तीकरण करें।

एक पी.एल.एच.आई.वी को एचआईवी संचरण की रोकथाम के बारे में क्यों जानना चाहिए?

एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों को सुरक्षित यौन संबंधों और सुरक्षित ढंग से सुई लगवाने के बारे में सूचना व सहयोग देने की आवश्यकता होती है। उनके साथियों को भी इनके बारे में बताने की आवश्यकता है। इसके साथ ही पी.एल.एच.आई.वी के अपने यौन स्वास्थ्य अधिकार होते हैं जिनके बारे में वह निर्णय ले सकता है : –

- यौन संबंध बनाएं या नहीं
- यौन सुख और संतोष के तरीके
- अपनी तथा अपने यौन साथियों की सुरक्षा

एच.आई.वी. पॉजिटिव लोगों के स्वास्थ्य में सधार आने पर लोगों की रोग के जोखिम के बारे में राय बदल सकती है और रोकथाम संदेशों पर बल दिया जाना चाहिए।

'' सकारात्मक रोकथाम '' के लिए महत्वपूर्ण संदेश क्या हैं ?

पी.एल.एच.आई.वी को निम्नलिखित के बारे में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए :

- यौन संबंध से संक्रमण फैलने का खतरा
- उचित तरीके
- उपलब्ध सेवाएं

सेरो–डिस्कोर्डेन्ट (जिसमें एक व्यक्ति एचआईवी पॉजिटिव है और दूसरा नहीं) **दम्पत्ति के मुद्दे क्या हैं?**

यह वे दम्पत्ति हैं जिनकी एक सी स्थिति नही है (जिसमें एक व्यक्ति एचआईवी पॉजिटिव है और दूसरा नहीं) उन्हें जोखिम को कम करने तथा बच्चा पैदा करने या न करने के विकल्पों पर विचार करना चाहिए। कुछ विचारनीय मुद्दे हैंः

- परामर्श के लिए एक साथ जाने में झिझक
- लगातार कंडोम के इस्तेमाल में बाधाएं
- एच.आई.वी. निगेटिव साथी से बातचीत करने तथा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाता की भूमिका

विशेष रूप से आई.डी.यू समुदाय के लिए :

- सुरक्षित सुई सिरिंज के प्रयोग के बारे में योजना बनाने में सहयोग करना
- सुरक्षित यौन व्यवहार पर परामर्श क्योंकि उनमें भी यौन संबंधों से संक्रमण होने का खतरा रहता है ।

(Adapted from refresher training for ART counselors, NACO)

- पी.एल.एच.आई.वी वक्ता को कुछ विशेष मुद्दों पर बात करने के लिए प्रोत्साहित करें :
  - आई.सी.टी.सी में अनुभव, प्रक्रिया का पालन
  - ए.आर.टी. केंद्र में अनुभव, प्रक्रिया का पालन
  - पी.एल.एच.आई.वी के लिए अन्य सेवाएं
- यदि एक वक्ता उपलब्ध नहीं है, समूह को वर्तमान में एचआईवी पॉजिटिव लोगों के लिए उपलब्ध सेवाओं सहित ए.आर.टी और आई.सी.टी.सी पर और पी.एल.एच.आई.वी की इन सेवाओं तक पहुंच बनाने में पियर की भूमिका पर ब्रेनस्टार्म करने के लिए कहें ।
- इन सेवाओं की दो वर्गों में सूची बनाएं – पहली जो परियोजना द्वारा उपलब्ध करायी जा रही सेवाए और दूसरी अन्य सेवाओं की ।

पी.एल.एच.आई.वी के लिए रेफरल सेवाएं

एचआईवी / एड्स एक प्रमुख सामाजिक समस्या के साथ साथ चिकित्सा चुनौती के रूप में उभरा है । इस रोग के साथ लांछन (stigma) जुड़े होने से एच.आई.वी. पॉजिटिव व्यक्ति तथा उसके परिवार को सामाजिक भेदभाव तथा अलगाव का सामना करना पड़ता है । रोज़गार, रहने को मकान तथा अन्य सामाजिक सुविधाओं के न मिलने से पी.एल.एच.आई.वी. का अपना परिवार तथा समाज उसका बहिष्कार कर देते हैं। यहां तक कि स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने वाले लोग भी उनसे भेदभाव करते हैं। इन सबसे एच.आई.वी. पॉजिटिव व्यक्तियों तथा उनके परिवारों पर अत्यधिक मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ता है और वह कई बार आत्महत्या की कोशिश कर बैठते हैं। टी.बी. जैसे अवसरवादी संक्रमण रोग को और बढ़ा देते हैं। एच.आई.वी./एड्स हस्तक्षेप कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य एच.आई.वी./एड्स ग्रसित व्यक्तियों को देखभाल और सहयोग प्रदान करना है।

एचआईवी पॉजिटिव लोगों के लिए उपलब्ध सेवाएं :

परियोजना स्तर पर

- परामर्श
- पियर और कर्मचारियों का सहयोग
- पी.एल.एच.आई.वी सहायता समूह जैसे समूहों की सदस्यता

अन्य स्वास्थ्य केंद्रों पर

- आई.सी.टी.सी और एआरटी केंद्र – परीक्षण और उपचार
- परामर्श सेवाएं
- टीबी के इलाज के लिए – डॉट्स सेवाएं

सरकारी योजना के स्तर पर

- संजय गांधी निराधार योजना
- बीमा योजना

पियर की भूमिका :

- एचआईवी के बारे में एच.आर.जी और पी.एल.एच.आई.वी के बीच जागरूकता फैलाना
- एचआईवी की जांच आवश्यक क्यों है और यह कहाँ उपलब्ध है इसके बारे में एच.आर.जी को सूचित करना ।
- साल में दो बार एचआर.जी. को आई.सी.टी.सी पर एचआईवी की जांच हेतु जाने के लिए प्रोत्साहित करना ।
- यदि ज़रूरी हो तो एचआरजी के साथ आई.सी.टी.सी तक जाएं ।
- एचआईवी की स्थिति की गोपनीयता सुनिश्चित करना।
- एचआरजी का आई.सी.टी.सी पर जांच से पहले और बाद में परामर्श सुनिश्चित करना।

- एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति और उसके परिवार का साथ देना ।
- सरकारी एआरटी केन्द्रों पर पूर्व एआरटी पंजीकरण सुनिश्चित करना ।
- पी.एल.एच.आई.वी. को उपयुक्त उपचार उपलब्ध करवाने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ संपर्क स्थापित करना।
- एसटीआई और एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों तथा उनके साथियों को नियमित जांच के लिए प्रेरित करना ।
- एचआईवी स्थिति से निपटने में मदद करना ।
- डॉक्टर तथा परामर्शदाता के पास भेजना।
- पी.एल.एच.आई.वी. की सहमति से उनके परिवारों को परामर्श देना।

सत्र का संक्षिप्तीकरण

- एचआईवी जांच के लिए एच.आर.जी. को आईसी.टी.सी. भेजना
- पी.एल.एच.आई.वी. को प्रभावी सहयोग प्रदान करने हेतु पियर को एआरटी सहित सभी सेवाओं के साथ समन्वय स्थापित करना

दिवस 2 का मूल्याँकन

तिथी : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1	**आज के सत्रों पर प्रतिक्रिया**				
	आउटरीच और आउटरीच योजना (स्पॉट विश्लेषण, हॉटस्पॉट लोड मैपिंग)				
	यौन जनित संक्रमण को समझना				
	यौन जनित संक्रमण के बचाव एवं नियंत्रण में पियर की भूमिका				
	सकारात्मक रोकथाम एवं ए.आर.टी. व आई.सी.टी.सी. पर रेफरल				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि, सामग्री, विधि और फिल्म पर भी टिप्पणियाँ करें

दिवस 3

दिवस 3

दूसरे दिन का पुनरावलोकन (15 मिनट) 10.00–10.15

सत्र 1: कण्डोम को बढ़ावा देना (2 घंटे, 30 मिनट)

1अ : पुरूष एवं महिला कण्डोम 10.15–11.15

- पुरूष एवं महिला कण्डोम प्रस्तुतिकरण
- कण्डोम से संबंधित भ्रान्तियों को दूर करना–चर्चा एवं खेल
- कण्डोम का प्रदर्शन

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.15–11.30

1ब : कण्डोम की मांग एवं आपूर्ति 11.30–01.00

- प्रस्तुतिकरण एवं अभ्यास–कण्डोम की उपलब्धता और पहुंच का मानचित्रण
- प्रस्तुतिकरण एवं अभ्यास–कण्डोम की मांग का अनुमान
- प्रस्तुतिकरण एवं अभ्यास–कण्डोम गैप विश्लेषण

भोजनावकाश (45 मिनट) **01.00–01.45**

सत्र 2: जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों को संबोधित करने के लिए संचार (2 घंटे, 30 मिनट)

2अ : वार्तालाप आधारित आपसी बातचीत (आई.पी.सी.) 01.45–02.45

- प्रस्तुतिकरण : वार्तालाप आधारित संचार
- समूह कार्य
- टूल का अभ्यास (शारीरिक मानचित्रण, ऐसा क्यों है)

2ब : पियर द्वारा आपसी बातचीत (वन टू वन) 02.45–04.15

- चर्चा : संचार के विषय
- समूह कार्य : चर्चा के बिन्दुओं का अभ्यास करना (फ्लिपबुक द्वारा)
- चर्चा पर प्रस्तुतिकरण

दिवस 3 का मूल्यांकन (15 मिनट) 04.15–04.30

दिन 3

सत्र 1 : कंडोम को बढ़ावा देना
1 अ) : पुरूष और महिला कंडोम
1 ब) : कंडोम की मांग और आपूर्ति

उद्देश्य : प्रतिभागियों को कंडोम के प्रयोग के बारे में पूरी जानकारी देना और प्रदर्शन के विभिन्न चरणों का अभ्यास कराना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी पुरुष और महिला कण्डोम के प्रदर्शन के विभिन्न चरण जान पाएंगे । प्रतिभागी स्पष्ट रूप से जान पाएंगे कि स्वयं उन्हे फील्ड में कौन कौन सी बाते बतानी हैं।

समयावधि : 1 घंटे

विधि : चर्चा, प्रदर्शन, प्रस्तुतिकरण, समझाना

सामग्री / तैयारी : चार्ट, मार्कर पेन, पुरुष और महिला कंडोम, लिंग का मॉडल
योनि का मॉडल (यदि उपलब्ध हो)

प्रक्रिया :

कंडोम के बारे में बात करके सत्र शुरू करें । समूह की इच्छा के अनुसार पुरुष, महिला कंडोम या दोनों पर बात की जा सकती है ।

पुरुष कंडोम	महिला कंडोम
लेटेक्स से निर्मित	पालीयूथरेन से निर्मित
तेल आधारित ल्यूब्रिकेन्ट के साथ उपयोग में नहीं लाया जा सकता	पानी और तेल आधारित ल्यूबरिकेन्ट, दोनों के साथ उपयोग में ला सकते हैं
खड़ी अवस्था वाले लिंग पर ही लगा सकते हैं	लिंग की अवस्था पर निर्भरता नहीं
पुरूष लिंग एवं महिला के आंतरिक जननांगों को ढकता है	पुरूष लिंग (आधार भी), महिला के आंतरिक तथा कुछ बाहरी हिस्से को भी ढकता है

स्खलन के तुरंत बाद हटाना पड़ता है	स्खलन के तुरंत बाद हटाना आवश्यक नहीं है
गर्म और सीलन वाले जगह पर लेटेक्स खराब हो जाता है	गर्मी और सीलन से पालीयूथरेन कंडोम को नुकसान नहीं पहुंचता

पुरुष कंडोम के बारे में महत्वपूर्ण बिंदु :

1. कंडोम लगाते समय यदि ऐसा लगता है कि उल्टी तरफ से लगा है तो उसी कंडोम की साइड बदलकर उपयोग में न लाया जाए चूकिं वह कंडोम पहले ही शरीर को छू चुका है तो शरीर के कुछ तरल पदार्थ उसके साथ चिपक सकते हैं और संक्रमण का खतरा हो सकता है। ऐसी अवस्था में दूसरा कंडोम इस्तेमाल करना चाहिए।
2. मुख मैथुन में संक्रमण के अवसर कम होते हैं परन्तु फिर भी कंडोम का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
3. कंडोम लगाना एक कौशल है और इसे सहज ढंग से लगाना चाहिए ।
4. कंडोम धूप और पानी से दूर सूखे तथा ठंडे स्थान पर रखा जाना चाहिए ।
5. अतिरिक्त ल्यूबरिकेन्ट की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि कंडोम में ल्यूबरिकेन्ट पहले से ही होता है लेकिन फिर भी अगर जरूरत हो तो जल आधारित ल्यूबरिकेन्ट प्रयोग में लाएं। (तेल नही)
6. कंडोम कई प्रकार के होते हैं जैसे फ्लेवर्ड (चॉकलेट/स्ट्राबेरी) और टेक्सचर्ड (डॉटेड / रिब्ड आदि) ।
7. सरकारी और विभिन्न कंपनियां कंडोम बनाती हैं । सरकारी कंडोम निशुल्क बांटे जाते हैं और उनकी भी क्वालिटी उतनी ही बढ़िया होती है (समान रूप से प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं पर गुणवत्ता की जाँच)
8. कुछ कंडोम का सामाजिक विपणन किया जाता है। उनकी कीमत बाजार से कम होती है ।
9. कंडोम से दोहरी सुरक्षा मिलती है (संक्रमण और अनचाहे गर्भ से) ।
10. आजकल बाजार में महिला कंडोम भी उपलब्ध है लेकिन वे बहुत महंगे हैं । किन्तु कुछ परियोजनाओं में सामाजिक विपणन के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं ।

महिला कंडोम की विशेषताएँ

- अतिरिक्त विकल्प, एसटीआई / एचआईवी / एड्स और अनचाहे गर्भ से अतिरिक्त सुरक्षा
- महिलाओं और पुरुषों को स्वीकार्य
- महिलाओं में सुरक्षा और नियंत्रण की भावना.
- विकल्प बढ़ने से बचाव अधिक हो पाता है।

लाभ

- जब पुरुष को कंडोम के लिए राज़ी करना मुश्किल हो तब महिला कंडोम प्रयोग में लाया जा सकता हैः
- एसटीआई / एचआईवी / एड्स और अनचाहे गर्भ से प्रभावी सुरक्षा
- अवरोध रहित यौन संबंध
- लंबे समय तक प्रयोग किया जा सकता है
- यौन संबंध के दौरान सहजता
- आय में वृद्धि
- यदि ज़रूरत हो तो बिना साथी की जानकारी के उपयोग में लाया जा सकता है
- माहवारी के दौरान भी प्रयोग में लाया जा सकता है
- अपने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अपने हाथ में लेने की महिलाओं को स्वतंत्रता मिलती है
- जिनको लेटेक्स एलर्जी हो वह भी इसे प्रयोग में ला सकते हैं

- कंडोम पर चर्चा करने के बाद प्रतिभागियों से कहें कि वह कंडोम और कंडोम के उपयोग के बारे में प्रमुख भ्रान्ति व शंकाओं की एक सूची बनाएं । उनसे पूछें कि ग्राहक कंडोम का प्रयोग क्यों नहीं करते?
- उनके उत्तर सुनने के बाद छूटी हुई भन्तियों को सूची में जोड़ें । नीचे दी गयी सूची का संदर्भ लेंः

कंडोम पर आम भ्रन्तियाँ और शंकाएं

- सेक्स के दौरान कंडोम के प्रयोग में परेशानी आती है
- संभोग के दौरान कंडोम फट जाएगा
- कंडोम के प्रयोग से यौन सुख कम मिलता है
- कंडोम चिपचिपा और तैलीय होता है
- कंडोम का प्रयोग करने से पहले लिंग ढीला पड़ जाता है
- डबल कंडोम बेहतर सुरक्षा प्रदान करेगा
- कंडोम का प्रयोग करने से साथी के लिए उसकी भावुकता में कमी आ जाती है
- कंडोम दो साथियों के बीच विश्वास में कमी लाता है

इन भ्रान्तियों को स्पष्ट करते हुए बताएं :

- कंडोम चिकनाईयुक्त और मुलायम होते हैं और कंडोम के सही इस्तेमाल से जलन नहीं होती है ।
- दो कंडोम एक साथ प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि दोनों के फटने की संभावना बढ़ जाती है ।
- कंडोम भावनात्मक जुड़ाव में कोई बाधा नहीं डालते।
- कंडोम पहनने की प्रक्रिया भी सुखद है।
- यदि ग्राहक कंडोम का उपयोग करता है तो उसे अधिक मज़ा आएगा क्योंकि उसकी एसटीआई या एचआईवी / एड्स से संक्रमित होने का तनाव या आशंका दूर हो जाएगी ।
- इन भ्रान्तियों को दूर करते हुए प्रतिभागियों को कंडोम दें और उसे छूने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें उसे हाथ पर चढ़ाने, फुलाने, पानी भरने के लिए कहें । ऐसा करते समय कंडोम की लंबाई और चौड़ाई, इसका कितना विस्तार किया जा सकता है, कितना पानी इसमें भर कर सकते हैं आदि समझाएँ।
- किसी भी 2 प्रतिभागियों को पुरुष कंडोम का प्रदर्शन करने के लिए बुलाएं । अन्य प्रतिभागियों को प्रदर्शन को ध्यान से देखने के लिए कहें ।
- प्रदर्शन करने के बाद, प्रतिभागियों से पूछें क्या यह सही ढंग से किया गया था । यदि हाँ, तो प्रयासों की सराहना करे । अगर नहीं, तो अन्य प्रतिभागियों से सुधार हेतु सुझाव देने को कहें ।
- प्रतिभागियों को फिल्म '' कमला दीदी और एक नई पियर को बनाना '' में किए गए कंडोम प्रदर्शन की याद दिलाएं और पूछें कि कौन से चरण इसमें छूट गए हैं।
- विस्तार में पुरुष कंडोम के प्रदर्शन के चरण समझाएं।

पुरूष कंडोम प्रदर्शन

	पहला चरणः जो पढ़ लिख सकते हैं वह कंडोम के पैकेट पर उसकी एक्सपायरी तिथि पढ़ लें और जो पढ़ लिख नहीं सकते वह यह जांच लें कि जब पैकेट के एक किनारे को दबाते हैं तो कंडोम आसानी से इधर उधर हो जाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो कंडोम उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है।
	दूसरा चरणः पैकेट को एक तरफ से ध्यान से फाड़ें ताकि कंडोम सुरक्षित रहे और पैकेट से बाहर निकालें।

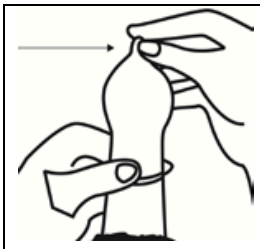	तीसरा चरणः कंडोम का सही साइड देख लें और फिर अपने अंगूठे और उंगली के बीच के हिस्से से कंडोम को पकड़ें ताकि कंडोम के निपल से हवा बाहर निकल जाए। यह सुनिश्चित करें कि कंडोम का घेरा बाहर की तरफ हो।
	चौथा चरणः कंडोम की टिप को दो उंगलियों से पकड़ते हुए उसे खड़े लिंग पर रखें और धीरे धीरे कंडोम को लिंग की जड़ तक चढ़ाएं। साथी के मुख, गुदा एवं योनि में लिंग जाने से पहले ही उसपर कंडोम चढ़ा लेना चाहिए
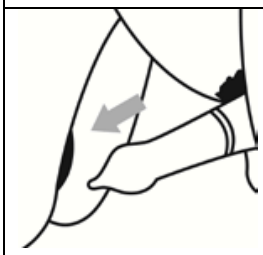	पांचवा चरणः यौन क्रिया
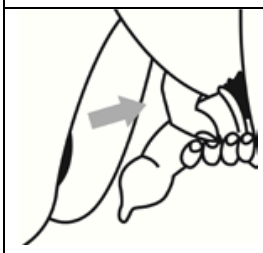	छठा चरणः स्खलन के बाद लिंग ढीला पड़ने से पहले ही उसे योनि से बाहर निकाल लें। साथी के शरीर से लिंग बाहर निकालते समय ध्यान रखें कि कंडोम फिसल न जाए। कंडोम को निकालते समय लिंग की जड़ के पास से कंडोम को पकड़े रहें।
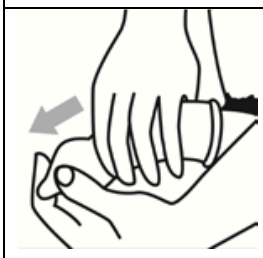	सातवा चरणः कंडोम को लिंग से निकाल लें, ध्यान रहे कि वीर्य साथी की योनि, मुख या गुदा के आस पास न फैले।
	आठवां चरणः कंडोम के खुले किनारे पर गांठ बांधे ताकि वीर्य फर्श पर न गिरे। कंडोम को कागज में लपेट कर कूढ़ेदान में डालें।
(Adapted from poster by PATHFINDER International Mukta Project)	

- इसके बाद प्रतिभागियों को जोड़ों में विभाजित करें और हर जोड़े को उन चरणों को ध्यान में रखते हुए जिनपर ऊपर चर्चा कर चुके हैं , कंडोम प्रदर्शन का अभ्यास करने को कहें ।
- इस बात पर ज़ोर दे कि प्रतिभागियों को यह प्रक्रिया समुदाय के सदस्यों को क्षेत्रीय स्तर पर सिखानी होगी इसलिए उन्हें बिना गलती करे यह करना आना चाहिए ।
- एक बार प्रतिभागी कंडोम प्रदर्शन में सहज महसूस करें फिर उन्हें अन्य गतिविधियों का भी अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे उनकी आँख पर कपड़ा बांधकर लिंग मॉडल पर अंधेरे में कंडोम चढ़ाने का अभ्यास (कई बार वह जगह या कमरे जहाँ ग्राहकों का मनोरंजन किया जाता है उनमें अंधेरा होता है । यह ज़रूरी है कि तब भी कंडोम को सही तरीके से चढ़ाना आना चाहिए)
- पुरूष कंडोम प्रदर्शन के बाद यदि प्रशिक्षक उचित समझे और समूह उत्सुक हो तो महिला कंडोम प्रदर्शन भी कर सकते हैं ।
- नोट : प्रदर्शन के लिए सबको अलग कंडोम नहीं मिलेगा लेकिन सीखने के लिए एक कंडोम का दुबारा प्रयोग किया जा सकता है ।

महिला कंडोम प्रदर्शन

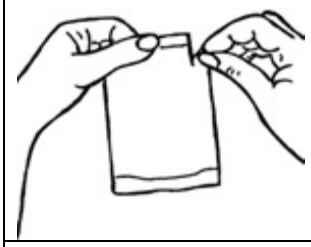	चरण 1: एक्सपाइरी तिथि चेक करें। खोलने के लिए, तीर के निशान से नीचे की तरफ फाड़ें।
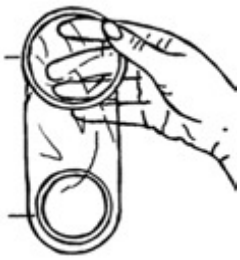	चरण 2: पैकेट से कंडोम को निकालें।
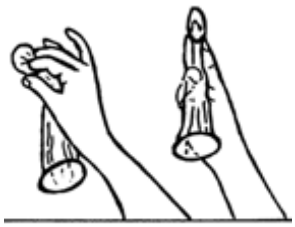	चरण 3: कंडोम के अन्दरूनी घेरे को अंगूठे और तर्जनी उंगली से पकड़ें। अन्दरूनी घेरे को दबाते हुए मोड़कर अंग्रेज़ी 8 का आकार बनाएँ और कसकर पकड़ें।
	चरण 4: महिला कंडोम को योनि में लगाने के लिए एक आरमदायक स्थिति में आएं। यह तीन अवस्थाओं में किया जा सकता है: बैठे हुए, पालथी मारकर या लेटकर।

	चरण 5: योनि के खुले भाग से उसके दोनों बाहरी हिस्सों को अलग करें। अब अन्दरूनी घेरे को योनि में अन्दर डालें जहाँ तक सम्भव हो।
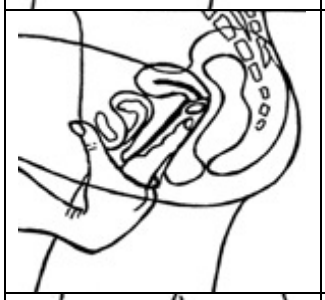	चरण 6: महिला कंडोम में तर्जनी या बीच की उंगली डालकर कंडोम को ठीक से लगा लें। अभ्यास से यह और आसान होता जाएगा।
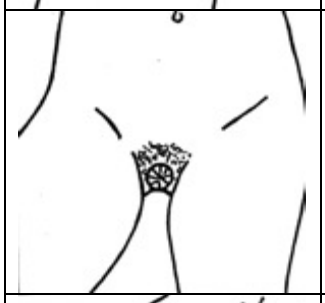	चरण 7: बाहरी घेरे के साथ कंडोम के आवरण का लगभग एक इंच हिस्सा शरीर के बाहर रहेगा।
	चरण 8: पुरूष के लिंग के प्रवेश के समय अपने हाथ से महिला कंडोम के घेरे को पकड़ें और यदि सहज हो तो लिंग को योनि में प्रवेश करने के लिए हाथ से सहयोग दें (नही तो सम्भावना है कि लिंग के योनि में प्रवेश के समय लिग महिला कंडोम के बाहरी घेरे को योनि में धकेल सकता है) या लिंग कंडोम के आवरण के बगल से महिला योनि में प्रवेश कर सकता है।
	चरण 9: महिला कंडोम को निकालने के लिए कंडोम के बाहरी घेरे को मोड़ लें ताकि वीर्य कंडोम में ही रहे और उसे सहजता से निकालें।
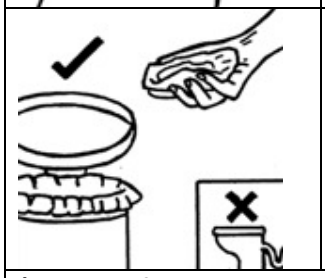	चरण 10: कंडोम को एक कागज़ में लपेटकर कूड़ेदान में डालें। टॉयलेट में न डालें।

(Adapted from www.condomdepo.com)

निम्नलिखित द्वारा सत्र का समापन करें :

- प्रतिभागियों को ध्यान दिलाएं कि उन्हें समुदाय के सदस्यों को क्षेत्रीय स्तर पर यह जानकारी प्रदान करनी है ।
- प्रतिभागियों को बताएं कि कंडोम और कंडोम प्रदर्शन से संबंधित संदेश और सूचना, जिसका संचार उन्हें क्षेत्रीय स्तर पर करना है , उस पर संचार के अगले सत्र में विस्तार से चर्चा होगी ।

सत्र 1 ब : कंडोम की माँग एवं आपूर्ति

उद्देश्य : प्रतिभागियों को कंडोम की उपलब्धता का नक्शा बनाने में और योजना बनाने में मदद करना।

प्रतिभागियो को कंडोम की आपूर्ति की गणना करने में मदद करना (वितरित करने के लिए वांछित कंडोम की संख्या)

प्रतिभागियों को कंडोम की माँग एवं आपूर्ति की कमी/अन्तराल का विश्लेषण करने में मदद करना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी हॉटस्पॉट में कंडोम डिपो का मानचित्रण करने के लिए ''कंडोम तक पहुंच और इसकी उपलब्धता का मानचित्रण'' टूल का प्रयोग करना सीखेंगे।

प्रतिभागी कंडोम की आपूर्ति एवं आवश्यकता की गढ़ना कर पाएंगे और कंडोम कें अंतराल का विश्लेषण कर पाएंगे।

समयावधि : 1 घंटा, 30 मिनट

विधि : चर्चा, अभ्यास

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर, मार्कर पेन

टी.आई. स्तर पर पियर आउटरीच कार्यकर्ता की मदद से कंडोम की ज़रूरत (मांग) का आंकलन व कंडोम की आपूर्ति के अंतर का विश्लेषण करता है अतः प्रशिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ओ.आर.डब्लू वहां उपस्थित हो। ओ.आर.डब्लू. से इस सत्र के लिए एच.आर.जी. के कंडोम आपूर्ति एवं मांग का क्षेत्रीय डेटा लाने को कहा जाना चाहिए।

प्रक्रिया :

- सत्र का आरम्भ करते हुए प्रशिक्षक इस बात पर ज़ोर दे कि पियर का एक प्रमुख कार्य है – कंडोम का वितरण।
- सत्र के आरंभ में ही प्रशिक्षक ''कंडोम तक पहुंच और इसकी उपलब्धता का मानचित्रण'' टूल के बारे में बताएं

कंडोम उपलब्धता और पहुँच का मानचित्रण

उद्देश्य

- कंडोम की उपलब्धता के स्थानों का मानचित्रण और यौन कर्मियों तक इसकी पहुंच का विश्लेषण.

दिशा निर्देश :

- शहर का एक नक्शा बनाएं या पहले से मौजूद मानचित्र का उपयोग करें ।
- जहां यौन कर्मी अपने ग्राहकों को पटाती हैं और जहां यौन कार्य होता है उन सभी स्थानों को दो अलग अलग रंग की बिंदियों से दर्शाएं।
- चर्चा करें कि प्रत्येक हॉटस्पॉट कब सक्रिय होता है (लुभाना, पटाना और यौन कार्य) और दिन/रात के किस समय पर होता है। फिर अलग–अलग रंग की बिन्दियों से उन हॉटस्पॉट पर बिन्दियाँ लगवाएं जो केवल दिन में या रात में या दोनो समय सक्रिय होते हैं।
- फिर नक्शे में कंडोम डिपो को भी चिन्हित करें कि वह दिन में, रात में या फिर 24 घंटे खुले रहते हैं।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

- क्या यौन कार्य के और ग्राहकों को लुभाने/पटाने वाले सभी हॉटस्पॉटों पर कंडोम डिपो बने हैं, अगर नही ंतो इसका क्या कारण है? क्या वह हॉटस्पॉट जैसे घर पर आधारित हॉटस्पॉट, जिनके पास डिपो नहीं है प्रत्यक्ष रूप से (पियर द्वारा) कंडोम लेना पसंद करते हैं?
- क्या वह सभी हॉटस्पॉट जो दिन में, रात में या 24 घंटे सक्रिय रहते हैं वहां गतिविधि के समय डिपो खुले रहते हैं? ?

- क्या कंडोम डिपो तक समुदाय/एच.आर.जी. की पहुँच है?

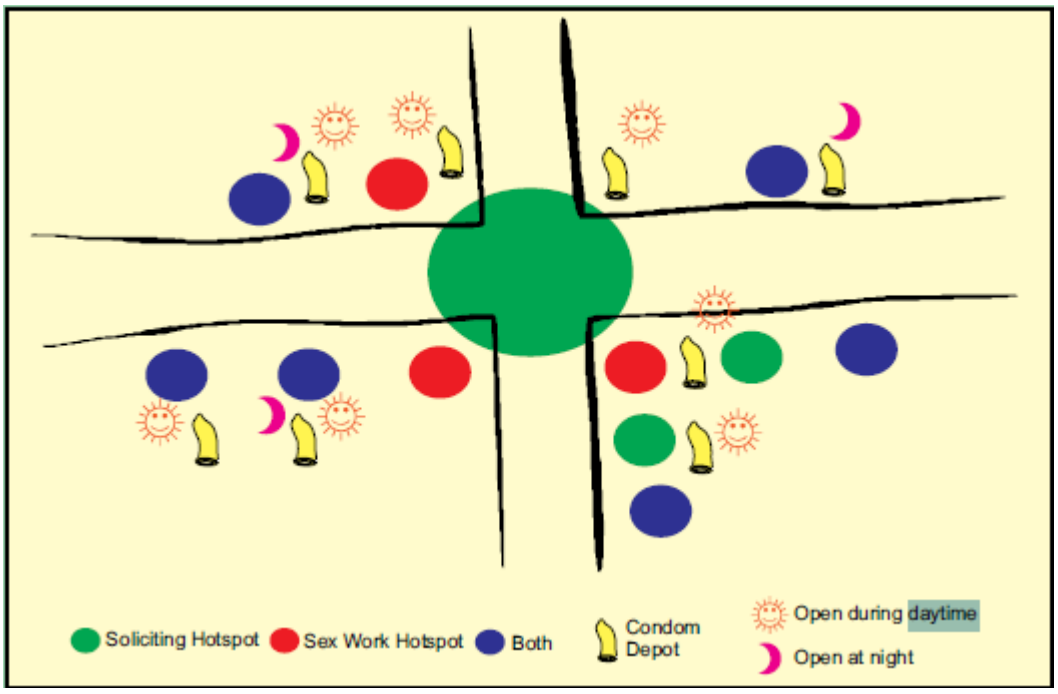

- टूल का अभ्यास करने के बाद प्रशिक्षक जोर दे कि पियर को हर सामुदायिक सदस्य की कंडोम की मांग की संख्या निकालना आना चाहिए ताकि उसके अनुसार वह कंडोम वितरित कर सके।
- फिर प्रतिभागियों के साथ '' कंडोम की मांग के अनुमान'' पर चर्चा करें ।

कंडोम की मांग का अनुमान

- राष्ट्रीय स्तर पर सी.एम.आई.एस की जानकारी के आधार पर और टी.आई द्वारापिछले 2 साल में कंडोम की खपत के आधार पर नाको एफ.एस.डब्लू/ एम.एस.एम / आई.डी.यू – एच.आर.जी समुदाय के लिए कंडोम की मांग का अनुमान लगाता है ।
- लेकिन टी.आई / गैर सरकारी संगठन के स्तर पर सबसे अहम बात होती है एच.आर.जी. के प्रतिदिन यौन कार्य/साथियों की संख्या के आधार पर उनका वर्गीकरण करना।
    - ▪ उच्च भार (प्रति सप्ताह 10 या 10 से अधिक यौन क्रियाएं)
    - ▪ मध्यम भार (प्रति सप्ताह 5–9 यौन क्रियाएं)
    - ▪ कम भार (प्रति सप्ताह 4 या 4 से कम यौन क्रियाएं)
- जोखिम श्रेणी का पता लगाना भी महत्वपूर्ण है अर्थात् यौन कार्यकर्ताओं का आयु समूह, यौन कार्य का प्रकार और यौन कार्य का स्थान।
- एचआरजी मास्टर रजिस्टर में प्रति सप्ताह औसत यौन कार्य के आंकड़े एकत्र किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त पियर अपनी साइट पर ग्राहकों की संख्या का अलग विश्लेषण भी कर सकता है।
- विभिन्न उपवर्गो के लिए कंडोम मांग साधारण फार्मूले पर आधारित होती है :–

$$D = (S \times I \times N) - C$$

D = कंडोम की आवश्यकता

S = क्षेत्र में सक्रिय एफ.एस.डब्लू की संख्या (भार यानी, उच्च, मध्यम, कम है)

I = प्रतिदिन यौन कार्यों की संख्या

N = एक महीने में यौन कार्यकर्ता कितने दिन सक्रिय होती है।

C = ग्राहकों सहित अन्य स्रोतों से प्राप्त कंडोम की संख्या

- उपरोक्त फार्मूले को किसी एक यौन कार्यकर्ता के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए **S** का मान 1 रखना होगा।

- इसी के आधार पर, प्रशिक्षक पियर से समुदाय के सदस्यों के लिए कंडोम आवश्यकता की गणना करने के लिए बोलें जिनके लिए वह काम करते हैं । जब यह अभ्यास चल रहा हो तो ओ.आर.डब्लू को पियर की सहायता करने लिए प्रोत्साहित करें।
- यह अभ्यास पूरे समूह के लिए किया जा सकता है , कुछ पियर से सबके सामने इस फार्मूले पर काम करने को कहें या यह व्यक्तिगत पियर के द्वारा किया जा सकता है
- इसके बाद प्रशिक्षक '' कंडोम अन्तराल विश्लेषण '' पर चर्चा करें ।

कंडोम अन्तराल विश्लेषण

- टी.आई / गैर सरकारी संगठन के स्तर पर सूक्ष्म नियोजन (micro planning) के लिए कंडोम अंतराल विश्लेषण महत्वपूर्ण है ताकि कंडोम अंतराल का विश्लेषण किया जा सके और इस अंतराल (मांग और आपूर्ति के बीच अंतर) को कम किया जा सके। निम्नलिखित प्रमुख बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिएः
    - विभिन्न यौन कार्य स्थानों के आधार पर प्रत्येक एचआरजी द्वारा कंडोम की वास्तविक आवश्यकता, वितरित किए गए कंडोम की संख्या अलग हो सकती है ।
    - आउटरीच संपर्क के तहत टी.आई. के स्टाफ द्वारा कंडोम वितरण को ध्यान में रखा जाए।
    - एचआरजी तथा उसके ग्राहकों द्वारा अन्य स्रोतों से लिए गए कंडोम – कंडोम अन्तराल विश्लेषण के अवसर हो सकते हैं जिससे कंडोम कार्यक्रम को मज़बूत बनाया जाए।
    - टी.आई. द्वारा अपनाई गई कंडोम मूल्य, ब्रांड, गुणवत्ता, उपयुक्तता, वितरण के माध्यम व स्रोत की रणनीति, कंडोम की प्रोग्रमिंग के लिए टी.आई. द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे आई.ई.सी. संदेश, स्टाफ का प्रदर्शन करने का कौशल व क्लाइन्ट के साथ एच.आर.जी. का मोलभाव करने के कौशल की स्वीकार्यता महत्वपूर्ण है।
- कंडोम अंतराल विश्लेषण के लिए अपनाई जा रही प्रक्रिया – पियर (ओ.आर.डब्लू. के सहयोग से) प्रत्येक साइट पर मांग की सूचना निम्नलिखित प्रारूप का उपयोग करते हुए एकत्रित करती है।

पियर के लिए डेटा एकत्र करने का टूल
(बेसलाइन के लिए 4 माह में एक बार प्रयोग हेतु)

एचआरजी का प्रकार*				साइट का नाम			
आई. डी / नाम	उप–प्रकार **	ग्राहकों की संख्या सप्ताह में – याद करके बताएं	पिछले सप्ताह इस्तेमाल किए गए कंडोम की संख्या	टी.आई परियोजना से प्राप्त फ्री कंडोम की संख्या	टी.आई परियोजना के अलावा अन्य स्रोतों से प्राप्त फ्री कंडोम की संख्या	सामाजिक विपणन के माध्यम से खरीदे गए कंडोम की संख्या (क्लाइन्ट या स्वयं एच.आर. जी. द्वारा)	परियोजना द्वारा कंडोम की आवश्यक्ता / गैप को पूरा करना – [C=(E+F+G)]
A	B	C	D	E	F	G	H

* प्रकार – एफ.एस.डब्लू., एम.एस.एम. या आई.डी.यू.

**उप प्रकार – सड़क, वेश्यालय, घर एफ.एस.डब्लू के लिए एवं कोती , पंथी व टी.जी एम.एस.एम. के लिए .

निम्नलिखित प्रारूप का उपयोग करते हुए आंकड़े संकलित किए जाते हैं

कंडोम की माँग एवं आपूर्ति का आंकलन
(पियर के सहयोग से ओ.आर.डब्लू. द्वारा उपयोग)

	माँग				
	एफएसडब्लू	**सड़क**	**वैश्यालय**	**घर**	**कुल**
	एफएसडब्लू की संख्या				
	प्रति सप्ताह ग्राहकों (यौन क्रिया) की औसत संख्या – कॉलम डी				
	प्रति माह ग्राहकों/यौन क्रिया की औसत संख्या (प्रति सप्ताह की संख्या को 4 से गुणा कर दें) पिछले सप्ताह के आधार पर				
	प्रति माह कंडोम की आवश्यक्ता				
	एमएसएम	**कोती**	**पंथी**	**टीजी**	**कुल**
	एमएसएम की संख्या				
	प्रति सप्ताह ग्राहकों (यौन क्रिया) की औसत संख्या – कॉलम डी				
	प्रति माह ग्राहकों/यौन क्रिया की औसत संख्या (प्रति सप्ताह की संख्या को 4 से गुणा कर दें) पिछले सप्ताह के आधार पर				
	प्रति माह कंडोम की आवश्यक्ता				
	आईडीयू				
	आईडीयू की संख्या				
	प्रति सप्ताह ग्राहकों (यौन क्रिया) की औसत संख्या – कॉलम डी				
	प्रति माह ग्राहकों/यौन क्रिया की औसत संख्या (प्रति सप्ताह की संख्या को 4 से गुणा कर दें) पिछले सप्ताह के आधार				

	पर				
	प्रति माह कंडोम की आवश्यक्ता				
	आपूर्ति				
	एफएसडब्लू	**सड़क**	**वैश्यालय**	**घर**	**कुल**
	मुफ्त वितरण – कॉलम एफ				
	सामाजिक विपणन द्वारा– कॉलम जी				
	अन्य स्रोतों से – कॉलम एच				
	एमएसएम	**कोती**	**पंथी**	**टीजी**	**कुल**
	मुफ्त वितरण – कॉलम एफ				
	सामाजिक विपणन द्वारा– कॉलम जी				
	अन्य स्रोतों से – कॉलम एच				
	आईडी यू				
	मुफ्त वितरण – कॉलम एफ				
	सामाजिक विपणन द्वारा– कॉलम जी				
	अन्य स्रोतों से – कॉलम एच				

- पिछले अंतराल को जोड़ते हुए कंडोम की औसत मांग को हर उप समूह के लिए निकालना (आईयूडी को छोड़कर)
- हर चौथे माह में इसी तरह से कंडोम की मांग / आपूर्ति काः आंकलन किया जाता है।

- फिर से, प्रशिक्षक इस टूल का अभ्यास करने के लिए प्रतिभागियों (दोनों पियर और ओ.आर.डब्लू.) को प्रोत्साहित करें।

- अभ्यास के दौरान पियर और ओ.आर.डब्लू क्षेत्र स्तरीय डेटा का उपयोग करना चाहिए.

दिन 3 : जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों (vulnerability) को संबोधित करने के लिए संचार
अ) : पियर द्वारा बातचीत आधारित अन्तर्वैयक्तिक संचार (आई.पी.सी.)
ब) : पियर द्वारा आपसी बातचीत (वन टू वन)

सत्र 2 अ : पियर द्वारा बातचीत आधारित अन्तर्वैयक्तिक संचार (आई.पी.सी.)

उद्देश्य : प्रतिभागियों को बातचीत आधारित संचार की आवश्यकता समझने व प्रशिक्षण देने में मदद करना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी बातचीत आधारित संचार के टूल पर प्रशिक्षित हो जाएंगे।

समयावधि : 1 घंटा

विधि : चर्चा, समूह कार्य

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर

प्रक्रिया :

- संचार के महत्व के बारे में सभी प्रतिभागियों को याद दिलाएं विशेष रूप से '' सही संचार ''
- इसके बाद बातचीत पर आधारित संचार पर परिचर्चा करें।

बातचीत पर आधारित आईपीसी

अंतर्वैयक्तिक संचार वह है जिनमें आमने सामने बैठकर बातचीत तथा अहम विचार विमर्श होता है। यह केवल संदेश देने से भिन्न है। इससे जोखिम समूह को निम्नलिखित में सहायता मिलती है।

- एसटीआई / एचआईवी के जोखिम को कम करने में बाधाओं की पहचान करना
- इन बाधाओं का विश्लेषण करना
- उन्हें दूर करने के लिए योजना बनाना

आईपीसी का उपयोग कब कर सकते हैं ?

आईपीसी को टी.आई के सभी घटकों (components) के लिए उपयोग में लाया जा सकता है जैसे आउटरीच के बारे में बात करना, चिकित्सा सेवाएं, ड्रॉप इन सेन्टर, आई.सी.टी.सी रेफरल , पैरवी हेतु पहल करना और सी.बी.ओ का गठन आदि ।

आईपीसी के घटक

बातचीत पर आधारित संचार (आईपीसी) के कुछ आवश्यक घटक हैं :

- विषय वस्तु – यह एसटीआई या एचआईवी/एड्स पर हो सकती है ।

- विधि – इन प्रक्रियाओं से बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता है । इन तरीकों को नाको की ऑपरेशनल गाइडलाइन में विस्तार से बताया गया है और इस सत्र में प्रतिभागी इनमे से दो तरीकों के बारे में सीखेंगे ।

- प्रशिक्षण कौशल – पियर को सुनिश्चित करना है कि वह महत्वपूर्ण मुद्दों पर बातचीत और चर्चा को प्रोत्साहित करें न कि सिर्फ संदेश दे । इस प्रकार, आईपीसी बातचीत शुरू करने के लिए एक महत्वपूर्ण टूल है ।

- मूल्य और दृष्टिकोण – एच.आर.जी के साथ काम करते समय पियर का रवैया अनिर्णायक (non judgemental) एवं पक्षपात रहित होना चाहिए ।

- संक्षिप्त परिचय के बाद, प्रतिभागियों को बताएं कि समूहकार्य के अभ्यास के लिए वे 2 आईपीसी टूल देखेंगे जिनका आउटरीच के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है – '' ऐसा क्यों है '' और '' शरीर मानचित्रण '' ।

- पहले टूल '' शरीर मानचित्रण '' के उद्देश्य और प्रक्रिया के बारे में प्रतिभागियों को बताएं।

आईपीसी टूल 1 : शरीर मानचित्रण

उद्देश्य

- एच.आर.जी को शरीर से जुड़े एसटीआई और एचआईवी के जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों (vulnerability) का पता लगाने में सक्षम बनाना।
- एच.आर.जी के साथ ''बिना भेदन वाली'' (non-penetrative sex) सुरक्षित यौन क्रियाओं पर चर्चा करना

आवश्यक सामग्री : चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर पेन

निर्देश :

- एक वालेन्टियर को जमीन पर बिछे चार्ट पेपर पर लेटाएं और दूसरे को उसके शरीर की बाहरी रेखा खींचने को कहें
- शरीर की इस बाहरी रेखा को नग्न शरीर माने और समुदाय के सदस्यों से विभिन्न अंगों का विवरण भरने के लिए कहें ।

फिर समुदाय के सदस्यों को अलग अलग रंग के मार्कर पेन से निम्न अंगों को चिन्हित करने को कहें :

- शरीर में वह कौन से अंग हैं जिन्हे छूने से अच्छा महसूस होता हैं?
- शरीर के कौन से अंगों में एचआईवी जोखिम का खतरा है ? (वायरस शरीर में कैसे प्रवेश कर सकता हैं? वायरस का शरीर में प्रवेश करना किन कारणों से आसान हो जाता है ? – यदि कोई भ्रान्ति हो तो स्पष्ट करें)
- प्रत्येक कारण में जोखिम का स्तर क्या है (उच्च, निम्न या कोई जोखिम नहीं) ?
- इस के बाद, समुदाय के सदस्यों को सुरक्षित सेक्स के लिए उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा करने की जरूरत है , विशेष रूप से बिना भेदन वाला सेक्स ।

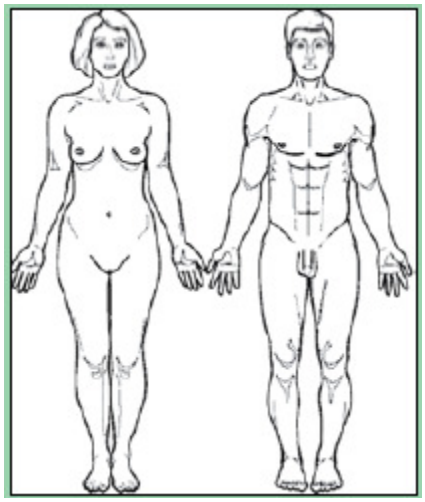

- अब प्रतिभागियों को छोटे समूहों में विभाजित करे और उन्हें '' शरीर मानचित्रण '' टूल के अभ्यास के लिए समय दे ।
- अभ्यास पूरा करने के बाद प्रतिभागियों को टूल के बारे में निम्नलिखित पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें :
    - इस टूल के उपयोग से क्या लाभ हैं?
    - इस टूल का प्रयोग करने में क्या बाधाएं हैं? – जैसे बहुत ज्यादा समय लगेगा , सड़क आघारित यौन कार्यकर्ताओं हेतु इसका प्रयोग सड़क पर नही किया जा सकता है आदि।
- इसके बाद दूसरे टूल '' ऐसा क्यों है '' के उद्देश्य आरै प्रक्रिया के बारे में प्रतिभागियों को बताएं।

आईपीसी टूल 2 : ऐसा क्यों है?

उद्देश्य

एच.आर.जी को इस बात का विश्लेषण करने में मदद करना कि जोखिम व्यवहार क्यों होते हैं और उन्हें कम कैसे किया जा सकता है ।

आवश्यक सामग्री : चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर पेन

निर्देश :

- एचआईवी के लिए जोखिम वाले व्यवहार की पहचान करें (जैसे असुरक्षित यौन संबंध, साझा सुई का इस्तेमाल आदि) और फ्लिप चार्ट के बीच में एक गोला बनाकर उसमें किसी एक जोखिम वाले व्यवहार का चिन्ह बनाएं (समूह की पसंद/प्राथमिकता के आधार पर) ।

- पूछें '' ऐसा क्यों है '' और खीचे गए घेरे के आसपास गुब्बारे के आकारों में जोखिम वाले व्यवहार का चित्र बनाने या लिखने को कहें।
- यह प्रक्रिया तब तक जारी रखें जब तक वह और कारण न सोच पाएं ।
- किसी एक कारण को लेकर सवाल पूछें ऐसा क्यो है? समुदाय के सदस्यों को उन मुद्दों की पहचान करने दे जो उनके जोखिम को और बढ़ाते हैं।
- जोखिमपूर्ण व्यवहार के सभी कारणों के लिए इस प्रक्रिया को दोहराएं।

निम्नलिखित पर चर्चा करें –

- जोखिम वाले व्यवहार के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण (जोखिम को बढ़ाने वाले कारक) कोन से हैं?
- किन तरीकों की सहायता से एचआरजी जोखिम वाले व्यवहार को कम कर सकते हैं?
- एक जोखिम भरे व्यवहार के रूप में कंडोम का इस्तेमाल न करने का उदाहरण नीचे दिया गया है । लेकिन इसी तरह से भीतरी गाले में अन्य मुद्दे भी हो सकते है जैसे सुई / सिरिंज का साझा उपयोग या असुरक्षित गुदा मैथुन आदि ।

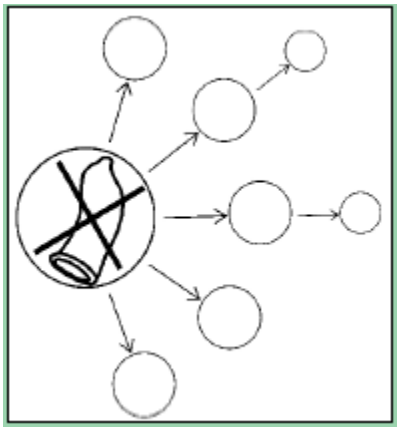

- अब प्रतिभागियों को छोटे समूहों में विभाजित करे और उन्हें '' ऐसा क्यों है '' टूल के अभ्यास के लिए समय दे ।
- अभ्यास पूरा करने के बाद प्रतिभागियों को टूल के बारे में निम्नलिखित पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें :
    - इस टूल के उपयोग से क्या लाभ हैं?
    - इस टूल का प्रयोग करने में क्या बाधाएं हैं? – जैसे बहुत ज्यादा समय लगेगा , सड़क आघारित यौन कार्यकर्ताओं हेतु इसका प्रयोग सड़क पर नही किया जा सकता है आदि।

2 ब : पियर द्वारा आपसी बातचीत (वन टू वन)

उद्देश्य : प्रतिभागियों से उन विषयों पर चर्चा करना जिसपर उन्हें समुदाय के सदस्यों को जानकारी देनी है ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी उन विषयों को विस्तृत रूप से समझ पाएंगे जिनकी जानकारी उन्हें सामुदायिक सदस्यों को देनी है।

समयावधि : 1 घंटा 30 मिनट

विधि : चर्चा, समूह कार्य, प्रस्तुतिकरण, समझाना

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर, मार्कर पेन, बातचीत करने के मुद्दों पर सहायक सामग्री (3 फ्लिप बुक)

प्रक्रिया :

- जोखिम और जोखिम को बढाने वाले कारकों के सत्र की बात करते हुए प्रतिभागियों को बताएं कि संक्रमण की संभावना को कम करने का एक तरीका है उन्हे जानकारी देना। एफएसडब्लू / एमएसएम / आई.डी.यू., के परिपेक्ष्य में उन्हे स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी देने से एस.टी.आई. तथा एच.आई.वी./एड्स की संभावना को कम करने में मदद मिलती है। सामुदायिक सदस्यों तक यह जानकारी पियर एजुकेटर के माध्यम से पहुंचाई जा सकती है।
- क्षेत्र के अन्य एफएसडब्लू / एमएसएम / आई.डी.यू. से पियर एजुकेटरों को किन किन विषयों पर बातचीत करना चाहिए इस पर चर्चा आरम्भ करें और इस विषयों को बोर्ड पर लिखते जाएं बाद में इस सूची की पूर्णता के लिए समीक्षा करें।
- फिर प्रतिभागियों को बातचीत करने के मुद्दों पर सहायक सामग्री का परिचय दें।
- प्रतिभागियों को 3–4 छोटे समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक प्रतिभागी को बातचीत करने के मुद्दों पर सहायक सामग्री उपलब्ध कराएं (प्रशिक्षण पैकेज के साथ उपलब्ध).
- प्रत्येक समूह साथ साथ बातचीत करने के मुद्दों को याद कर लेगा और अपने समूह में इसका अभ्यास करेगा।
- अपने–अपने समूह में काम करने के बाद, उनमें से किसी एक प्रतिभागी को आगे आकर बताने को कहें कि वे समुदाय के सदस्य के साथ किसी विशेष मुद्दे पर किस प्रकार बात करेंगे (प्रतिभागी से सहायक सामग्री द्वारा सीखी गई जानकारी का उपयोग करने को कहें।).

एस.टी.आई

अ. रोकथाम :

1. अधिकांश एसटीआई असुरक्षित यौन संबंध के कारण होते हैं
2. एसटीआई से बचा जा सकता है यदि ग्राहकों तथा अपने नियमित साथी के साथ हर बार यौन संबंध स्थापित करते समय कंडोम का इस्तेमाल किया जाए।

ब. चिन्ह और लक्षण :

आमतौर पर यह लक्षण पाए जाते हैं :

1. योनि से अलग तरह का सफेद स्राव (स्राव पीला व बदबूदार भी हो सकता है)
2. पेट के निचले हिस्से या पेढू में दर्द
3. योनिं गुदा अथवा मुंह में छाले

कुछ अन्य लक्षण भी देखे जा सकते है :

1. कांच में सूजन
2. पेशाब के दौरान दर्द या जलन
3. जननांगों में या उसके आसपास छोटी गिल्टियां
4. जननांगों में या उसके आसपास खुजली
5. संभोग के दौरान दर्द

स. उपचार :

1. अधिकांश एसटीआई इलाज द्वारा ठीक हो सकते हैं
2. चिकित्सक के पास जाएँ और अपनी जाँच कराएँ
3. चिकित्सक के सुझाव के अनुसार टेस्ट कराएं
4. जब तक संक्रमण पूरी तरह से ठीक न हो जाए इलाज जारी रखें।
5. यदि संभव हो, तो संक्रमण पूरी तरह से ठीक होने तक यौन संबंधों से बचें
6. हर यौन क्रिया में कंडोम का प्रयोग करें

द. साथी के उपचार का महत्व :

यदि किसी भी एक साथी को एसटीआई है, तो दोनों को डॉक्टर के सुझाव के अनुसार पूर्ण इलाज कराना चाहिए ताकि दोबारा संक्रमण न हो।

य. नियमित स्वास्थ्य जांच

महिलाओं में प्रायः एसटीआई के लक्षण दिखाई नही देते है इसलिए उन्हे मासिक चेक–अप के लिए डाक्टर के पास जाना चाहिए।

र. परियोजना क्लीनिक में डाक्टर तथा नर्स द्वारा दी गई सेवाओं के अलावा वह आपको कम कीमत में विशेषज्ञ द्वारा चेकअप/उपचार/सेवाओं के लिए विभिन्न संस्थाओं के पास भेज सकते हैं जैसे यदि कोई सदस्य एच.आई.वी. की जांच कराना चाहता/चाहती है तो परियोजना डाक्टर उसे बता सकते हैं कि जांच कैसे, कहां होती है और इसमें कितना खर्च आता है इत्यादि। इसी प्रकार से टी.आई. परियोजना सामुदायिक सदस्यों को सरकार द्वारा अन्य निशुल्क चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध कराने में सहायता करती है जैसे टी.बी. का उपचार, बच्चों का टीकाकरण इत्यादि। ।

एचआईवी / एड्स

अ. कैसे फैलता है

एचआईवी फैलने के निम्नलिखित कारण है :

रक्त – संक्रमित व्यक्ति का रक्त एक असंक्रमित व्यक्ति को चढ़ाने से या संक्रमित सुई के साझा प्रयोग से।

असुरक्षित यौन संबंध द्वारा – जहां शरीर के तरल पदार्थ का आदान–प्रदान होता हैं – सभी यौन कार्य जोखिमपूर्ण नही होते हैं।

संक्रमित मां से शिशु को – प्रसव के समय यदि कुछ घाव या चोट लग जाए– नाल के माध्यम से या मां के दूध से। अन्य माध्यम से संक्रमण का खतरा मां के दूध की अपेक्षा कहीं अधिक होता है।

ब. यह कैसे नही फैलता है

यदि सुई एक बार उपयोग करके नष्ट कर दी जाए। (प्रत्येक व्यक्ति के लिए हर बार नई डिस्पोज़बल सुई का प्रयोग), या इस्तेमाल करने से पहले सुईं को 20 मिनट तक उबालें।

एचआईवी संक्रमित महिला के प्रसव से पहले और प्रसव के समय यदि उचित सावधानियां बर्ती जाएं।

संक्रमित व्यक्ति के साथ रहने, भोजन करने, तैरने, हाथ मिलाने, उसके छींकने, उसके कपड़े पहनने और बर्तन में खाना खाने इत्यादि से संक्रमण नहीं होता।

स. रोकथाम :

ऊपर बताए गए तरीकों से बचकर हम स्वयं को संक्रमित होने से बचा सकते हैं। जैसे डिस्पोजेबल सुईं के उपयोग से, प्रसव के समय सावधानी बरतने से ताकि बच्चे को संक्रमित होने से बचाया जा सके। इसके अलावा एच.आई.वी. के संक्रमण से बचाव का सबसे अच्छा तरीका है 100 प्रतिशत कंडोम का सही एवं लगातार उपयोग। यौनकार्यकर्ता/एम.एस.एम. के कार्य की प्रकृति के कारण उनमें संक्रमण का खतरा बना रहता है।

परियोजना द्वारा एच.आई.वी. संक्रमित सामुदायिक सदस्यों को स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा देखभाल और अन्य सेवाएं उपलब्ध कराने में सहायता दी जा सकती है।

द. टेस्ट :

जांच दो प्रकार से होती है

1. एक टेस्ट में एंटीबॉडी की जांच होती है – हमारे शरीर में वायरस के प्रवेश की प्रतिक्रिया स्वरूप एंटीबॉडी बनती है जिनके बनाने में 12 सप्ताह का समय लगता हैं। इन जांचों से यह

पता लगाया जाता है कि खून में एंटीबॉडी हैं या नहीं। यदि एंटीबॉडी है तो इसका अर्थ है कि शरीर में वायरस है।

2. दूसरी प्रकार की जांच में वास्तव में वायरस का पता लगाते हैं।

य. जटिलताएं

1. कई बार एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति के शरीर में श्वेत रक्त कणिकाएं (WBC) जो कि हमारे शरीर की संरक्षक कोशिकाएं (protective cells) है, की रोगप्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जिसके कारण शरीर को कई संक्रमण आकर घेर लेते है जिन्हें अवसरवादी संक्रमण कहते हैं।

2. एचआईवी संक्रमण के कारण जब शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और कई प्रकार के संक्रमण शरीर को लग जाते है, तो उस अवस्था को एड्स कहते हैं।. आम तौर पर यह माना जाता है कि संक्रमण होने के 8–10 वर्षों के बाद एड्स की अवस्था आती है परन्तु यह अवधि अलग अलग लोगों में अलग अलग होती है।

र. एआरटी

1. एआरटी एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी है
2. यह वह उपचार है जो एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति को एच.आई.वी. के संक्रमण को शरीर में फैलने से रोकने के लिए दिया जाता है।
3. इन दवाओं से एचआईवी से निजात नहीं मिलती बल्कि शरीर में वायरस के बढ़ने (replication) को कम किया जाता है।
4. इन दवाईयों को डाक्टर की सलाह पर रोगी द्वारा नियमित रूप से लिया जाना चाहिए।
5. एक बार दवा शुरू होने के बाद एक व्यक्ति को जीवन भर दवा लेनी होती है।
6. आम तौर पर यह दवाईयाँ बहुत महंगी है, लेकिन सरकारी अस्पतालों में यह मुफ्त दी जाती है

कंडोम के उपयोग और प्रदर्शन

कृपया कंडोम के उपयोग पर ''प्रशिक्षक के लिए टिप्पणी'' देखें ।

दिवस 3 का मूल्याँकन

तिथी : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1अ	पुरूष एवं महिला कंडोम				
1ब	कंडोम की मांग एवं आपूर्ति (''कंडोम तक पहुंच और इसकी उपलब्धता का मानचित्रण'', कंडोम अंतराल विश्लेषण)				
2अ	पियर द्वारा वार्तालाप आधारित आपसी बात चीत **(IPC)**				
2ब	पियर द्वाराआपसी बातचीत **(1 to 1)**				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि , सामग्री , प्रणाली ओर विजुअल टूलों पर टिप्पड़ियाँ करें

दिवस 4

दिवस 4

पहले दिन का पुनरावलोकन (15 मिनट) 10.00–10.15

सत्र 1: मॉनिटरिंग व डॉक्यूमेन्टेशन (2 घंटे, 30 मिनट)

टूल 1: अवसर अन्तराल विश्लेषण 10.15–11.00

– टूल का प्रस्तुतिकरण
– समूह कार्य– टूल का अभ्यास
– समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.00–11.15

सत्र 1 क्रमशः

टूल 2: प्रिफेरेन्स रैंकिंग (प्राथमिकता के अनुसार श्रेणी में रखना) 11.15–11.45

– टूल का प्रस्तुतिकरण
– समूह कार्य– टूल का अभ्यास
– समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

टूल 3: पियर मैप 11.45–12.15

– टूल का प्रस्तुतिकरण
– समूह कार्य– टूल का अभ्यास
– समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

टूल 4: पियर की साप्ताहिक योजना एवं गतिविधि शीट 12.15–01.00

– टूल का प्रस्तुतिकरण
– समूह कार्य– टूल का अभ्यास
– समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

भोजनावकाश (45 मिनट) 01.00–01.45

सत्र 2: संकट प्रबंधन (45 मिनट) 01.45–02.30

– चर्चा – संकट के प्रकार
– समूह कार्य – केस स्टडी
– प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा
– चर्चा– संकट प्रबंधन पद्धति

सत्र 3: एच.आई.वी के अलावा अन्य मुद्दे (45 मिनट) 02.30–03.15

(सामान्य स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूह, सामाजिक अधिकार)

– समूह कार्य– चर्चा के बिन्दुओं का अभ्यास करना (फ्लिप बुक के प्रयोग द्वारा)
– चर्चा के बिन्दुओं का प्रस्तुतिकरण
– चर्चा – सामाजिक अधिकार

दिवस 4 का मूल्यांकन (15 मिनट) 03.15–03.30

प्रशिक्षण का मूल्यांकन (30 मिनट) 03.30–04.00

सत्र 1: मॉनिटरिंग एवं डॉक्यूमेन्टेशन
(अवसर अन्तराल विश्लेषण, प्रैफरेन्स रैंकिंग, पियर मैप, पियर की साप्ताहिक योजना एवं गतिविधि शीट)

सत्र 1 : मॉनिटरिंग एवं डॉक्यूमेन्टेशन

उद्देश्यः प्रतिभागियों को उनके काम के डॉक्यूमेन्टेशन के महत्व को समझने में मदद करना
डॉक्यूमेन्टेशन के लिए प्रयोग किए जा रहे फारमेट पर प्रशिक्षित करना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी डाक्यूमेन्टेशन के लिए फारमेट का प्रयोग सीख पाएंगे

समयावधिः 2 घंटे, 30 मिनट

विधिः चर्चा , मैपिंग , प्रस्तुतिकरण , समझाकर ।

सामग्री / तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन अलग– अलग रंगों और आकार की बिंदियाँ।

प्रतिभागियों के लिए फारमेट की प्रतियाँ

ओ.आर. डब्लू को अपने क्षेत्र का एक भरा हुआ अवसर अन्तराल विश्लेषण, पियर की दैनिक एवं ट्रैकिंग टूल के फारमेट लाने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रकिया

मॉनिटरिंग एवं मॉनिटरिग के क्षेत्र के बारे में जानकारी देते हुए सत्र का प्रारम्भ करें।

मॉनिटरिंग की आवश्यकता एवं लाभ

- दिन–प्रतिदिन के कार्यों का स्पष्ट विवरण मिलता है।
- लक्ष्य के विपरीत कितनी उपलबधि हुई है, यह समझने में मदद मिलती है।
- यह समझने में मदद मिलती है कि सेवाओं में सुधार किस प्रकार किया जा सकता हैं।
- दिन–प्रतिदिन के कार्यों में आने वाली समस्याओं को पहचानने में मदद मिलती है।
- समस्याओं के समाधान हेतु रणनीति बनाने में मदद मिलती है ।
- फालो–अप गतिविधियों की योजना बनाने में मदद मिलती है।

मॉनिटरिंग के क्षेत्र

गुणात्मक (मुख्यतः पियर के कार्य से संबंधित) (Qualitative)

- अन्य समुदाय के सदस्यों के साथ संबंध एवं मित्रता।
- एस.टी.आई. और एच.आई.वी./एड्स के विभिन्न मुद्दों से संबंधित जानकारी देना।
- समुदाय के सदस्यों को नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए प्रेरित करना।
- समुदाय के सदस्यों को कंडोम के प्रयोग हेतु प्रेरित करना।
- कंडोम का वितरण एवं सामाजिक विपणन।
- समुदाय के सदस्यों के साथ चर्चा (संचार) करना।
- हितग्राहियों (स्टेकहोल्डर) के साथ संचार ।
- समुदाय के सदस्यों को सेवाओं की पहुँच में सहयोग जैसे आई.सी.टी.सी.।
- एच.आई.वी. से संक्रमित समुदाय के सदस्यों का सहयोग।
- समुदाय के सदस्यो को उत्पीड़न से संबंधित मुद्दो को संबोधित करने के लिए सहयोग देना।

गणनात्मक (Quantitative)

- एस.टी.आई. रोगियों की संख्या ।
- रोगियों की संख्या जिन्होने उपचार पूर्ण कर लिया है।
- रोगियों की संख्या जिनका फॉलो–अप किया गया ।
- लोगों की संख्या जिन्हें जानकारी/संदेश दिए गए।
- वितरित किए गए कंडोम की संख्या।
- लोगों की संख्या जिन्हें आई.सी.टी.सी. रेफर किया गया।
- समुदाय सदस्यों की संख्या जो अपना समूह संगठित करने में उत्सुकता दिखा रहें हैं।
- समुदाय सदस्यों की संख्या जो अपनी बैंकिंग प्रणाली गठित करने के लिए उत्सुक हैं।
- हिंसा की घटनाओं की संख्या।
- गिरफ्तार किए गए समुदाय के सदस्यों की संख्या।
- समुदाय के सदस्यों द्वारा घटना को संबोधित करने की संख्या।

- प्रतिभागियों से कहें कि इस सत्र में दो भाग होंगे
  - पहला भाग परियोजना की मॉनिटरिंग हेतु विभिन्न सहभागी (participatory) टूल का प्रयोग करने पर केन्द्रित होगा।
  - दूसरा भाग पियर द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मॉनिटरिंग फार्मेट पर केन्द्रित होगा ।
- प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बाटें ताकि वह समूह में प्रत्येक टूल का अभ्यास कर सकें।

- अवसर अन्तराल विश्लेषण टूल से शुरू करें। टूल का उद्देश्य, आवृत्ति और टूल के प्रयोग में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया समझाएँ।

टूल 1: अवसर अन्तराल विश्लेषण

उद्देश्य

स्पॉट के अनुसार अवसरों में अन्तर का विश्लेषण।

निर्देश

- क्षेत्र में, विभिन्न आउटरीच प्रक्रियाएँ (संपर्क, पंजीकरण, एस.टी.आई. उपचार) होती हैं परन्तु फील्ड में इनके चलने के दौरान कुछ लोग छूट जाते हैं उसे ही अवसर अन्तराल कहा जाता है।
- ज़िला, टी.आई. एवं स्पॉट स्तर पर विश्लेषण करना
- प्रत्येक इन्डिकेटर के लिए अन्तर तथा अन्तर के कारणों की पहचान करें और इस अन्तर को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए जाएं यह भी नोट कर लें।
- यह अन्तर आन्तरिक अथवा बाह्य कारकों से हो सकता है ।
    - आन्तरिक कारकः जहां परियोजना का प्रत्यक्ष नियंत्रण होता है जैसे आउटरीच कार्यकर्ताओं तथा पियर का कार्य समय।
    - बाह्य कारकः जो परियोजना के नियंत्रण में नहीं होते जैसे दैनिक आधार पर यौन कार्यकर्ताओं की अधिक गतिशीलता।
- अन्य कारक हो सकते हैं – संकट झेल चुके सामुदायिक सदस्यों की संख्या, संकट के दौरान परियोजना से सहयोग पा चुके सामुदायिक सदस्यों की संख्या, अपना हक प्राप्त कर चुके सामुदायिक सदस्यों की संख्या तथा ऐसे सामुदायिक सदस्यों की संख्या जिन्हे एच.आई.वी. के अलावा अन्य सेवाएं भी उपलब्ध हुई हों।

गतिविधि	स्थिति	अवसर अन्तराल	कारण		हमें क्या करना चाहिए
			आन्तरिक	बाहरी	
अनुमानित					
संपर्क					
पंजीकरण					
नियमित संपर्क					
एस.टी.आई उपचार					
फालो–अप					
नियमित जाँच					
आईसीटीसी					

- समझाने के बाद समूह को उक्त टूलपूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित करें। प्रतिभागी फ्लिप चार्ट एवं मार्कर का प्रयोग कर सकते हैं।
- टूल को पूरा करने के बाद किसी भी एक समूह को बड़े समूह के सामने प्रस्तुतिकरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

- निम्नलिखित पर चर्चा करें
  - समूह ने कौन सी प्रक्रिया अपनाई?
  - अभ्यास का निष्कर्ष क्या है?
  - आउटरीच की योजना बनाने में यह अभ्यास किस प्रकार मदद करता है?
  - इस टूल को पूरा करने में कौन सी आम गल्तियां हुईं?
  - इन गल्तियों का क्या परिणाम होगा?
  - अब प्रेफरेन्स रैंकिंग टूल पर चर्चा करें

टूल 2: प्रेफरेन्स रैंकिंग

उद्देश्य

नियमित संपर्क एवं क्लीनिक उपस्थिति में अन्तराल के कारणों की पहचान करना और प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करना।

निर्देश

- उन कारणों की सूची बनाएँ जिनकी वजह से एच.आर.जी. शहर में चिकित्सीय सेवाओं तक नहीं पहुंच पाते हैं। इन कारणों को चित्रों की मदद से फ्लैश कार्ड पर दिखाएं।
- चिकित्सीय सुविधाओं के लिए क्लिनिक पर कम सदस्यों के जाने के कारणों में से प्राथमिकता के आधार पर सबसे प्रमुख पांच कारण चुनें।
- इसके बाद इन पांच कारणों को प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करें और सबसे महत्वपूर्ण कारण को प्राथमिकता दें।
- निम्नलिखित पर चर्चा करें:–
  - एच.आर.जी. के क्लानिक न आने के सबसे प्रमुख कारण कौन से हैं ?
  - इन कारणों को दूर करने की क्या योजनाएँ हैं?
  - इस अभ्यास से आउटरीच या सेवाएँ किस प्रकार प्रभावित होंगी?

Hotspot: ..... Town: ..... Date: .....

Reason why women are not coming to the clinic	Reason 1	Reason 2	Reason 3	Reason 4
REASON 1	✗	✗		
REASON 2	✗	✗		
REASON 3	✗	✗	✗	
REASON 4	✗	✗	✗	

- समझाने के बाद समूह को उक्त टूल पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित करें व प्रस्तुतिकरण करवाएं।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

– समूह ने कौन सी प्रक्रिया अपनाई?

– अभ्यास का निष्कर्ष क्या है?

– आउटरीच की योजना बनाने में यह अभ्यास किस प्रकार मदद करता है?

– इस टूल को पूरा करने में कौन सी आम गल्तियां हुईं?

– इन गल्तियों का क्या परिणाम होगा?

– इस सत्र के भाग 1 को समाप्त करने के लिए प्रतिभागियों को पियर मैप टूल के बारे में बताएं।

टूल 3 : पियर मैप

उद्देश्य

पियर द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के यौन कार्यकर्ताओं के साथ किए गए आउटरीच कार्य को समझना एवं उसका विश्लेषण करना।

निर्देश

- पियर को अपने क्षेत्र के हॉटस्पॉट का मैप बनाना जहाँ वे काम कर रहें/रही हैं और सामुदायिक सदस्यों से मिलते हैं ।
- इन हॉटस्पॉट में पियर उन एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. को दर्शाएगें जिनके लिए वे उत्तरदायी हैं। अलग अलग रंगों के इस्तेमाल से इस हॉटस्पॉटों में उच्च भार, मध्य भार और निम्न भार वाले सामुदायिक सदस्यों को दर्शाएं।
- इसके उपरान्त पियर निम्नलिखित को दर्शाएंगे।
  - पिछले महीने में वे उन एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. से कितनी बार मिले जिनके लिए वे उत्तरदायी हैं।
  - संपर्क किए गए प्रत्येक एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. को कितने कंडोम वितरित किए गए?
  - इन स्थानों पर कंडोम आउटलेट बॉक्स की संख्या
- मैप का विश्लेषण निम्नलिखित तरीके से करें:–
  - क्या पिछले माह में पियर ने सभी एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. से भेंट की जिनके लिए वे उत्तरकायी हैं? यदि नही तो क्यों?
  - यौन कार्य की अधिकता को देखते हुए क्या पियर द्वारा किए गए आउटरीच कार्य में कोई अन्तर था? क्या वे निम्न भार के एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. की तुलना में उच्च भार के एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. से बार–बार मिले?
  - क्या यौन कार्य के भार के आधार पर कंडोम वितरित किए गए? क्या पर्याप्त कंडोम वितरित किए गए जिससे कि प्रत्येक एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम./आई.डी.यू. के यौन कार्य में कंडोम की आवश्यकता (cover all the sexual act) पूरी हो सके? क्या कोई कमी रह गई?
  - कंडोम की इस कमी की किस प्रकार पूर्ति की जा रही है? क्या डिपों द्वारा या फिर क्लाइन्ट स्वयं कंडोम ला रहें हैं?

इस मैप के द्वारा क्लिनिक में उपस्थिति, संकट के समय सहयोग तथा अधिकारों तक पहुंच आदि को भी दर्शाया जा सकता है।

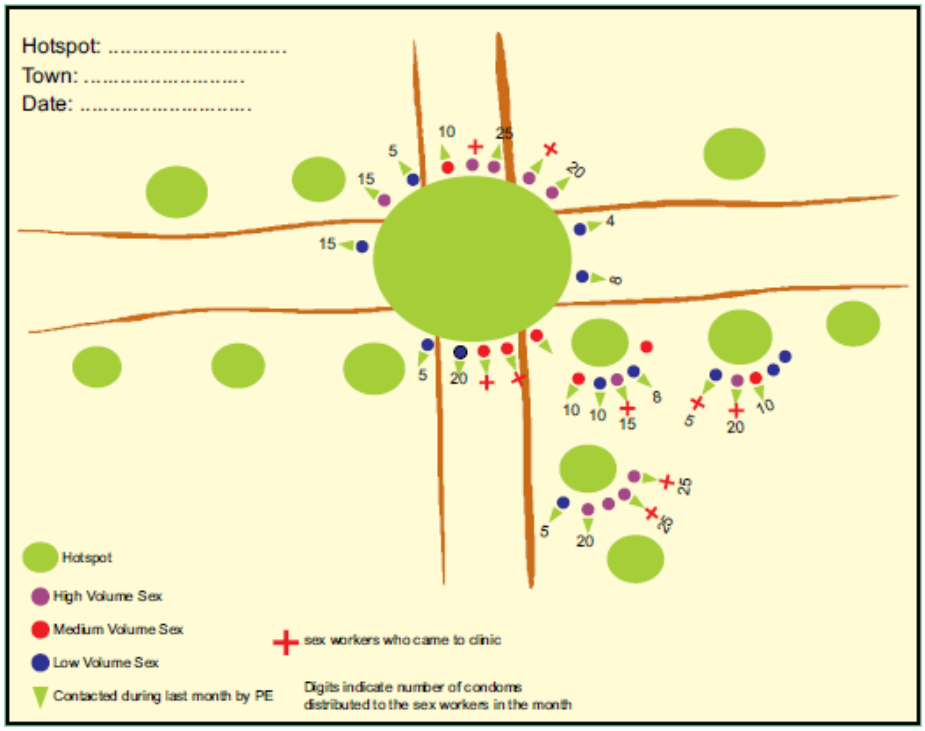

- समझाने के बाद समूह को उक्त टूल पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित करें व प्रस्तुतिकरण रवाएं।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

– समूह ने कौन सी प्रक्रिया अपनाई?

– अभ्यास का निष्कर्ष क्या है?

– आउटरीच की योजना बनाने में यह अभ्यास किस प्रकार मदद करता है?

– इस टूल को पूरा करने में कौन सी आम गल्तियां हुईं?

– इन गल्तियों का क्या परिणाम होगा?

– इस सत्र के दूसरे भाग पर जाएं और विस्तार से पियर की दैनिक डायरी एवं ट्रैकिंग टूल को समझाएँ :–

  – इस फारमेट को कब कब भरा जाएगा?

  – इस फारमेट का उपयोग क्यों किया जाता है? (फारमेट द्वारा दी गई सेवाओं की जानकारी मिलती है)

  – प्रपत्र को भरने के निर्देश/चरण

- निम्नलिखित पर चर्चा करें:

– क्या इस फारमेट का उपयोग करते हुए सभी आवश्यक आंकड़े प्राप्त किए जा सकते हैं।

– फारमेट को भरने में आम गल्तियाँ

टूल 4 एफ.एस.डब्लू और एम.एस.एम पियर के लिए पियर साप्ताहिक गतिविधि और योजना शीट

उद्देश्य :

- दैनिक आधार पर पियर द्वारा दी गई सेवाओं का पता लगाना।
- यह जानना कि कितने सामुदायिक सदस्यों के लिए आउटरीच योजना बनाई गयी और वास्तव में कितनों तक पहुंच हो सकी ।
- यह जानना कि प्रत्येक सदस्य को कितने कंडोम वितरित किए गए।
- यह जानना कि क्या अन्तिम यौन कार्य के दौरान कंडोम का प्रयोग किया गया।
- संपर्क न किए गए सामुदायिक सदस्यों का पता लगाना।

निर्देश

कौन और कब –

- इस फारमेट का प्रयोग पियर अपने निर्धारित हॉटस्पॉट/साइट के एच.आर.जी के साथ उस सप्ताह में किए गए प्रत्येक संपर्क के लिए करता/करती है।
- परियोजना कार्यालय में उपलब्ध लाइनलिस्टिंग/मास्टर रजिस्टर से टी.आई एम.आई.एस/लेखाकार द्वाराएचआरजी सदस्यों के नाम और आईडी संख्या पहले से दी जाएंगी ।
- पियर से अपेक्षा की जाती है कि वह साइट / हॉटस्पॉट में सूचीबद्ध एच.आर.जी को कम से कम 15 दिन में एक बार परियोजना द्वारा दी जानी वाली सेवाओं के लिए संपर्क करेंगे और साइट में सभी नए एच.आर.जी की पहचान करेंगे ।
- नए एचआरजी सदस्य का नाम फारमेट की अंतिम पंक्ति में लिखा जाएगा ।
- भरे हुए फारमेट को साप्ताहिक आधार पर संबंधित ओ.आर.डब्लू. को देता है ताकि कार्य निष्पादन (performance) का पता लग सके और अगले सप्ताह की योजना बनाई जा सके।

कैसे: प्रत्येक पंक्ति में संपर्क किए गए एच.आर.जी की जानकारी भरी जाती है जिसका विवरण निम्नलिखित है :

कमांक संख्या : का प्रयोग एचआरजी सदस्यों के जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों की दृष्टि से प्राथमिकता निर्धारित करने के लिए किया जाएगा । पियर और आउटरीच कार्यकर्ता हर हफ्ते एक दूसरे के साथ परामर्श से इस प्राथमिकता को तय करेंगे । पियर को अपनी आउटरीच योजना बनाने में सहायता हेतु प्राथमिकता दी गई क्रम संख्या को अलग रंग से दर्शाया जाएगा।

एच.आर.जी का नाम : यह कॉलम पहले से ही टी.आई स्टाफ द्वारा सूचिबद्ध/प्रिन्ट किया हुआ होता है जिसमें संबंधित साइट / हॉटस्पॉट के पियर द्वारा पंजीकृत तथा संपर्क किए गए एच.आर.जी. सदस्यों का नाम रहता है।

यूआईडी नंबर : बॉक्स की पहली पंक्ति में दिए गए गोले दस के आंकड़े को दर्शाते हैं जबकि दूसरी पंक्ति में आयताकार ईकाई को दर्शाते हैं। जैसे यदि 42 दर्शाना हो तो उसे निम्नलिखित प्रकार से दर्शाया जाएगाः

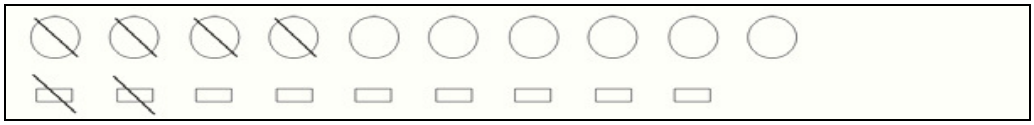

सामुदायिक सदस्यों के नाम की पहचान के लिए चिन्ह : यह कॉलम उन पियर एजुकेटरों (अशिक्षित) के लिए हैं जो सामुदायिक सदस्यों को उनके नाम/आई.डी. नम्बर से नहीं जानते । पियर अपने आउटरीच कार्यकर्ता के सहयोग से उसके हॉटस्पॉट/साइट के प्रत्येक एच.आर.जी. सदस्य की पहजान के लिए चिन्ह बनाएंगे।

रेफरल निर्धारित/ निर्धारित तिथि के बाद – एसटीआई/ आई.सी.टी.सी. यदि उस माह में किसी एचआरजी सदस्य की एस.टी.आई./आई.सी.टी.सी. जांच होनी है (एएनएम / काउंसेलर के अनुसार) तो पियर आउटरीच कार्यकर्ता की मदद से उसके नाम के आगे एक सही का निशान लगा देगा। जिस एच.आर.जी. के सामने जितने अधिक सही के निशान होंगे उसको क्लिनिक में लाने का दबाव उतना ही अधिक होगा।

√ = सही के एक निशान का अभिप्राय है एचआरजी सदस्य का इसी माह क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. पर जाना निर्धारित है।

√ √ दो सही के निशानों का अर्थ है कि एचआरजी सदस्य को योजाना के अनुसार पिछले महीने क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. जाना था लेकिन वह जांच के लिए नहीं गया/गई।

√ √ √ तीन सही के निशानों का अर्थ है कि एचआरजी सदस्य को योजाना के अनुसार दो महीने पहले (इस माह को मिलाकर तीन महीने) क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. जाना था लेकिन वह जांच के लिए नहीं गया/गई।

जोखिम (जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारक) का आंकलनः हर सप्ताह, पियर सात मापदंडों के आधार पर एच.आर.जी. सदस्यों का जोखिम के आधार पर मूल्यांकन करेगा । इस जानकारी से पियर और आउटरीच कार्यकर्ता को सर्वाधिक जोखिम वाले एचआरजी सदस्य पर ध्यान केन्द्रित करने तथा उसकी आवश्यकताओं के आधार पर सेवाएं प्रदान करने में सहायता मिलेगी। जोखिम मापदण्डों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैः

जोखिम कारक : –

यौन किया की उच्च संख्या (10 या अधिक प्रति सप्ताह) अगर एचआरजी सदस्य के पास अधिक ग्राहक आते हैं और 10 बार से अधिक यौन कार्य प्रतिसप्ताह होता है तो वह उच्च जोखिम की श्रेणी में आती/आता है।

कंडोम का कम प्रयोग (यदि पिछली दस यौन कियाओं में से दो से अधिक बार कंडोम का प्रयोग नहीं किया गया है) यदि एचआरजी सदस्य कहता है कि उसने 20 प्रतिशत से अधिक यौन कियाओं में कंडोम का उपयोग नहीं किया है (एक पैमाने पर 10 में 2 बार) तब वह जोखिम में है ।

25 साल से कम आयु और सेक्स वर्क में पहला साल यदि एचआरजी सदस्य बताते हैं कि वह पिछले एक वर्ष से यौन कार्य में है , तो वह उच्च जोखिम में हैं ।

पिछले तीन महीनों में एसटीआई हुआ हो यदि एच.आर.जी. सदस्य को पिछले 3 महीने में एसटीआई हुआ है तो एचआरजी सदस्य को जोखिम अधिक है।

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

शराब यदि एचआरजी सदस्य शराब लेता/लेती है, तो यह जोखिम को और अधिक बढ़ाता है।

असुरक्षित यौन संबंध (अधिक रूपयों के लिए): यदि एचआरजी सदस्य प्रमुख रूप से सेक्स/यौन कार्य पैसे के लिए कर रहे है (आर्थिक कारणों से), तो वह जोखिम को और अधिक बढ़ाता है।

हिंसा : अगर एचआरजी सदस्य हिंसा या उत्पीड़न का शिकार हुआ/हुई है तो वह जोखिम को और अधिक बढ़ाता है।

कंडोम अंतराल विश्लेषण के आधार पर कंडोम की आवश्यकता : प्रत्येक सदस्य के लिए कंडोम की आवश्यकता की जानकारी यौन कार्यों की संख्या के अनुसार निकाली जाती है। यह सूचना संबंधित आउटरीच कार्यकर्ता पियर के साथ बातचीत करके समय समय पर अपडेट करता है।

सेवाएं : एच.आर.जी सदस्य के साथ हर बार संपर्क में पियर कुल आठ प्रकार की सेवाओं में से सेवाएं उपलब्ध कराता/कराती है। वह एच.आर.जी. सदस्य की ज़रूरत के आधार पर उसे एक बार में एक या अधिक सेवाएं उपलब्ध कराता/कराती है।

- **कंडोम वितरण** : प्रत्येक एचआरजी सदस्य के साथ हर बार मिलने पर उसकी आवश्यकता के अनुसार कंडोम वितरित किए जाते हैं। पियर को यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रत्येक एच. आर.जी. सदस्य को वितरित किए गए कंडोम की संख्या, पीस के रूप में फारमेट में अंकित की जाए न कि पैकेट के रूप में।

- **बेचे गए कंडोम (पुरुष)** : पियर को प्रत्येक एच.आर.जी. सदस्य को बेचे गए कंडोम की संख्या, पीस के रूप में फारमेट में अंकित करनी है न कि पैकेट के रूप में।
- **बेचे गए कंडोम (महिला) :** पियर को प्रत्येक एच.आर.जी. सदस्य को बेचे गए कंडोम की संख्या, पीस के रूप में फारमेट में अंकित करनी है न कि पैकेट के रूप में।
- जब एचआरजी सदस्य को 1:1 , 1:समूह या रेफर किया गया हो तो पियर (√) का निशान लगाएगा/लगाएगी ।
    - **1:1** जब पियर किसी एचआरजी सदस्य से एक बार मिलता/मिलती है और परियोजना सेवाओं के बारे में बताता/बताती है – एसटीआई, एचआईवी के बारे में जानकारी देना, नियमित चिकित्सा जांच के महत्व को बताना, आई.सी.टी.सी में रेफरल, कंडोम का उपयोग, कंडोम के उपयोग का प्रदर्शन करना ।
    - **1:समूह** जब पियर एक बार में एक से अधिक एचआरजी सदस्यों से मिलता/मिलती है और परियोजना सेवाओं के बारे में बताता/बताती है – एसटीआई, एचआईवी के बारे में जानकारी देना, नियमित चिकित्सा जांच के महत्व को बताना, आई.सी.टी.सी में रेफरल, कंडोम का उपयोग, कंडोम के उपयोग का प्रदर्शन करना ।
- **रेफ़रल (सामान्य और एसटीआई)** प्रत्येक एचआरजी सदस्य को परियोजना से जुड़ी एसटीआई क्लिनिक (परियोजना क्लिनिक या पसंदीदा डाक्टर) के साथ साथ कई अन्य परियोजना सेवाओं (आई.सी.टी.सी. ए.आर.टी., टीबी आदि) के लिए रेफर किया जाता है ।
    - **एसटीआई रेफरल** पियर को यह सुनिश्चित करना होता है कि हर एच.आर.जी. सदस्य को तीन महीने में कम से कम एक बार नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए एस.टी.आई. क्लीनिक/पसंदीदा डाक्टर के पास भेजा जाए। इसके अलावा एच.आर.जी. सदस्य को लक्षण वाले तथा बिना लक्षण वाले एस.टी.आई. के उपचार के लिए एस.टी.आई. क्लीनिक/पसंदीदा डाक्टर के पास भेजा जाना चाहिए।
    - **आईसीटीसी रेफरल** :सभी **एच.आर.जी. सदस्य को वर्ष में** दो बार नामित आईसीटीसी केन्द्रों पर एचआईवी की जांच करानी चाहिए। पियर को एच.आर.जी. सदस्यों को आईसी.टी.सी. में जांच करवाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। पियर को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि एच.आर.जी. सदस्य को आउटरीच कार्यकर्ता/ए.एन.एम. /काउन्सलर के माध्यम से रेफरल स्लिप दी जाए।
    - **एआरटी** : पियर को पॉजिटिव एच.आर.जी. सदस्यों को उनके हॉटस्पॉट में सूचीबद्ध करना होता है। पियर सुनिश्चित करें की सभी पॉजिटिव सदस्य ए.आर.टी. में पंजीकृत हो जाएं। पियर को ए.आर.टी. की दवाएं पूरी एवं सही समय से लेने के महत्व पर एच.आर. जी. को प्रेरित करना होगा।
- **आखिरी यौन क्रिया में कंडोम का प्रयोग किया** एच.आर.जी सदस्यों के साथ हर बार संपर्क के दौरान, पियर को यह अवश्य पूछना चाहिए कि उस सदस्य ने आखिरी बार यौन कार्य के दौरान कंडोम का प्रयोग किया या नहीं। यदि एच.आर.जी. सदस्य हां कहता/कहती है तो (√) का निशान लगाए और यदि नहीं किया तो (X) का निशान लगाएं।

- **हिंसा की घटना** : पियर से संपर्क करने पर यदि एच.आर.जी. सदस्य बताता/बताती है कि सप्ताह के दौरान वह हिंसा/उत्पीड़न का शिकार हुआ/हुई तो पियर (√) का निशान अन्यथा (X) का निशान लगा देगा/देगी। (आउटरीच कार्यकर्ता इस मामले को पियर की सहायता से हल करेगा/करेगी)

आउटरीच कार्यकर्ता के साथ संयुक्त रूप से साप्ताहिक आधार पर साइट की समीक्षा की जाएगी जिसमें यह फार्म आउटरीच कार्यकर्ता को सौंपा जाएगा जो इस फारमेट इत्यादि की पूर्णतः की जांच कर लेगा/कर लेगी। फारमेट में भरी जानकारी से यह पता लग जाएगा कि इस सप्ताह में क्या और कितना कार्य हुआ और अगले सप्ताह के लिए प्राथमिकता निर्धारित करने और योजना बनाने में मदद मिलेगी।

पीयर फारमेट में भरी जानकारी की उपयोगिता

- हर सप्ताह एक हॉटस्पॉट में एचआरजी सदस्यों से मुलाकात की संख्या जानने में मदद करता है।
- हॉट–स्पॉट में नए एचआरजी सदस्यों की पहचान करने में मदद करता है ।
- पियर ने अपने निर्धारित हॉटस्पॉट में प्रत्येक एचआरजी सदस्य को किस प्रकार की सेवा उपलब्ध कराई, इसकी जानकारी मिलती है।
- प्रत्येक सदस्य को दिए गए कंडोम की संख्या एवं उस हाटस्पॉट में दिए गए कुल कंडोम की संख्या का पता चलता है।
- सूची में दिए गए एचआरजी सदस्य जिससे इस सप्ताह संपर्क नहीं हो पाया, उनका पता चलता है जिससे अगले सप्ताह उनको प्राथमिकता दी जा सके।
- उन एच.आर.जी. सदस्यों की संख्या पता चलती है जिन्होंने अन्तिम यौन क्रिया में कंडोम का इस्तेमाल किया।
- प्रत्येक एचआरजी सदस्य के जोखिम की स्थिति का पता चलता है ।
- संबंधित हॉटस्पॉट/साइट में हिंसा और उत्पीड़न की घटनाओं की संख्या का पता चलता है।

(from ready reference booklet – Training Module for Outreach workers, NACO)

FSW/MSM Weekly activity and planning sheet to be inserted

आई.डी.यू. पियर के लिए पियर साप्ताहिक गतिविधि और योजना शीट

उद्देश्य :

- दैनिक आधार पर पियर द्वारा दी गई सेवाओं का पता लगाना।
- यह जानना कि कितने समुदायिक सदस्यों के लिए आउटरीच योजना बनाई गयी और वास्तव में कितनों तक पहुंच हो सकी ।
- यह जानना कि प्रत्येक सदस्य को कितने कंडोम/सुई/सिरिंज वितरित किए गए।
- यह जानना कि क्या अन्तिम यौन कार्य के दौरान कंडोम का प्रयोग किया गया।
- संपर्क न किए गए सामुदायिक सदस्यों का पता लगाना।

निर्देश

कौन और कब –

- इस फारमेट का प्रयोग पियर अपने निर्धारित हॉटस्पॉट/साइट के एच.आर.जी के साथ उस सप्ताह में किए गए प्रत्येक संपर्क के लिए करता/करती है।
- परियोजना कार्यालय में उपलब्ध लाइनलिस्टिंग/मास्टर रजिस्टर से टी.आई एम.आई.एस/लेखाकार द्वारा एचआरजी सदस्यों के नाम और आईडी संख्या पहले से दी जाएंगी ।
- पियर से अपेक्षा की जाती है कि वह साइट / हॉटस्पॉट में सूचीबद्ध एच.आर.जी को कम से कम 15 दिन में एक बार परियोजना द्वारा दी जानी वाली सेवाओं के लिए संपर्क करेंगे और साइट में सभी नए एच.आर.जी की पहचान करेंगे ।
- नए एचआरजी सदस्य का नाम फारमेट की अंतिम पंक्ति में लिखा जाएगा ।
- भरे हुए फारमेट को साप्ताहिक आधार पर संबंधित ओ.आर.डब्लू को देता है ताकि कार्य निष्पादन (performance) का पता लग सके और अगले सप्ताह की योजना बनाई जा सके।

कैसे: प्रत्येक पंक्ति में संपर्क किए गए एच.आर.जी की जानकारी भरी जाती है जिसका विवरण निम्नलिखित है :

क्रमांक संख्या : का प्रयोग एचआरजी सदस्यों के जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों की दृष्टि से प्राथमिकता निर्धारित करने के लिए किया जाएगा । पियर और आउटरीच कार्यकर्ता हर हफ्ते एक दूसरे के साथ परामर्श से इस प्राथमिकता को तय करेंगे । पियर को अपनी आउटरीच योजना बनाने में सहायता हेतु प्राथमिकता दी गई क्रम संख्या को अलग रंग से दर्शाया जाएगा।

एच.आर.जी का नाम : यह कॉलम पहले से ही टी.आई स्टाफ द्वारा सूचिबद्ध/प्रिन्ट किया हुआ होता है जिसमें संबंधित साइट / हॉटस्पॉट के पियर द्वारा पंजीकृत तथा संपर्क किए गए एच.आर.जी. सदस्यों का नाम रहता है।

यूआईडी नंबर : बॉक्स की पहली पंक्ति में दिए गए गोले दस के आंकड़े को दर्शाते हैं जबकि दूसरी पंक्ति में आयताकार ईकाई को दर्शाते हैं। जैसे यदि 42 दर्शाना हो तो उसे निम्नलिखित प्रकार से दर्शाया जाएगाः

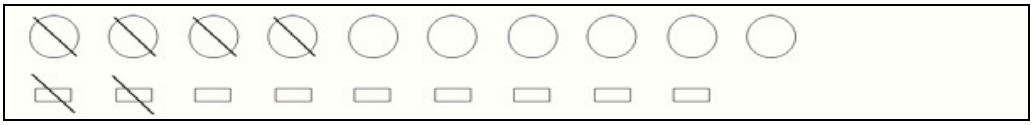

सामुदायिक सदस्यों के नाम की पहचान के लिए चिन्ह : यह कॉलम उन पियर एजुकेटरों (अशिक्षित) के लिए हैं जो सामुदायिक सदस्यों को उनके नाम/आई.डी. नम्बर से नहीं जानते । पियर अपने आउटरीच कार्यकर्ता के सहयोग से उसके हॉटस्पॉट/साइट के प्रत्येक एच.आर.जी. सदस्य की पहजान के लिए चिन्ह बनाएंगे।

रेफरल निर्धारित/ निर्धारित तिथि के बाद – एसटीआई/ आई.सी.टी.सी. यदि उस माह में किसी एचआरजी सदस्य की एस.टी.आई./आई.सी.टी.सी. जांच होनी है (एएनएम / काउंसेलर के अनुसार) तो पियर आउटरीच कार्यकर्ता की मदद से उसके नाम के आगे एक सही का निशान लगा देगा। जिस एच.आर.जी. के सामने जितने अधिक सही के निशान होंगे उसको क्लिनिक में लाने का दबाव उतना ही अधिक होगा।

√ = सही के एक निशान का अभिप्राय है एचआरजी सदस्य का इसी माह क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. पर जाना निर्धारित है।

√ √ दो सही के निशानों का अर्थ है कि एचआरजी सदस्य को योजाना के अनुसार पिछले महीने क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. जाना था लेकिन वह जांच के लिए नहीं गया/गई।

√ √ √ तीन सही के निशानों का अर्थ है कि एचआरजी सदस्य को योजाना के अनुसार दो महीने पहले (इस माह को मिलाकर तीन महीने) क्लिनिक/आई.सी.टी.सी. जाना था लेकिन वह जांच के लिए नहीं गया/गई।

जोखिम (जोखिम और जोखिम को बढ़ाने वाले कारक) का आंकलनः हर सप्ताह, पियर सात मापदंडों के आधार पर एच.आर.जी. सदस्यों का जोखिम के आधार पर मूल्यांकन करेगा । इस जानकारी से पियर और आउटरीच कार्यकर्ता को सर्वाधिक जोखिम वाले एचआरजी सदस्य पर ध्यान केन्द्रित करने तथा उसकी आवश्यकताओं के आधार पर सेवाएं प्रदान करने में सहायता मिलेगी। जोखिम मापदण्डों को संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैः

जोखिम कारक : –

नशा लेने वाले साथियों की अधिक संख्या (> 3 प्रतिमाह): यदि एच.आर.जी. सदस्य बताता हैं कि पिछले महीने उसके तीन या तीन से अधिक नशा लेने वाले साथी थे तो वह अपने साथियों के साथ नशा लेने वाले उपकरणों के साझा प्रयोग के कारण अधिक जोखिम में है।

सुई या सिरिंज का साझा प्रयोग हाँ /नहीं: यदि एच.आर.जी. सदस्य बताता है कि उसने अपने साथियों के साथ पिछले सप्ताह में सुई और सिरिंजों का साझा प्रयोग किया है तो वह ज़्यादा जोखिम में है।

एक दिन में 3 या 3 से अधिक बार सुई द्वारा नशा लेनाः यदि एच.आर.जी. सदस्य कहता है कि उसने सप्ताह के दौरान एक दिन में तीन या तीन से अधिक बार सुई द्वारा नशा लिया है तो वह अधिक जोखिम में है।

पिछले तीन महीनों में एसटीआई हुआ हो : यदि एच.आर.जी. सदस्य को पिछले 3 महीने में एसटीआई हुआ है तो एचआरजी सदस्य को जोखिम अधिक है।

जोखिम को बढ़ाने वाले कारक

इंजेक्शन के अलावा शराब व अन्य नशीले पदार्थों का उपयोगः यदि एच.आर.जी. सदस्य इसके अलावा शराब या अन्य नशीले पदार्थ लेता है तो वह जोखिम को और अधिक बढ़ाता है।

असुरक्षित यौन संबंध (अनियमित साथी के साथ यौन संबंध): यदि एच.आर.जी. सदस्य यह बताता है/बताती है कि पिछले सप्ताह में उसने किसी अनियमित साथी के साथ असुरक्षित यौन संबंध बनाए हैं तो उससे जोखिम और अधिक बढ़ जाता है।

गतिशीलता (एक हॉटस्पॉट से दूसरे हॉटस्पॉट तक): यदि एच.आर.जी. सदस्य यह बताता है कि वह अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आता जाता है तो उससे जोखिम और अधिक बढ़ जाता है।

कंडोम अंतराल विश्लेषण के आधार पर कंडोम की आवश्यकता : प्रत्येक सदस्य के लिए कंडोम की आवश्यकता की जानकारी यौन कार्यों की संख्या के अनुसार निकाली जाती है। यह सूचना संबंधित आउटरीच कार्यकर्ता पियर के साथ बातचीत करके समय समय पर अपडेट करता है।

सेवाएं : एच.आर.जी सदस्य के साथ हर बार संपर्क में पियर कुल नौ प्रकार की सेवाओं में से सेवाएं उपलब्ध कराता/कराती है। वह एच.आर.जी. सदस्य की ज़रूरत के आधार पर उसे एक बार में एक या अधिक सेवाएं उपलब्ध कराता/कराती है।

- **कंडोम वितरण** : प्रत्येक एचआरजी सदस्य के साथ हर बार मिलने पर उसकी आवश्यकता के अनुसार कंडोम वितरित किए जाते हैं। पियर को यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रत्येक एच.आर. जी. सदस्य को वितरित किए गए कंडोम की संख्या, पीस के रूप में फारमेट में अंकित की जाए न कि पैकेट के रूप में।

- जब एचआरजी सदस्य को 1:1 , 1:समूह या रेफर किया गया हो तो पियर (√) का निशान लगाएगा/लगाएगी ।

    - **1:1** जब पियर किसी एचआरजी सदस्य से एक बार मिलता/मिलती है और परियोजना सेवाओं के बारे में बताता/बताती है – एसटीआई, एचआईवी के बारे में जानकारी देना, नियमित चिकित्सा जांच के महत्व को बताना, आई.सी.टी.सी में रेफरल, कंडोम का उपयोग, कंडोम के उपयोग का प्रदर्शन करना ।

    - **1:समूह** जब पियर एक बार में एक से अधिक एचआरजी सदस्यों से मिलता/मिलती है और परियोजना सेवाओं के बारे में बताता/बताती है – एसटीआई, एचआईवी के बारे में जानकारी देना, नियमित चिकित्सा जांच के महत्व को बताना, आई.सी.टी.सी में रेफरल, कंडोम का उपयोग, कंडोम के उपयोग का प्रदर्शन करना ।

- सुईं या सिरिंजों की साप्ताहिक आवश्यकता : प्रत्येक एच.आर.जी. सदस्य के लिए सुई और सिरिंज की आवश्यकता की जानकारी उसके एक सप्ताह में सुई/सिरिंज द्वारा नशा लेने की संख्या के आधार पर निर्धारित की जाती है। संबंधित पियर के साथ बातचीत करके आउटरीच कार्यकर्ता इस जानकारी को हर तीन महीने में अपडेट करता/करती है।

- वितरित की गई सुई/सिरिंजों की संख्याः एच.आर.जी. सदस्य के साथ संपर्क के दौरान उसकी आवश्यकता के अनुसार सुई/सिरिंज वितरित की जाती है।

- वापस की गई सुई/सिरिंजों की संख्याः प्रत्येक संपर्क के दौरान एच.आर.जी. सदस्य के द्वारा वापस की गई सुई/सिरिंज परियोजना में जमा कराई जानी चाहिए।

- **रेफ़रल (सामान्य और एसटीआई)** प्रत्येक एचआरजी सदस्य को परियोजना से जुड़ी एसटीआई क्लिनिक (परियोजना क्लिनिक या पसंदीदा डाक्टर) के साथ साथ कई अन्य परियोजना सेवाओं (आई.सी.टी.सी. ए.आर.टी., टीबी आदि) के लिए रेफर किया जाता है ।

    - **एसटीआई रेफरल** पियर को यह सुनिश्चित करना होता है कि हर एच.आर.जी. सदस्य को तीन महीने में कम से कम एक बार नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए एस.टी.आई. क्लीनिक/पसंदीदा डाक्टर के पास भेजा जाए। इसके अलावा एच.आर.जी. सदस्य को लक्षण वाले तथा बिना लक्षण वाले एस.टी.आई. के उपचार के लिए एस.टी.आई. क्लीनिक/पसंदीदा डाक्टर के पास भेजा जाना चाहिए।

    - **घाव का उपचारः** यदि एच.आर.जी. सदस्य ने पियर को बताया है कि सप्ताह के दौरान उसके घाव का उपचार हुआ है तो पियर (√) का निशान लगाएगा/लगाएगी।

    - **आईसीटीसी रेफरल** :सभी **एच.आर.जी. सदस्य को वर्ष में** दो बार नामित आईसीटीसी केन्द्रों पर एचआईवी की जांच करानी चाहिए। पियर को एच.आर.जी. सदस्यों को आईसी.टी.सी. में जांच करवाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। पियर को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि एच.आर.जी. सदस्य को आउटरीच कार्यकर्ता/ए.एन.एम. /काउन्सलर के माध्यम से रेफरल स्लिप दी जाए।

- **एआरटी** : पियर को पॉजिटिव एच.आर.जी. सदस्यों को उनके हॉटस्पॉट में सूचीबद्ध करना होता है। पियर सुनिश्चित करें की सभी पॉजिटिव सदस्य ए.आर.टी. में पंजीकृत हो जाएं। पियर को ए.आर.टी. की दवाएं पूरी एवं सही समय से लेने के महत्व पर एच.आर.जी. को प्रेरित करना होगा।

- **आखिरी यौन किया में कंडोम का प्रयोग किया** एच.आर.जी सदस्यों के साथ हर बार संपर्क के दौरान, पियर को यह अवश्य पूछना चाहिए कि उस सदस्य ने आखिरी बार यौन कार्य के दौरान कंडोम का प्रयोग किया या नहीं। यदि एच.आर.जी. सदस्य हां कहता/कहती है तो (√) का निशान लगाए और यदि नहीं किया तो (X) का निशान लगाएं।

- **आखिरी बार बिना साझेदारी के सुईं / सिरिंज के द्वारा नशा लिया** (Last Episode): प्रत्येक संपर्क में पियर एच.आर.जी. सदस्य से पूछता है कि क्या उसने आखिरी बार सुई द्वारा नशा लेते समय सुई/सिरिंज का साझा प्रयोग नहीं किया:

  - यदि साझा प्रयोग नही किया तो उस कॉलम में (√) का निशान लगाएं
  - यदि साझा प्रयोग किया तो (X) का निशान लगाएं।

आउटरीच कार्यकर्ता के साथ संयुक्त रूप से साप्ताहिक आधार पर साइट की समीक्षा की जाएगी जिसमें यह फार्म आउटरीच कार्यकर्ता को सौंपा जाएगा जो इस फारमेट इत्यादि की पूर्णतः की जांच कर लेगा/कर लेगी। फारमेट में भरी जानकारी से यह पता लग जाएगा कि इस सप्ताह में क्या और कितना कार्य हुआ और अगले सप्ताह के लिए प्राथमिकता निर्धारित करने और योजना बनाने में मदद मिलेगी।

पीयर फारमेट में भरी जानकारी की उपयोगिता

- हर सप्ताह एक हॉटस्पॉट में एचआरजी सदस्यों से मुलाकात की संख्या जानने में मदद करता है।
- हॉट–स्पॉट में नए एचआरजी सदस्यों की पहचान करने में मदद करता है ।
- पियर ने अपने निर्धारित हॉटस्पॉट में प्रत्येक एचआरजी सदस्य को किस प्रकार की सेवा उपलब्ध कराई, इसकी जानकारी मिलती है।
- प्रत्येक सदस्य को दिए गए कंडोम की संख्या एवं उस हाटस्पॉट में दिए गए कुल कंडोम की संख्या का पता चलता है।
- प्रत्येक सप्ताह दी गई सुई/सिंरिंजों की संख्या का पता चलता है।
- इससे एच.आर.जी. सदस्यों द्वारा पियर को लौटाई गई सुई/सिरिजों की संख्या जानने में मदद मिलती है।
- सूची में दिए गए एचआरजी सदस्य जिनसे इस सप्ताह संपर्क नहीं हो पाया, उनका पता चलता है जिससे अगले सप्ताह उनको प्राथमिकता दी जा सके।
- प्रत्येक एचआरजी सदस्य के जोखिम की स्थिति का पता चलता है ।
- उन एच.आर.जी. सदस्यों की संख्या जानने में मदद मिलती है जिन्होंने अन्तिम बार सुई द्वारा नशा लेते समय सुई/सिरिंज का साझा प्रयोग किया।

(from ready reference booklet – Training Module for Outreach workers, NACO)

IDU Weekly activity and planning sheet to be inserted

सत्र 2 संकट प्रबंधन

उद्देश्य	प्रतिभागियों को संकट के प्रबंधन में उनकी भूमिका समझाना और इस प्रकार उन्हें समुदाय का विश्वास प्राप्त करने में सहायता करना ।
अपेक्षित परिणाम	प्रतिभागियों को समुदाय की आवश्यकताओं के बारे में पता चलेगा और संकट के समय समुदाय की मदद कैसे करें – यह समझ पाएंगे ।
समयावधि	45 मिनट
पद्धति	ब्रेनस्टार्मिंग , चर्चा , समझाना
सामग्री / तैयारी	चार्ट पेपर , मार्कर पेन

प्रक्रिया :

- सत्र का आरम्भ प्रतिभागियों से यह जान कर करें कि समुदाय को किस किस प्रकार की संकट की स्थिति से गुज़रना पड़ता है – सामुदायिक सदस्यों को व्यक्तिगत स्तर पर तथा समुदाय के स्तर पर।
- प्रतिभागियों द्वारा बताई गई संकट स्थितियों को नोट कर लें। यदि संभव हो तो उन्हें दो भागों में विभाजित करें – व्यक्तिगत संकट और सामूहिक संकट ।
- प्रतिभागियों को दो समूह में विभाजित करें । प्रत्येक समूह को एक स्थिति कार्ड दे ।

केस स्टडी 2

क्षेत्र भ्रमण के दौरान समुदाय के कुछ सदस्यों ने पियर को बताया कि बीती रात जब वह वहाँ नहीं थी तब पुलिस का छापा पड़ा। कुछ महिलाएं सो रही थीं जब उनकी गिरफ्तारी की गई। पियर को लगता है कि इस तरह के छापे हॉटस्पॉट पर आए दिन ही पड़ने लगे हैं ।

केस स्टडी 3

संपर्क के दौरान एक सामुदायिक सदस्य ने पियर को बताया कि वह बहुत परेशान है क्योंकि बीती रात एक स्थानीय गुंडे ने आकर ज़ोर ज़बरदस्ती की और बिना कंडोम के उससे संभोग किया। यह गुंडा पहले भी उस क्षेत्र की कई यौन कार्यकर्ताओं के साथ ऐसा कर चुका था।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

– क्या यह समुदाय के सदस्यों के लिए एक आम स्थिति है?
– ऐसी स्थिति से फील्ड में कैसे निपटा जाता है?

- प्रत्येक समूह को बड़े समूह में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें।
- प्रस्तुतिकरण के बाद, पहले बताई गई संकट की स्थितियों से निपटने के लिए मौजूदा तरीकों पर चर्चा करें । प्रतिभागियों को अपने अनुभव बांटने के लिए प्रोत्साहित करें ।

- दोनों स्थिति कार्ड जिनपर पहले चर्चा हुई थी का संदर्भ लेते हुए समूह से पूछें : –
  – क्या क्षेत्र में इस प्रकार के और अन्य संकटों से निपटने के लिए कोई प्रणाली हो सकती है?
  – यदि इस तरह की प्रणाली विकसित की गई तो क्या समुदाय अधिक सुरक्षित महसूस करेगा और पियर पर अधिक विश्वास करेगी?
  – इस प्रकार की संकट प्रबंधन प्रणाली में क्या क्या शामिल किया जाएगा?
- प्रभावशाली संकट प्रबंधन प्रणाली को विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा करें साथ ही इस तरह की घटनाओं का रिकार्ड रखने की आवश्यकता पर भी बल दें।
- प्रतिभागियों को देश भर में विभिन्न परियोजनाओं के तहत चलाई जा रही मौजूदा संकट प्रबंधन प्रणालियों के बारे में बताएं ।

संकट प्रबंधन का औचित्य

यौन कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न और उनके साथ हिंसा एक आम बात है। यही कारण है कि एच.आई.वी. से प्रभावित जनसंख्या के लिए चलाए जाने वाले लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम के मार्ग में रूकावटें भी आती हैं। उत्पीड़न में गाली गलौच, झूठे आरोप लगाकर गिरफ्तार करना (जैसे रिझाना, कंडोम साथ ले जाना), मार पीट यहां तक कि यौन अत्याचार भी शामिल है। इस प्रकार का उत्पीड़न आम जनता, पुलिस, गुंडे, स्थानीय नेता, ग्राहक यहां तक कि एच.आर.जी. करते हैं। समय पर और उपयुक्त ढंग से संकट का हल निकालकर, नियमित रूप से जागरूकता एवं एडवोकेसी कार्यक्रम चलाकर इस प्रकार की हिंसा और उत्पीड़न की बाधा को दूर किया जा सकता है। इस तरह का माहौल बनाया जा सकता है जो एच.आर.जी. सदस्यों में आत्म सम्मान का भाव पनपने में मददगार हो परिणाम स्वरूप वह अपने स्वास्थ्य पर विशेषकर रूप से एचआईवी / एड्स सहित एसटीआई के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

टी.आई कार्यक्रम के अन्तर्गत संकट की स्थिति में हस्तक्षेप करके एच.आर.जी. सदस्यों तक पहुंच बढ़ाई जा सकती है जिससे एन.जी.ओ./सी.बी.ओ. के साथ उनके रिश्ते मज़बूत होते हैं और वह सदस्यों का विश्वास जीत लेते हैं। संकट की स्थिति में सदस्यों की मदद करने से क्षेत्र में आउटरीच कार्यकर्ता और एच.आर.जी. के बीच अच्छे संबंध बन जाते हैं जिससे एस.टी.आई. की रोकथाम और उपचार से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करने में मदद मिलती है।

संकट के प्रभावी प्रबंधन के लिए मूलभूत अनिवार्यताएं

- प्रशिक्षित और प्रतिबद्ध सदस्य जो 24 घंटे फोन पर अपनी सेवाएं प्रदान करने और संकट की स्थिति में तत्काल प्रतिक्रिया देने को इच्छुक हों।
- अपनी बात पहुंचाने और संपर्क करने के लिए सामुदायिक सदस्यों के पास कारगर तरीके हों (यानी संकट की स्थिति के लिए फोन इत्यादि)।
- समुदाय के सदस्यों को इस प्रकार की सुविधा की जानकारी हो ।
- अनुभवी और प्रतिबद्ध वकील, जो 24 घंटे सेवाएं प्रदान करने के इच्छुक हों।
- नियमित बैठकों और शिक्षा के माध्यम से स्थानीय स्टेकहोल्डर (विशेषकर एचआरजी) के साथ नेटवर्क और संपर्क स्थापित करना, जागरूकता कार्यक्रम चलाना जिसमें समुदाय के स्तर पर कानूनी जानकारी देने से संबंधित सत्र चलाया जाना भी शामिल है।
- समाज की अन्य नागरिक संस्थाओं, एक्टिविस्ट तथा स्थानीय मीडिया के साथ संपर्क ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह समुदाय की बात का समर्थन कर सकें।
- संकट प्रबंधन के मामलों पर प्रकाश डालना ताकि आंतरिक क्षमता का निर्माण किया जा सके और इसमें सुधार लाया जा सके।

संकट प्रतिक्रिया प्रणाली की स्थापना

संकट प्रतिक्रिया प्रणाली स्थापित करने के लिए निम्नलिखित चरण इस्तेमाल किए जा सकते है :

- **संकट प्रबंधन टीम बनाई जाए** जिसमें पियर एजुकेटर, आउटरीच कार्यकर्ता, वरिष्ठ परियोजना स्टाफ तथा एफ.एस.डब्लू. के उत्पीड़न से जुड़े मुद्दों को जानने वाले वकील शामिल हों। यह टीम ही संकट प्रतिक्रिया प्रणाली के स्टाफ तथा प्रक्रियाओं से जुड़े प्रोटोकाल तैयार करेंगी और उन्हें लागू करेगी।

- संकट की स्थिति में समुदाय के सदस्यों को टेलीफोन की सुविधा हेतु **मोबाइल फोन खरीदे जाएं** ताकि किसी भी समय सदस्यों से संपर्क हो सके।

- संकट प्रबंधन के लिए इन **फोनों के रख रखाव** का काम नामित सामुदायिक सदस्य को सौंपा जाए। यह सदस्य हर महीने बदले जा सकते हैं ताकि संकट की स्थिति का प्रबंधन करने वाले कई लोग तैयार किए जा सकें और वॉलेन्टियर पर अधिक बोझ न हो।

- **यह मोबाइल कभी भी बंद करके न रखें।** किसी संकट की स्थिति में प्रतिक्रिया देने के लिए वॉलेन्टियर को 24 घंटे मौजूद होना होगा। अधिकांशतः संकट की घटनाएं रात के समय ही होती हैं अतः संकट प्रतिक्रिया दल तथा परियोजना स्टाफ को किसी समय भी फोन पर प्रतिक्रिया देनी होगी।

- सभी संकट दल के सदस्यों के मोबाइल फोन की जानकारी समुदाय के सदस्यों को पाकेट साइज़ कार्डों के रूप में स्थानीय भाषा में प्रिंट करवाकर दी जानी चाहिए। कार्ड में मोबाइल नम्बर दिए हों और उसमें बताया जाए कि एन.जी.ओ./सी.बी.ओ. द्वारा समुदाय के लिए संकट प्रबंधन की कौन सी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

संकट हस्तक्षेप सामग्री के उदाहरण

नीचे एम.एस.एम. तथा टी.जी. के लिए संकट हस्तक्षेप कार्यक्रम का सूचना कार्ड दर्शाया गया है। इसी कार्ड को अन्य समुदायों जैसे एफ.एस.डब्लू. तथा आई.डी.यू. के लिए बदलकर उपयोग में लाया जा सकता है।

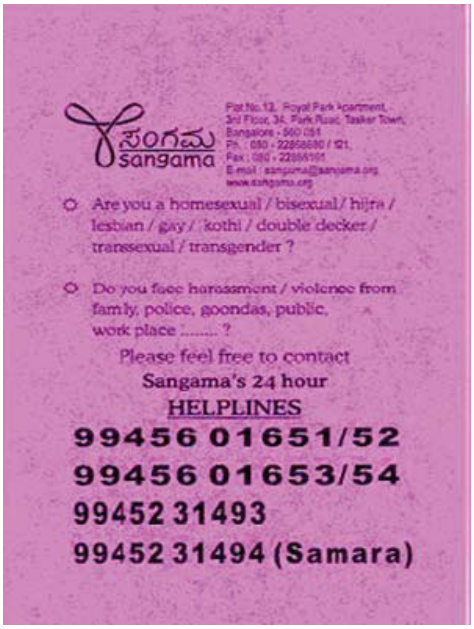

(Source Sangama, Bangalore)

सत्र का संक्षिप्तीकरण करें

- संकट प्रतिक्रिया हस्तक्षेप एचआरजी सदस्यों के साथ आउटरीच में वृद्धि लाता है जिससे एन.जी.ओ. /सी.बी.ओ. के साथ उनके अच्छे संबंध होते हैं और उनका विश्वास प्राप्त होता है।
- संकट प्रतिक्रिया प्रणाली को स्थापित करने के कई तरीके हो सकते हैं और यह संसाधनों की उपलब्धता और समुदाय के सदस्यों की आवश्यकता पर निर्भर करता है ।
- पियर को परियोजना स्तर पर संकट प्रबंधन प्रणालियों के गठन पर चर्चा करनी चाहिए और उपयुक्त प्रणाली का गठन करना चाहिए ।

सत्र 3 :
एचआईवी के अलावा अन्य मुद्दे (सामान्य स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूह और सामाजिक अधिकार)

उद्देश्य	प्रतिभागियों को यह समझाने में मदद करना कि एचआईवी के अलावा भी समुदाय के सदस्यों की सहायता करने में उनकी भूमिका है।
अपेक्षित परिणाम	प्रतिभागी समुदाय के सदस्यों की अन्य स्वास्थ्य, सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं को समझ पाएंगे और उसमें उनकी सहायता कर सकेंगे । प्रतिभागी सामुदायिक सदस्यों से बातचीत करते समय उनके सामान्य स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूह बनाने तथा सामूहिकीकरण आदि मुद्दों पर भी बातचीत कर सकेंगे ।
समयावधि	45 मिनट
विधि	समूह कार्य, चर्चा, प्रस्तुतिकरण, समझाना
सामग्री / तैयारी	चार्ट पेपर, मार्कर पेन, बातचीत करने के मुद्दों पर सहायक सामग्री (2 फ्लिप बुक) सत्र के अंतिम भाग के लिए विभिन्न सामाजिक अधिकारों तथा उन्हें कैसे प्राप्त करें के बारे में जानकारी देने के लिए किसी विशेषज्ञ को बुलाया जा सकता है। वह किसी सरकारी विभाग या एन.जी.ओ. से जुड़ा हो जिसे इन मुद्दों पर कार्य करने का अनुभव हो।

प्रक्रियाः

- चूंकि यह प्रशिक्षण के समापन से पहले का प्रमुख सत्र है अतः प्रतिभागियों को पियर की भूमिका को दोहराने के लिए प्रेरित करें।
- एचआईवी के अलावा पियर के काम का हिस्सा बनने वाले दो महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में बताएंः
    - सामान्य स्वास्थ्य के बारे में बातचीत
    - स्वयं सहायता समूह और सामूहीकीकरण के बारे में बातचीत
- प्रतिभागियों को सामान्य स्वास्थ्य और स्वयं सहायता समूहों से जुड़े बातचीत करने के मुद्दों पर तैयार फ्लिपबुक के बारे में बताएं।

बातचीत करने के मुद्दे:

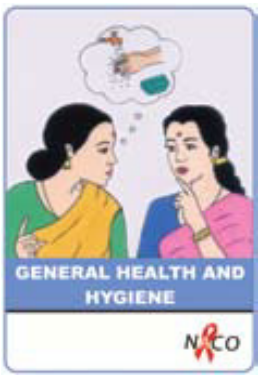

1. सामान्य स्वास्थ्य

अ : स्वास्थ्य और स्वच्छता

- पीने का पानी सुरक्षित स्रोत से लें।
- यदि जल की स्वच्छता पर संदेह हो तो उसे 20 मिनट तक उबालें।
- जहाँ तक संभव हो घर में पकाया गया भोजन करें । बाहर का भोजन सफाई से नहीं पकाया जाता जिससे हम बीमार हो सकते हैं। पेट का संक्रमण हो सकता है और उल्टी, आ सकती है जो कभी कभी गंभीर हो सकता है ।
- शराब और तंबाकू से दूर रहें । इनके प्रयोग से कैंसर, नींद न आना, पीलिया आदि रोग हो सकते हैं । इसके अलावा, यदि सदस्य किसी ग्राहक से यौन कार्य करने से पहले नशे में हो तो ग्राहक से कंडोम का इस्तेमाल करने के लिए ज़ोर नहीं दे पाते जिससे उनके स्वयं का जीवन जोखिम में पड़ सकता है।

ब : व्यक्तिगत सफाई :

एक व्यक्ति निम्नलिखित तरीकों से व्यक्तिगत स्वच्छता रख सकता है:

- रोज़ नहाकर
- रोज़ कपड़े और अन्दर पहनने वाले कपड़े बदलकर। रोज़ धुले कपड़े पहनकर।
- भोजन से पहले और बाद में साबुन से हाथ धोकर
- हर बार संभोग के बाद गुप्तांगों को धोकर
- नाखूनों को काटकर एवं साफ रखकर
- यदि मासिक धर्म के दौरान कपड़े का इस्तेमाल कर रहे हैं तो अच्छी तरह से धूप में धोकर सुखाएं।

स : अपने आसपास की सफाई :

- अपने घर के आसपास साफ सफाई रखें , घर का कूड़ा कूड़ेदान में डालें।
- घर के आस पास पानी इकट्ठा न होने दें इससे मच्छर पनप सकते हैं और मलेरिया जैसी बीमारियां फैल सकती हैं।
- खुले और सार्वजनिक स्थानों में थूकें नही। पीकदान का उपयोग करें ।
- इस्तेमाल किया कंडोम हमेशा कागज के एक टुकड़े में लपेटने के बाद कचरे में फेंके।

2. स्वयं सहायता समूह और सामूहीकीकरण

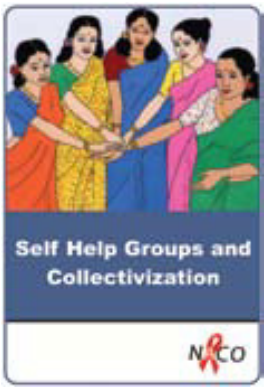

- स्वयं सहायता समूह समुदाय के सदस्यों का छोटा सा समूह (10–15 लोग) होता है जो अपने किसी सामान्य हित के मुद्दे से जुड़ी सामान्य समस्या का हल या कोई कार्य मिलकर करते हैं।
- कोई समूह किसी भी उद्देश्य से बन सकता है जैसे किसी विशेष अधिकार के लिए लड़ने, बचत और ऋण से जुड़े, कोई अन्य सामान्य मुद्दे को उठाने, कोई छोटी मोटी आय वाली इकाई शुरू करने और सरकार की विभिन्न स्कीमों का लाभ उठाने के लिए समूह बन सकता है।
- उद्देश्य चाहे जो भी हो, अहम बात यह है कि समुदाय के सदस्य इकट्ठा होते हैं, समूह बनाते हैं, एक दूसरे की सहायता और सहयोग करते हैं।
- कई बार अकेला व्यक्ति किसी समस्या का समाधान नहीं निकाल पाता परन्तु एक समूह ऐसा कर सकता है। अकेले व्यक्ति के काम करने की अपेक्षा समूह के कार्य करने में ज़्यादा शक्ति होती है।
- आमतौर पर एकबार स्वयं सहायता समूह बन जाने पर इसके सदस्य मिलकर निर्णय लेते हैं कि उन्हें कैसे कार्य करना चाहिए। वह अपने नियम बनाते हैं और उन्हें अनुमोदन देते हैं। यदि कोई समूह बचत तथा ऋण के लिए बना है तो वह इस कार्य के लिए बैंक खाता खोलकर चलाते हैं।
- एक स्वयं सहायता समूह का सदस्य होने के विभिन्न लाभ है : –
    - एक स्वयं सहायता समूह का सदस्य बनकर व्यक्ति अकेला नहीं रहता । उसे सामूहिक शक्ति का लाभ मिलता है।
    - समूह के अन्य लोगें से जुड़कर सदस्यों में चुनौतियों का सामना करने का विश्वास पैदा हो जाता है।
    - सदस्यों को समूह में शामिल होने से समूह में कार्य करने की क्षमता आती है।
    - यदि समूह बचत तथा ऋण के लिए बना है तो सदस्यों को अधिक लाभ होता है और ऋण इत्यादि लेने की सुविधा प्राप्त होती है।
    - यदि अधिकारों से लड़ने के लिए समूह बना है तो सदस्यों को समूह के प्रयासों से आए परिवर्तन से लाभ पहुंचता है। जैसे गुंडो के उत्पीड़न से बचने के लिए स्वयं सहायता समूह बनाया गया है तो समुदाय को गुंडों के उत्पीड़न से कमी होने के कारण लाभ मिलता है।

- जब आप स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनते हैं तो आप 10–15 लोगों के साथ काम करते हैं। यही अगर 5 स्वयं सहायता समूह मिलकर काम करते हैं तो आपके साथ काम करने वालों का समूह और बढ़ जाएगा। इस प्रकार के बड़े समूह को संगठन या सामूहीकीकरण कहते हैं।
- छोटे स्वयं सहायता समूह की अपेक्षा बड़े समूह की शक्ति अधिक होती है क्योंकि उसके तहत अधिक लोग काम कर रहे होते हैं और यह समूह छोटे समूह की अपेक्षा समाज के लोगों के अधिकारों के लिए बेहतर ढंग से लड़ सकता है।
- जितना बड़ा समूह होगा उतनी ही जल्दी किसी समस्या के समाधान की संभावना होगी। जब कोई बड़ा समूह बात कहता है तो लोग भी उसपर ध्यान देते हैं क्योंकि वह काफी बड़ी संख्या में लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं।

सामाजिक अधिकार (एंटाइटेलमेंट) प्राप्त करना

उपरोक्त के अतिरिक्त, पियर टीआई की मदद से अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने में समुदाय के सदस्यों की मदद करते हैं जैसे–

- राशन कार्ड बनवाना
- एचआरजी के बच्चों की स्कूल में भर्ती करवाना
- बैंक खाता खुलवाना
- राज्य या केंद्र सरकार से प्राप्त अन्य कोई लाभ

- 3 से 4 छोटे समूहों में प्रतिभागियों को विभाजित करे और प्रत्येक समूह को बातचीत करने के मुद्दों की फ्लिपबुक दें (प्रशिक्षण पैकेज के साथ उपलब्ध)
- प्रत्येक समूह आपस में बातचीत करने के मुद्दों की फ्लिपबुक के प्रयोग का अभ्यास करे।
- समूह कार्य के बाद किसी प्रतिभागी को सामने आकर किसी विचारणीय मुद्दे पर बातचीत करके दिखाने कों कहें। प्रतिभागी फ्लिपबुक से जानकारी ले सकते हैं।
- अन्त में विशेषज्ञ का संक्षिप्त परिचय देते हुए प्रतिभागियों को बताएं कि अब वह सामाजिक अधिकारों के बारे में चर्चा करेंगे।
- यह सुनिश्चित कर लें कि विशेषज्ञ निम्नलिखित को अवश्य शामिल करें।
  - विभिन्न सामाजिक अधिकार (एंटाइटेलमेंट) जो एचआरजी को मिल सकते हैं।
  - एन.जी.ओ. के द्वारा पियर को सहयोग करना और इन आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए SACS & DAPCU से सहयोग दिलवाना।

सत्र और प्रशिक्षण का समापन निम्न बिन्दुओं द्वारा करें :

- एक पियर टीआई परियोजना की रीढ़ की हड्डी है ।
- उसकी कई भूमिकाएं हैं जिनपर पिछले 4 दिनों में चर्चा की गई है ।
- चूंकि पियर समुदाय का हिस्सा है इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि वह समुदाय के सदस्यों और परियोजना के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करे।
- एसटीआई, एचआईवी/एड्स और कंडोम के इस्तेमाल पर जानकारी देने के साथ साथ एक पियर को समुदाय में अन्य मुद्दों पर भी जानकारी प्रदान करनी है जैसे सामान्य स्वास्थ्य, स्वच्छता, अन्य उपलब्ध सरकारी सेवाएं आदि ।
- एक पियर को अपने किए गए कार्य का रिकार्ड रखना सुनिश्चित करना चाहिए क्योंकि इसके दो उद्देश्य है :

- यह उसे अपने किए गए कार्य को देखकर उसके अनुसार योजना बनाने में मदद करता है।
- यह परियोजना की योजना बनाने में और अधिक से अधिक समुदाय के सदस्यों तक पहुँचने की रणनीति बनाने में मदद करता है ।

- एक पियर को मुख्य मुद्दों पर केवल जानकारी ही नहीं देनी चाहिए (इस प्रशिक्षण में सीखी गई फ़िलपबुक का प्रयोग करके) बल्कि आई.पी.सी. टूल्स का प्रयोग करते हुए चर्चा और सहभागिता को प्रोत्साहित करना चाहिए।

दिवस 4 का मूल्याँकन

तिथि : **प्रतिभागी का नाम :**

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		😀	😐	🙁	
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1	मॉनिटरिंग एवं डॉक्यूमेन्टेशन (अवसर अन्तराल विश्लेषण, प्रेफरेन्स रैंकिंग, पियर मैप, पियर साप्ताहिक योजना एवं गतिविधि शीट)				
2	संकट का प्रबंधन				
3	एच.आई.वी. के अलावा अन्य मुद्दे (सामान्य स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूह एवं सामाजिक अधिकार)				

अन्य टिप्पड़ियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि , सामग्री , प्रणाली ओर विजुअल टूलों पर टिप्पड़ियाँ करें

सत्र 4: प्रशिक्षण मूल्यांकन

उद्देश्य : प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रति प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया को समझना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यशाला के बारे में अपने विचार व्यक्त करेंगे और प्रशिक्षक को फीडबैक दे पाएंगे।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : अभ्यास

सामग्री/तैयारी : प्रत्येक प्रतिभागी के लिए 18 टोकन के सैट (6 लाल, 6 हरे, 6 पीले), प्रश्नों की सूची, 6 बॉक्स। यदि टोकन उपलब्ध नही हैं तो प्रशिक्षक स्थानीय सामग्री जैसे चना, मटर या पत्थर का प्रयोग कर सकते हैं।

प्रकिया

- प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यशाला पर उनके विचार/अनुभवों को ईमानदारी से व्यक्त करने /फीडबैक देने का अनुरोध करें।
- प्रत्येक प्रतिभागी को 18 टोकन का एक सैट दे (हर प्रतिभागी को 6 लाल, 6 हरे, 6 पीले टोकन मिलेंगे)। इसी दौरान प्रशिक्षक 6 बॉक्स तैयार रखेगा (हर बॉक्स में एक चीरा होना चाहिए जिससे कि टोकन को उसके अन्दर से डाला जा सके)
- प्रशिक्षक फिर प्रतिभागियों को समझायेंगे कि वह प्रश्नों की सूची में एक प्रश्न पढ़ेंगे। प्रतिभागी निर्णय लेंगे कि उक्त प्रश्न के उत्तर के लिए उनके अनुसार कौन से रंग का टोकन उपयुक्त है और उस टोकन को बॉक्स में डाल देंगे, तो यदि उनका उत्तरः–
  - बहुत अच्छा है या बहुत उपयोगी है तो हरे रंग का टोकन बॉक्स में डालें
  - अगर ठीक है तो पीले रंग का टोकन डालें
  - अगर अच्छा नही या बहुत उपयोगी नही तो लाल रंग का टोकन डालें
- प्रत्येक प्रश्न के लिए प्रशिक्षक अलग–अलग बॉक्स का उपयोग करेगा।

फीडबैक के प्रश्न

1. प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान चर्चा की गई विषय–वस्तु उनके कार्य में कितनी उपयोगी है?
2. प्रशिक्षण कार्यशाला में अपनाए गए तरीके कैसे थे?
3. समय का प्रबंधन कैसा था?
4. आवासीय व्यवस्था कैसी थी?
5. भोजन की व्यवस्था कैसी थी?
6. कुल मिलाकर वह प्रशिक्षण को कैसे आंकेंगे?

- प्रतिभागियों से बचे हुए टोकन एकत्रित करें फिर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करें।
- प्रतिभागियों के उन सुझावों पर चर्चा करे जिनसे उनके लिए इसी प्रकार के रिफ्रेशर प्रशिक्षण को बेहतर बनाने में सहयोग मिलेगा।
- प्रशिक्षक सभी सदस्यों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन करें।

भाग 2 :
आई.डी.यू. पियर के प्रशिक्षण हेतु पुस्तिका

नोट

- इस प्रशिक्षण पुस्तिका का दूसरा भाग विशेषतौर पर उन पियर एजुकेटर के लिए है जो कि सुई से नशा लेने वाले लोगों के साथ काम कर रहे हैं।
- हांलाकि इस भाग के कुछ सत्र भाग एक के कुछ सत्रों के समान ही हैं, कुछ नए सत्र आई.डी.यू. समूह के लिए अलग से जोड़े गए हैं।
- इस भाग में जहां भी आवश्यकता है भाग एक के सत्रों का संदर्भ लिया गया है।
- प्रशिक्षक को चाहिए कि उन सत्रों में इस पुस्तिका का पहला भाग देखें।
- नए सत्रों में पावर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण का उल्लेख किया गया है जिससे चर्चा में सहायता मिलेगी, अतः प्रशिक्षक को चाहिए कि वह इन सत्रों में **laptop** और **LCD projector** का प्रबंध करे।

विषय सूची

परिचय

दिन 1

सत्र 1 : प्रथम सत्र

1 अ) : परिचय

1 ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय

1 स) : नियम बनवाना

सत्र 2 : पियर की भूमिका व गुण

सत्र 3 : नशीले दवाओं (ड्रग्स) को समझना

3 अ : ड्रग्स की मूलभूत जानकारी

3 ब : ड्रग्स से जुड़ी हानियां

सत्र 4 : हानि को कम करना

सत्र 5 : विश्वास और गोपनीयता का महत्व

दिन 2

सत्र 1 : यौन संचरित संक्रमण

सत्र 2 : कंडोम को बढ़ावा देना

1 अ) : पुरूष और महिला कंडोम

2 ब) : कंडोम की माँग और आपूर्ति

कंडोम की उपलब्धता और पहुँच का मानचित्रण

कंडोम की माँग का अनुमान

कंडोम गैप विश्लेषण

सत्र 3 : सुई और सिरिंज एक्सचेंज कार्यक्रम

सत्र 4 : ऑउटरीच और ऑउटरीच योजना

दिन 3

सत्र 1 : मॉनिटरिंग व डॉक्यूमेन्टेशन

टूल 1 : अवसर अन्तराल विश्लेषण

टूल 2 : प्रेफरेन्स रैंकिंग (प्राथमिकता के अनुसार श्रेणी में रखना)

टूल 3 : पियर मानचित्रण

टूल 4 : पियर की साप्ताहिक योजना एवं गतिविधि शीट

सत्र 2 : घाव से बचाव एवं उसका प्रबंधन

सत्र 3 : ड्राप–इन केन्द्र – डीआईसी

सत्र 4 : प्रशिक्षण मूल्याँकन

दिवस 1

दिवस 1

सत्र 1 : प्रथम सत्र (30 मिनट)

1 अ) : परिचय (10 मिनट) 10.00 – 10.10

1 ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय (10 मिनट) 10.10 – 10.20

1 स) : नियम बनवाना (10 मिनट) 10.20 – 10.30

सत्र 2 : पियर की भूमिका व गुण (45 मिनट) 10.30 – 11.15

2 अ) : पियर शिक्षा का अर्थ व अवधारणा

– केस स्टडी व रोल प्ले
– ब्रेनस्टार्मिंग : पियर की भूमिका, ज़िम्मेदारियां व गुण

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.15 – 11.30

सत्र 3 : नशीले दवाओं (ड्रग्स) को समझना (1 घंटा, 45 मिनट)

3 अ : ड्रग्स की मूलभूत जानकारी 11.30 – 12.15

– प्रस्तुतिकरण
– चर्चा

3 ब : ड्रग्स से जुड़ी हानियां 12.15 – 01.15

– ब्रेनस्टॉर्मिंग – ड्रग्स से जुड़ी हानियां
– प्रस्तुतिकरण – हानियों का वर्गीकरण **(hierarchy)** तथा हानि यों का कम करना

भोजनावकाश (45 मिनट) 01.15 – 02.00

सत्र 4 : हानि को कम करना (1 घंटा) 02.00 – 03.00

– प्रस्तुतिकरण – रणनीतियां
– चर्चा – हानि को कम करने के उद्देश्य
– संवादात्मक **(interactive)** सत्र

सत्र 5 : विश्वास और गोपनीयता का महत्व (30 मिनट) 03.00 – 03.30

पहले दिन का मूल्यांकन (15 मिनट) 03.30 – 03.45

सत्र 1 : प्रारंभिक सत्र

अ) : परिचय

ब) : अपेक्षाएं, समय सारिणी से परिचय

स) : नियम बनवाना

भाग एक के दिवस 1 : सत्र 1 का संदर्भ लें

सत्र 2 : पियर की भूमिका और गुण

सत्र 2 : पियर की भूमिका और गुण

उद्देश्य : प्रतिभागियों को लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में पियर शिक्षा का अर्थ समझाना

प्रतिभागियों को लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में पियर की भूमिका समझाना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी पियर, एजुकेटर, पियर एजुकेटर, पियर शिक्षा इन शब्दों का अर्थ समझें और अपने आप को पियरएजुकेटर की भूमिका में देखें । पियर एजुकेटर के रूप में उन्हें क्या करना है । इससे उन्हें अपनी भूमिका निभाने में मदद मिलेगी ।

समयावधि : 45 मिनट

विधि : चर्चा, समझाना, रोल प्ले , सूचीकरण

सामग्री/तैयारी : चार्ट पेपर , मार्कर पेन ।

प्रकिया

- प्रतिभागियों से पूछें कि '' पियर एजुकेटर कौन है ?'' , चर्चा को प्रोत्साहित करें ।
- प्रतिभागियों को पियर, एजुकेटर , पियर एजुकेटर का अर्थ बताएं ।

पियर :

⇒ समान समूह का व्यक्ति जैसे :

- स्कूल में – छात्र पियर हो सकते हैं
- औघोगिक परिवेश में – कर्मचारी पियर हो सकते हैं
- चिकित्सालय के परिवेश में – डॉक्टर पियर हो सकते हैं

⇒ इसी प्रकार यौन कार्य में सभी यौन कर्मी (किसी भी श्रेणी से – सड़क पर आघारित , ढ़ाबे पर आघारित , घर आधारित , लॉज आधारित व कोठे पर आधारित) पियर हो सकती हैं । एम.एस. एम के परिवेश में –सभी पुरूष जो अन्य पुरूषों के साथ यौन संबंध रखते हैं , पियर हो सकते हैं । आई.डी.यू के परिवेश में सभी महिलाएं और पुरूष जो इंजेक्शन से नशा करते हैं , पियर हो सकते हैं ।

⇒ इस प्रकार पियर उस व्यक्ति को कहते हैं जो उसी समूह का होता है इसलिए अपने समूह के मुद्दों और लोगों को बेहतर समझता है ।

एजुकेटर

- एजुकेटर उस व्यक्ति को कहते हैं जो शिक्षा/सूचना प्रदान करता है और परिवर्तन लाने के लिए जागरूकता फैलाता है ।
- शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ औपचारिक शिक्षा से नहीं होता है इसमें दो लोगों के बीच होने वाली वार्ता भी शामिल है ।

पियर एजुकेटर :

- पियर उसी समूह का वह व्यक्ति है जो समूह के अन्य सदस्यों के लिए शिक्षक की भूमिका निभाता है और अपने साथियों के साथ काम करके समूह के लोगों के आचरण और व्यवहार में बदलाव लाने का प्रयास करता है।

- इस प्रकार एक आई.डी.यू पियर एजुकेटर वह व्यक्ति है जो आई.डी.यू समूह का सदस्य होता है और अपने समूह के साथ काम करता है ।
- लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम में समूह के सदस्यों में एच.आई.वी/एड्स एवं एस.टी.आई पर सूचना प्रदान करने की , जोखि़म को कम करने की , कंडोम के प्रयोग को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी पियर की होती है । साथियों के इस दबाव से व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिलती है ।
- कंडोम , ल्यूब्रीकेन्ट, सुइंयों और सिरिंज के वितरण की ज़िम्मेदारी भी पियर की होती है ।
- पियर परियोजना की सफलता का आंकलन करने के लिए मूलभूत आँकड़े **(basic data)** देते हैं ।
- कोर ग्रुप में एच.आई.वी. के संक्रमण को कम करने के लिए एक पियर को एन.जी.ओ./सी.बी.ओ. गाइडलाइन के अनुसार मानदेय दिया जाता है।
- समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत जोखिमों को समझने की ज़िम्मेदारी एक पियर की होती है और वह अन्य सदस्यों के साथ काम करके स्वस्थ और अच्छे जीवन को सुनिश्चित करने के लिए इन जोखिमों को संबोधित करता है ।

(Adapted from 'Training Module for use with Peer Educators', Care India)

- 3 प्रतिभागियों को बुलाएं और उन्हें निम्नलिखित केस स्टडी के बारे में बताकर उनसे इसपर एक रोल प्ले करने को कहें ।

केस स्टडी 1

एक पियर एजुकेटर जो परियोजना के साथ एक साल से है और संबंधित आउटरीच कार्यकर्ता समुदाय के एक ऐसे सदस्य से मिलते हैं जो पियर एजुकेटर की भूमिका के लिए चुना गया है । पुराना पीयर एजुकेटर इस नए सदस्य को उसकी भूमिका समझाता है ।

- उन्हे तैयारी करने के लिए 5 मिनट दें ।
- रोल प्ले के समय सह प्रशिक्षक पियरएजुकेटर की उन भूमिकाओं की सूची बनाएं जो रोलप्ले के माध्यम से निकल कर आएं।
- रोल प्ले समाप्त होने के बाद भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों की उस सूची को पढ़ें जो सह प्रशिक्षक ने बनाई है और बाकी प्रतिभागियों से उन भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों को सूची में जोड़ने को कहें जो रोल प्ले में छूट गयीं थी ।
- यदि कोई बिन्दु छूट जाए तो उसे जोड़ने से पहले उसपर चर्चा करें और जब प्रतिभागी स्वीकार कर लें तब ही उन बिन्दुओं को सूची में जोडें ।

- पियरएजुकेटर की भूमिका और ज़िम्मेदारियों की सूची बनाकर बोर्ड पर लिखें । नीचे दी गयी सूची से संदर्भ ले सकते हैं : –

पीयर शिक्षक की भूमिका

- आउटरीच करना ।
  - ➢ समुदाय के नए सदस्यों की पहचान करने के साथ अपने नेटवर्क के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखना ।
    - ○ आई.डी.यू. परियोजना में एक पीयर समुदाय के 40 सदस्यों के साथ निरंतर संपर्क बनाएगा ।
  - ➢ हर माह में उनसे सप्ताह में एक बार या 15 दिन में एक बार संपर्क करना ।
- अपने सभी संपर्कों से 15 दिन में कम से कम एक बार संपर्क करें और यह समझाएं कि उनसे नियमित संपर्क बनाए रखना क्यों महत्वपूर्ण है ।
- ज़रूरत पड़ने पर समुदाय के सदस्यों को एस.टी.आई , एच.आई.वी/एड्स , एन.एस.ई.पी , ओ.एस.टी , कंडोम उपयोग आदि पर संवाद आधारित आई.पी.सी देने में सक्षम होना ।
- ओ.आर.डबलू. के साथ हर सदस्य के जोखिम को समझना और उसके अनुसार योजना बनाना।
- समुदाय को सेवा और सामग्री लेने के लिए प्रेरित करना
  - ➢ समुदाय के सदस्यों को डी.आई.सी आने के लिए प्रेरित करना और समझाना कि उनको डी.आई.सी क्यों आना चाहिए
  - ➢ कंडोम वितरण करना
  - ➢ सुइयों और सिरिंज का वितरण करना (सिर्फ आई.डी.यू. पीयर के लिए)
  - ➢ ज़रूरत पड़ने पर समुदाय के सदस्यों को रेफर करना
- ओ.आर.डबलू और समुदाय के साथ उन स्टेकहोल्डर की पहचान करना जिनका समुदाय के सदस्यों के जीवन पर साकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता हो । स्टेकहोल्डर के साथ पैरवी करना।
- प्रशिक्षण प्राप्त करना ।
- डी.आई.सी का रखरखाव ।
- सरकार द्वारा चलाए जा रहे कल्याण कार्यक्रमों के लिए माँग पैदा करना और लाभार्थियों की पहचान में सहायता करना ।
- सेवाओं की बेहतरी और सूचना एकत्रित करने के लिए निरंतर कंडोम डिपो पर जाना।
- उच्च जोखिम व्यवहार की पहचान करने और समझने के लिए प्राथमिकता के आधार पर समूहों के कौशल का विकास करना जैसे कंडोम का प्रयोग, कण्डोम के लिए मोलभाव और यौन जनित रोगों की पहचान इत्यादि।
- समीक्षा बैठकों में भाग लेना।
- दैनिक रिपोर्ट बनाकर ओ.आर.डब्लू को प्रस्तुत करना ।
- क्रियान्वित गतिविधियों की जानकारी देना ।
- सभी प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लेना ।

(From NACP III – Operational Guidelines for Targeted Interventions)

- रोलप्ले का संदर्भ लेते हुए पियरएजुकेटर की विशेषताओं पर चर्चा करें । चार्ट पेपर पर बिन्दु लिखें ।
- यदि ज़रूरत पड़े तो सूची में और बिन्दु जोड़ें। नीचे दी गयी सूची का संदर्भ लें : –

पियर एजुकेटर की विशेषताएं

- ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध होना
- परियोजना के उद्देश्यों और लक्ष्यों के प्रति समर्पित
- समुदाय के मूल्यों के प्रति संवेदनशील
- समुदाय के लिए ज़िम्मेदार
- दूसरों के विचारों और व्यवहार के प्रति आदर और सहनशीलता
- अच्छा श्रोता
- अच्छा वक्ता
- आत्म–विश्वास
- नेतृत्व करने की क्षमता
- फील्ड मे सीखने और प्रयोग करने को तैयार
- संकट के समय पर समुदाय के लोगों के लिए उपलब्ध होना
- नए पीयर को तैयार करने और ज़िम्मेदारियों को बांटने की क्षमता
- परियोजना की बेहतरी के लिए ज़िम्मेदारियाँ लेने के लिए सामुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहित करना

(From NACP III – Operational Guidelines for Targeted Interventions)

सत्र का समापन

- लक्षित हस्तक्षेप परियोजना में परिवर्तन लाने के लिए, पियर की भूमिका निर्धारित होती है।
- समुदाय के सदस्य होने के नाते वह अपने साथियों के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं और इसी लिए समुदाय के विषय में पूरी जानकारी होने के कारण वह कार्यक्रम में अपना पूरा योगदान देते हैं ।
- पियर परियोजना के कर्मचारी और समुदाय के सदस्यों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं।
- परियोजना में रहते हुए वह अपने जीवन और नौकरी के कौशल को भी विकसित करते हैं और इस प्रकार उनका आत्म विश्वास और आत्म सम्मान भी बढ़ता है ।
- इससे वह अपनी पहचान पुनः बना पाते हैं और पीयरएजुकेटर का बढ़ा हुआ आत्म विश्वास और आत्म सम्मान, समुदाय को सशक्त बनाने में सहायक होता है । स्वास्थ्य एजुकेटर के रूप में शुरूवात करके पियरएजुकेटर एक लीडर के रूप में समुदाय को गतिशील बनाते हैं जिससे कि सामाजिक बदलाव आता है।
- पियर की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उच्च जोखिम समूह (जिनका वह नेतृत्व करते हैं) का विश्वास प्राप्त करना और उनमें अपनी एक पहचान बनाना है ।
- पियर मे कुछ बुनियादी गुण होने चाहिए जो उनके काम में उनकी सहायता करेंगे । जिन पियर में यह गुण नहीं हैं उन्हें इन गुणों को सीखने का प्रयास करना चाहिए जिससे वह अपना काम और अच्छी तरह कर सकें ।

सत्र 3 : नशीले दवाओं (ड्रग्स) को समझना

अ : ड्रग्स की मूलभूत जानकारी

ब : ड्रग्स से जुड़ी हानियां

सत्र 3 : **नशीले दवाओं (ड्रग्स) को समझना**

उद्देश्य : प्रतिभागियों को ड्रग्स से संबंधित महत्वपूर्ण ज्ञान देना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी ड्रग्स और ड्रग्स के उपयोग के संबंध में अपना ज्ञान बढ़ा पाएंगे।

अवधि : 45 मिनट

विधि : प्रस्तुतिकरण , ब्रेनस्टार्मिंग , चर्चा

तैयारी/सामग्री : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण, लैपटॉप व प्रोजेक्टर, चार्ट पेपर, मार्कर पेन

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों से कहें कि वह आपस में चर्चा करके मन में आ रही विभिन्न नशीली दवाओं के नामों की सूची चार्ट पेपर पर बनाएं ।
- नशीली दवाओं की तीन मुख्य श्रेणियों – उत्तेजक **(stimulants)**, अवसाद **(depressant)** और हैलोसिनोजन **(hallucinogens)** को समझाने के लिए पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण का प्रयोग करें ।
- नशीली दवाओं के प्रयोग के चरणों और दवाओं के प्रभाव को एक प्रस्तुतिकरण के माध्यम से प्रतिभागियों को समझाएं ।
- प्रस्तुतिकरण के दौरान इस विषय पर प्रतिभागियों की सभी शंकाओं को स्पष्ट करें ।

निम्नलिखित पर ज़ोर देते हुए सत्र का समापन करें

- उत्तेजक अवसाद, और हैलोसिनोजन – यह नशीली दवाओं की तीन मुख्य श्रेणियाँ हैं ।
- औषधियों को कानूनी या गैरकानूनी में वर्गीकृत किया जा सकता है (दवा पर निर्भर करता है) ।
- नशीली दवाओं के प्रयोग के कई तरीके हैं , उदाहरण – पीना , निगलना , चबाना , इंजेक्शन , इनहेलिंग, सूंघने से और धूम्रपान से ।
- नशीली दवाओं का उपयोग ड्रग लेनी की एक निरंतर प्रक्रिया है जो प्रायोगिक उपयोग से शुरू होकर यदा कदा उपयोग से होती हुई नियमित उपयोग तक पहुंचती है और अंततः नशा लेने वाला उस पर निर्भर हो जाता है। यह ''सामान्य ड्रग उपयोग कैरियर'' भी कहलाता है।
- ड्रग का प्रभाव विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है – स्वयं ड्रग (जैसे दवा के गुण, इसकी खुराक, उपयोग की अवधि और ड्रग लेने की विधि), वह व्यक्ति जो ड्रग ले रहा है अर्थात उसका मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, वह वातावरण जिसमें ड्रग ली जा रही है।
- ड्रग के उपयोग के परिणाम स्वरूप अनेक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जिनमें स्वास्थ्य संबंधी, सामाजिक, व्यवसाय संबंधी, आर्थिक, पारिवारिक, कानूनी समस्याएं सम्मिलित हैं।
- ड्रग के प्रभाव से जोखिम पूर्ण यौन व्यवहार भी हो सकता है जिससे एच.आई.वी. संक्रमण की संभावना और बढ़ जाती है।

सत्र 3 ब ड्रग्स से जुड़ी हानियां

सत्र 3 ब : ड्रग्स से जुड़ी हानियां

उद्देश्य : प्रतिभागियों को नशीली दवाओं के उपयोग से जुडी हानियों के बारे में बताना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी ड्रग से जुड़ी हानियों, हानियों के बीच संबंध, हानियों का वर्गीकरण एवं हानि को कम करने में प्राथमिकता से संबंधित ज्ञान को बढ़ा पाएंगे।

अवधि : 1 घंटा

विधि : प्रस्तुतिकरण, ब्रेनस्टार्मिंग

तैयारी/सामग्री : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप–प्रोजेक्टर, छोटे आकार में कटा चार्ट पेपर , मार्कर पेन

प्रक्रिया

- ड्रग उपयोग से जुड़ी हानियां, नशा लेने वाले व्यक्ति के जीवन में यह हानियां अन्य हानियों के साथ मिलकर कैसे प्रभाव डालती हैं । ब्रेनस्टार्म करने के बाद प्रतिभागियों से कहें कि इन हानियों को चार्ट पेपर के टुकड़ों पर लिखकर दीवार पर लगाएं।
- समूह को प्रोत्साहित करें कि इन हानियों को कम नुकसान से अधिक नुकसान के आधार पर श्रेणीबद्ध **(ranking)** करें।
- श्रेणी के अनुसार चार्ट पेपर के टुकड़ों को दीवार पर लगाएं।
- हानियों के वर्गीकरण **(hierarchy)** का वर्णन करते हुए पावर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण दिखाएं साथ ही उन हानियों पर विशेष ध्यान देते हुए हानियों को कम करने की आवश्यकता पर बल दें जो कि जन स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को निर्धारित करती है।

निम्नलिखित पर चर्चा करते हुए सत्र का समापन करें:

- ड्रग के उपयोग से जुड़ी हानियों मोटे तौर से शारीरिक, व्यवसायिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं कानूनी होती हैं।
- ड्रग लेने वाले व्यक्ति के जीवन के विभिन्न प्रकार से प्रभावित करने वाली हानियों एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रहती हैं।
- ड्रग से संबंधित हानियों का पारस्परिक संबंध एक दुष्चक्र **(vicious)** का निर्माण करता है।
- अन्य पदार्थों के निरन्तर उपयोग से यह हानियां और बढ़ सकती हैं।
- हानियों के वर्गीकरण से पता चलता है कि विभिन्न हानियों का स्तर **(severity)** अलग होता है।
- यद्यपि हानियों का स्तर **(severity)** अलग अलग हो सकता है फिर भी हानि कम करने से संबंधित कार्यक्रम में उन हानियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जो जन स्वास्थ्य के लिए प्राथमिक हों।

सत्र 4 : हानि को कम करना

सत्र 4 : हानि को कम करना

उद्देश्य : प्रतिभागियों को हानियों को कम करने की मुख्य अवधारणाओं, हानि को कम करने के पैकेज के घटकों **(component)** और एच.आई.वी. के बचाव में हानि को कम करने की भूमिका को समझाना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी नशीली दवाओं के नुकसान को कम करने का अर्थ, लाभ और रण्नीतियां समझ पाएंगे।

अवधि : 1 घंटा

विधि : प्रस्तुतिकरण , ब्रेनस्टार्मिंग , चर्चा

तैयारी/सामग्री : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप–प्रोजेक्टर , चार्ट पेपर , मार्कर पेन (प्रशिक्षक को एन.ए.सी.पी. **III** के अन्तर्गत हानि को कम करने संबंधी फ्रेमवर्क की जानकारी होनी चाहिए। टी.आई. गाइडलाइन का संदर्भ लें)

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों को पावर प्वाइंट के माध्यम से नशीली दवाओं के दुरुपयोग के प्रबंधन की रणनीति से अवगत कराएं।
- प्रतिभागियों को विभिन्न रणनीतियों की अच्छाई और बुराई के बारे में ब्रेनस्टार्म करवाएं ।
- पावर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण का प्रयोग करते हुए मुख्य अवधारणाओं, सिद्धान्तों और रणनीतियों सहित हानि को कम करने के फ्रेमवक पर प्रकाश डालें।

निम्नलिखित बातों पर जोर दें :

- हानि में कमी एक ऐसा ढांचा है जिसमें आईयूडी और उनके यौन साथी के बीच एचआईवी से प्रभावी ढंग से बचाव किया जा सकता है।
- हानि में कमी हस्तक्षेप का ध्यान अवास्तविक लक्ष्य जैसे पूरा संयम की तुलना में, उन विकल्पों पर दिया जाता है जिनके उपयोग से एस.टी.आई./एच.आई.वी./एड्स संक्रमण से आसानी से बचा जा सके।
- एच.आई.वी. के संक्रमण से बचने के लिए हानि को कम करने का उद्देश्य है एच.आई.वी. के संचरण को कम करना जैसे सुई/सिरिंज, ड्रग को बनाने व नशा लेने वाले उपकरणों का साझा प्रयोग और असुरक्षित यौन व्यवहार जैसे उच्च जोखिम व्यवहारों को कम करना।
- हानि को कम करने की तीन प्रमुख स्थितियां हैं । पहली स्थिति में एन.एस.ई.पी. **(NSEP)** और आउटरीच शामिल है । दूसरी स्थिति में ओरल प्रतिस्थापन थेरेपी **(OST)** पर ध्यान दिया जाता है। स्थिति 1 और 2 के एक साथ होने पर व्यवहार में परिवर्तन आता है तथा संक्रमित सुई अथवा अन्य उपकारण के स्थान पर ड्रग लेने वाला व्यक्ति सुरक्षित सुई का प्रयोग करता है और ड्रग को सुई से लेने की वजाए मुख से लेने लगता है। स्थिति 3 में एडवोकेसी व अनुकूल वाताकरण हेतु रेफरल एवं अन्य सेवाओं के बीच परस्पर संबंध पर ध्यान दिया जाता है।

- नीडिल सिरिंज एक्सचेंज प्रोग्राम व ओरल प्रतिस्थापन थेरेपी **(OST)** हानि को कम करने के पैकेज का एक अभिन्न अंग है। जहां एक ओर **NACP II** में स्थिति 1 व 3 को प्राथमिकता दी गई है वहीं **NACP III** में स्थिति 2 ओरल प्रतिस्थापन थेरेपी **(OST)** पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।
- रणनीतियों का पारस्परिक मेल और हस्तक्षेपों को अलग अलग करके इस्तेमाल करना हानि को कम करने से संबंधित दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण पहलू हैं ।
- हानि को कम करने से, ड्रग से जुड़ी हुई हानियों में तत्काल कमी के लिए एक व्यावहारिक **(practical)** और लचीली **(flexible)** पद्धति उपलब्ध होती है ।

सत्र 5 : विश्वास और गोपनीयता का महत्व

उद्देश्य : प्रतिभागियों को आई.डी.यू. परियोजनाओं में गोपनीयती के मुद्दों को समझाना और नैतिकता एवं संवेदनशीलता जैसे मुद्दों के लिए प्रोत्साहित करना।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : प्रस्तुतिकरण, ब्रेनस्टार्मिंग, चर्चा

प्रक्रिया

ध्यान दें : यदि यह अभ्यास ईमानदारी से किया जाए तो एक व्यक्ति का राज़ दूसरे व्यक्ति के हाथ में आ जाएगा। इससे समस्या हो सकती है यदि दूसरा व्यक्ति, जिसके हाथ में राज़ है वह उतना संवेदनशील न हो और वह राज़ को पढ़ ले। अतः एक प्रशिक्षक के रूप में यह सुनिष्चित करना जरूरी है कि किसी भी प्रतिभागी के द्वारा गोपनीयता भंग नहीं हो।

- सभी प्रतिभागियों को एक गोले में बैठने को कहें और समझाएं कि विश्वास से संबंधित इस अभ्यास को गंभीरता से लें।
- अब प्रतिभागियों से उनके जीवन के उस राज़ के बारे में सोचने को कहें जिसे वह किसी और को नहीं बताना चाहते ।
- इस राज़ को एक कागज के टुकड़े पर लिखने को कहें और उसे मोड़ कर किसी दूसरे को न दिखाने के लिए कहें।
- अब प्रतिभागियों से अपना कागज़ (राज़) अपनी बाएं ओर बैठे व्यक्ति को देने को कहें।
- उनसे पूछें कि जब उनका राज़ किसी और व्यक्ति के पास है तो वह कैसा महसूस कर रहे हैं तथा दूसरे का राज़ उनके पास होने पर उन्हें कैसा लग रहा है।
- अब प्रतिभागियों से वह राज़ उस व्यक्ति को वापस लौटाने को कहें जिसने उन्हें दिया था और इसके बाद उनसे उस कागज़ को फाड़ कर नष्ट करने को कहें।
- जब प्रतिभागी सामान्य महसूस करने लगें और यह समझ लें कि किसी ने भी उनका राज़ नहीं जाना तब प्रशिक्षक निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालें।
    - आई.डी.यू. परियोजना में हमारे कार्य में गोपनीयता का यह खेल कितना महत्व रखता है।
    - लोग किस तरह की बातें आपस में बांट सकते हैं जिन्हें गोपनीय रखना चाहिए?
    - गोपनीयता के भंग होने पर उसके क्या परिणाम हो सकते हैं?
    - जब हम उच्च जोखिम व्यवहार वाले लोगों के साथ काम करते हैं तो हमें और किन पहलुओं पर महत्व देना चाहिए?

(Adapted from “Tools Together Now” International HIV/AIDS Alliance – Frontiers Prevention Project)

दिवस 1 का मूल्याँकन

तिथि : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		😀	😐	😟	
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1अ	**परिचय**				
1ब	**अपेक्षाएं कार्यप्रणाली के विषय में सूचित करना**				
1स	**नियम बनाना**				
2	**पियर की भूमिका व गुण**				
3अ	**नशीली दवाओं को समझना**				
3ब	**ड्रग्स से जुड़ी हानियां**				
4	**हानि को कम करना**				
5	**विश्वास और गोपनीयता का महत्व**				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि, सामग्री, विधि आदि पर भी टिप्पणियाँ करें

दिवस 2

दिवस 2

पहले दिन का पुनरावलोकन (15 मिनट) 10.00 – 10.15

सत्र 1 : यौन संचरित संक्रमण (45 मिनट) 10.15 – 11.00

- अवधारणाओं पर प्रस्तुतिकरण
- पियर की भूमिका पर चर्चा

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.00 – 11.15

सत्र 2 : कंडोम को बढ़ावा देना (2 घंटे)

2 अ) : पुरूष और महिला कंडोम (30 मिनट) 11.15 – 11.45

- पुरूष व महिला कंडोम – प्रस्तुतिकरण
- कंडोम प्रदर्शन

2 ब) : कंडोम कि माँग और आपूर्ति (1 घंटा 30 मिनट) 11.45 – 01.15

- प्रस्तुतिकरण और अभ्यास – कंडोम की उपलब्धता और पहुँच का मानचित्रण
- प्रस्तुतिकरण और अभ्यास – कंडोम की माँग का अनुमान
- प्रस्तुतिकरण और अभ्यास – कंडोम अंतराल विष्लेशण

भोजन अवकाश (45 मिनट) 01.15 – 02.00

सत्र 3 : सुई और सिरिंज विनियम (एक्सचेंज) कार्यक्रम (1 घंटा) 02.00 – 03.00

प्रस्तुतिकरण – अवधारणा व ऑपरेश्नल पहलू

अभ्यास – सुई व सिरिंज का प्रदर्शन

सत्र 4 : ऑट्रीच योजना (1 घंटा) 03.00 – 04.00

प्रस्तुतिकरण

समूह कार्य – ऑउटरीच योजना

सामूहिक प्रस्तुतिकरण

दिवस 2 का मूल्याँकन (15 मिनट) 04.00 – 04.15

सत्र 1 : यौन संचरित संक्रमण

सत्र 1 : यौन संचरित संक्रमण

उद्देश्य : प्रतिभागियों को एस.टी.आई. की मूलभूत जानकारी देना।
एसटीआई से संबंधित भ्रान्तियों एवं शंकाओं को दूर करना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी निम्न पर जानकारी ले पाएंगेः

- एसटीआई के प्रकार
- एसटीआई के चिन्ह **(sign)** एवं लक्षण
- एसटीआई का प्रसार एवं उपचार
- एस.टी.आई. व एच.आई.वी. के बीच संबंध

प्रतिभागी एसटीआई से बचाव तथा नियंत्रण में अपनी भूमिका जान पाएंगे।

अवधी : 45 मिनट

विधि : चर्चा, प्रस्तुतिकरण, समझाना

सामग्री / तैयारी : पिक्चर कार्ड – एस.टी.आई. , चार्ट पेपर और मार्कर पेन

जैसा कि यह एक तकनीकी सत्र है, यदि आवश्यक हो तो प्रशिक्षक एक डाक्टर को रिसोर्स व्यक्ति के रूप में बुला सकता है।

प्रक्रिया :

नोट : जितना संभव हो प्रशिक्षण के दौरान स्थानीय भाषा का प्रयोग करें जिससे प्रतिभागी विषय–वस्तु को अच्छे से समझ सकें।

- प्रतिभागियों को एस.टी.आई. से संबंधित महत्वपूर्ण बातें बताएं जो इस सत्र में शामिल हैं । प्रत्येक विषय पर विस्तार से चर्चा करें ।
- प्रतिभागियों से पूछें , यदि किसी को कोई भी शंका है । सभी शंकाओं को दूर करने का प्रयास करें।

एस.टी.आई. का प्रसार एफ.एस.डब्लू/एम.एस.एम/आई.डी.यू के बीच अधिक है और यह उनके व्यावसायिक खतरों में से एक है । इनके बीच एस.टी.आई. की अधिक दर का कारण एसटीआई के बारे में जानकारी और ज्ञान की कमी है । इन समुदायों में इस समस्या के अलावा, एस.टी.आई. के बारे में बहुत सी भ्रन्तियां और शंकाएं हैं । इसके अलावा अधिकतर एफ.एस.डब्लू अशिक्षित है जिसके कारण वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी समझने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए एस.टी.आई. के बारे में पता करने की रुचि नहीं रखती हैं ।

अतः उपरोक्त मुद्दों को देखते हुए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि एफ.एस.डब्लू / एम.एस.एम/आई.डी.यू समुदायों में एसटीआई के बारे में और उसके लक्षणों पर उचित जानकारी का प्रसार किया जाए ।

एस.टी.आई. का अर्थ :

एस.टी.आई. का मतलब यौन संचरित संक्रमणं है । यह वायरस, बैक्टीरिया या फफूंद सूक्ष्मजीव **(fungal microorganisms)** की वजह से होता है , जो एक संक्रमित साथी के साथ असुरक्षित यौन संबंध के माध्यम से संचरित होते हैं ।

एस.टी.आई. के लक्षण (पिक्चर कार्ड का प्रयोग करें)

पुरूषों में एस.टी.आई.

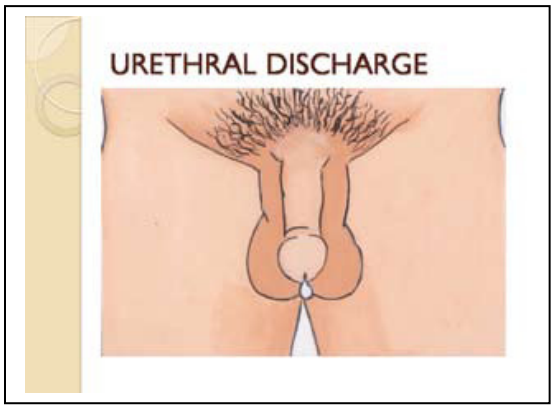

मूत्र मार्ग से स्राव

- पेशाब करते समय जलन व दर्द
- बार बार पेशाब आना
- मूत्र मार्ग से पीले या सफेद रंग का स्राव आना
- स्राव म्यूकस के समान पतला या मोटा हो सकता है

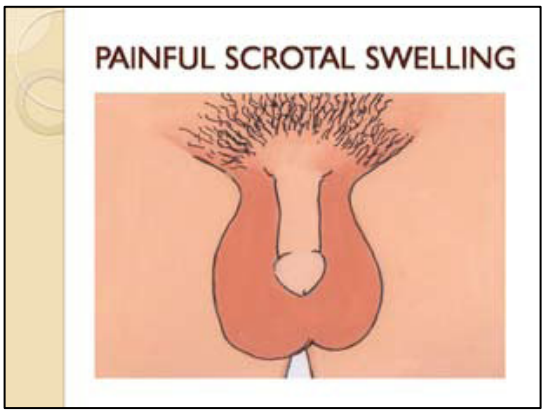

अण्डकोष में दर्द व सूजन

- अण्डकोष में दर्द और सूजन
- पेशाब करते समय जलन व दर्द
- बेचैनी एवं बुखार जैसे लक्षण
- मूत्र मार्ग से स्राव का इतिहास

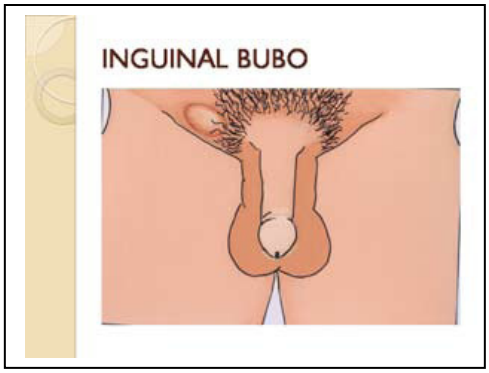

इन्गायूनल बूबो (कांच में गांठ)

- कांच में दर्द और सूजन
- जननांग के अलसर/घाव और स्राव का इतिहास
- बेचैनी एवं बुखार जैसे लक्षण

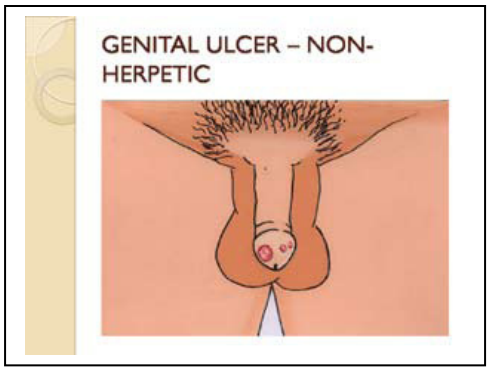

जननांग के अलसर/घाव नॉन हरपेटिक

- जननांगों में एक या कई अलसर – दर्द वाले एवं बिना दर्द वाले
- जननांगों में जलन
- लिम्फ नोड का बढ़ना

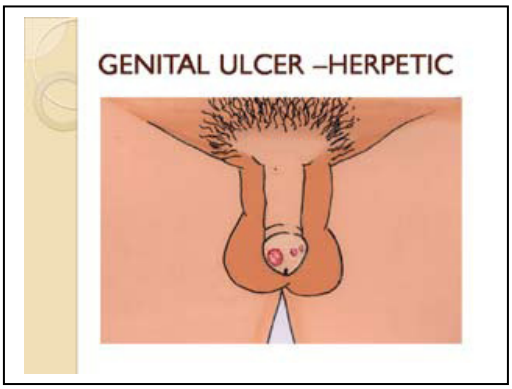

जननांग के अलसर/घाव हरपेटिक

- पानी भरे हुए दाने, दर्द, जननांगों में घाव
- जननांगों में जलन
- घाव का बार बार होना

महिलाओं में एस.टी.आई.

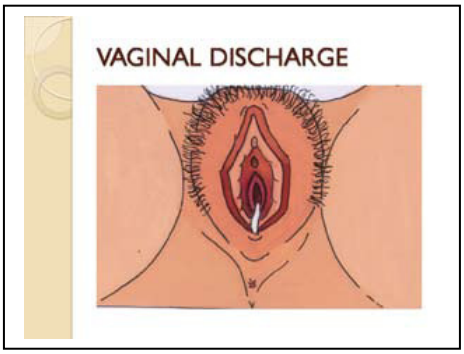

योनि से स्राव

- योनि से स्राव (पनीर जैसा सफेद)
- स्राव का प्रकार – मात्रा, रंग और गंध
- जननांगों के आसपास खुजली

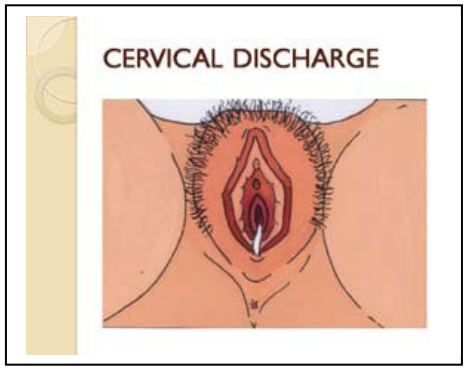

बच्चेदानी के मुंह (सरवाइकल) से स्राव

- बदबूदार पीले रंग का स्राव
- स्राव का प्रकार , मात्रा , रंग और गंध
- पेशाब करते समय जलन, बार बार पेशाब आना

पेढू में दर्द

- पेढू में दर्द
- बुखार
- योनि से स्राव
- अनियमित माहवारी जैसे बहुत ज्यादा या अनियमित रक्तस्राव
- महवारी के दौरान दर्द
- पीठ/कमर में दर्द
- cervical motion tenderness

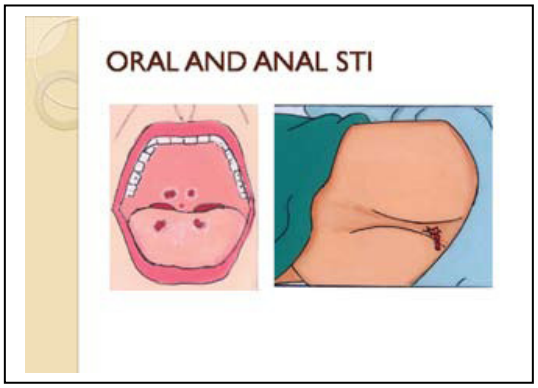

मुख एवं गुदा की एस.टी.आई.

- फोड़े
- फुन्सी
- छाले
- स्राव
- मुख या गुदा भाग में उभार/सूजन

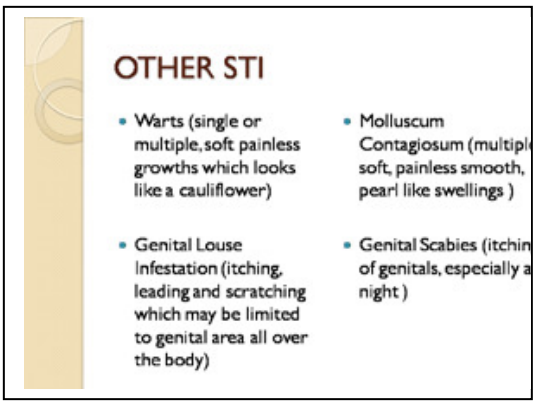

अन्य एस.टी.आई.

- मस्से (एक या अनेक, बिना दर्द का उभार जो गोभी की तरह दिखे)
- जननांगों में जुएं (खुजली व खरोचना)
- जननांगों में स्केबीस (जननांगों में खुजली विशेषकर रात के समय
- मॉलास्कम कॉन्टेजियोसम (कई, कोमल, बिना दर्द के, मोती जैसी सूजन)

एस.टी.आई. का संचरण व बचाव

अधिकांशतः एस.टी.आई. यौन संबंधों के द्वारा ही फैलते हैं। सिफलिस, हैपटाइटिस बी, एच.आई.वी. इत्यादि बीमारियां संक्रमित रक्त चढ़ाने अथवा सुई व सिरिंजों के साझा प्रयोग से फैलते हैं। हांलाकि उपयुक्त सावधानी बरत कर इन संकमणों से बचा जा सकता है। इन रोगों से बचने के लिए रक्त की जांच कराना एक महत्वपूर्ण कदम है।

उपचार

जितनी जल्दी हो सके एस.टी.आई. का इलाज कराना चाहिए। अधिकांश एस.टी.आई. पूरी तरह से ठीक हो सकते हैं (एच.आई.वी. और हैपटाइटिस को छोड़कर)। जैसे ही लक्षण/चिन्ह दिखाई दें तुरन्त डाक्टर के पास जाना चाहिए। परन्तु एफ.एस.डब्लू./एम.एस.एम. के परिपेक्ष में नियमित रूप से मासिक स्वास्थ्य जांच कराना ही सबसे सुरक्षित तरीका है। जब डाक्टर एस.ओ.आई. के लिए दवा देता है तो दवा का पूरा कोर्स करना बहुत ज़रूरी है। दवा बीच में छोड़ देने से दोबारा संक्रमण होने का खतरा बना रहता है। जब तक एस.टी.आई. पूरी तरह ठीक न हो जाए यौन संबंध न बनाएं, यदि ऐसा करना संभव न हो तो कम से कम कण्डोम का प्रयोग अवश्य करें।

एस.टी.आई. इलाज न कराने के परिणाम

- गंभीर बीमारियां हो सकती हैं
- एच.आई.वी. (घाव वाला एस.टी.आई.) होने की संभावना
- सिफलिस का इलाज न कराने से मानसिक निष्क्रियता आ सकती है ।
- यदि गर्भवती मां संक्रमित (सिफलिस, गनौरिया) है तो कुछ यौन जनित संक्रमण अगली पीढ़ी में भी जा सकते है ।
- लम्बे समय तक गनौरिया होने से मूत्राशय की नली संकीर्ण या बन्द भी हो सकती है।
- लम्बे समय तक बच्चेदानी के मुंह में सूजन (सर्विसाइटिस) होने से बांझपन आ सकता है ।

लक्षण व बिना लक्षण वाले एस.टी.आई. :

कुछ एसटीआई में बाहरी कोई लक्षण नहीं दिखते हैं लेकिन अंदरूनी लक्षण हो सकते हैं । इसी लिए एक चिकित्सक द्वारा अंदरूनी जांच आवश्यक है । इसके अलावा, सिफलिस के लक्षण कुछ समय में गायब हो जाते हैं और केवल खून की जांच से ही इसकी पुष्टि हो सकती है ।

पुरुषों की तुलना में महिलाओं को और अधिक संक्रमण होने का खतरा है।

शारीरिक कारण

- महिलाओं में प्रजनन क्षेत्र में म्यूकस झिल्ली का चौड़ा क्षेत्र तथा लंबे समय तक वीर्य का योनि में रहना।
- महिलाओं के प्रजनन अंगों के अन्दर होने के कारण रोग के लक्षण देर से पता चलते हैं।

सामाजिक कारण

- विशेषकर निम्न सामाजिक स्तर के परिवारों में प्रजनन स्वास्थ्य सहित स्वास्थ्य के अन्य मुद्दों की परिवार अनदेखी करता है।
- बीमारी के बारे में जानकारी या सूचना का अभाव
- महिला का उनके प्रजनन स्वास्थ्य पर. कम नियंत्रण होता है
- एसटीआई का संबंध यौन व्यवहार के साथ है इसलिए सामाजिक तौर पर यह बात स्वीकार नहीं होती कि अपने रोग के बारे में बताए।

साथी के उपचार का महत्व

- किसी भी एक साथी को अगर एसटीआई है, तब दोनो को डॉक्टर की सलाह के अनुसार उपचार कराना चाहिए व दवा लेनी चाहिए ताकि पुनः संक्रमण न हो। साथी में एसटीआई के लक्षण न होने पर भी ऐसा किया जाना चाहिए ।

(Adapted from 'Training Manual for Counselors STI/RTI Clinics', NACO and PE Basic Training Manual'. Pathfinder International Mukta Project)

- अब यौन संक्रमण के प्रबंधन में पियर की भूमिका पर चर्चा केन्द्रित करें।
- यौन संक्रमण के शीघ्र इलाज के महत्व को ध्यान में रखते हुए पियर से पूछें कि इस स्थिति को बदलने के लिए वह क्या कर सकते हैं?
- प्रतिभागियों के साथ चर्चा के बाद ही छूटी हुई भूमिकाओं को जोड़ते हुए एसटीआई प्रबंधन में पियरकी भूमिका की एक व्यापक सूची बनवाएं ।

एस.टी.आई. प्रबंधन में पीयर की भूमिका

- समुदाय के पसंदीदा स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की पहचान करें और उनके साथ नेटवर्क करें।
- यौन कर्मियो, एम.एस.एम, आई.डी.यू. और उनके ग्राहकों को एसटीआई के बारे में जानकारी दें।
- क्लिनिक में स्वास्थ्य जाँच कराने के लिए उन्हें प्रेरित करें।
- उनके साथ क्लिनिक में जाना (अगर वे तैयार हैं) ताकि उनका विश्वास प्राप्त कर सकें।.
- सिफलिस जांच (वर्ष में दो बार) के लिए समुदाय के सदस्यों को प्रेरित करें।
- उपचार के बारे में उनसे पूछताछ करें व परामर्श दें।
- साथी को क्लिनिक पर लाने की कोशिश करें।
- कंडोम के लगातार इस्तेमाल के बारे में जानकारी एवं परामर्श दें।.
- सेवाओं की गुणवत्ता की निगरानी –गोपनीयता बनाए रखना, परियोजना के कर्मचारियों के अनिर्णायक एवं दोस्ताना व्यवहार पर ध्यान देना।
- क्लिनिक प्रबंधन टीम के सक्रिय सदस्य होना ।
- क्लिनिक बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेना तथा फीडबैक देना ताकि क्लिनिक टीम एवं आउटरीच टीम द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के नियोजन में सहायता मिल सके।
- क्लिनिक/एसटीआई सेवा प्रदाताओं और समुदाय के सदस्यों के बीच एक कड़ी का काम करना।
- एक ओ.आर.डब्लू के साथ मिलकर उन हॉटस्पॉट की योजना बनाना जहां क्लीनिक पर एच.आर.जी. कम मात्रा में आ रहे हों।
- समुदाय के नए सदस्यों को सेवा का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

(Adapted from 'PE Basic Training Manual', Pathfinder International Mukta Project)

सत्र 2 : कंडोम को बढ़ावा देना
अ) : पुरूष और महिला कंडोम
ब) : कंडोम की मांग और आपूर्ति

सत्र 2अ : पुरूष और महिला कंडोम

उद्देश्य : प्रतिभागियों को कंडोम के प्रयोग के बारे में पूरी जानकारी देना और प्रदर्शन के विभिन्न चरणों का अभ्यास कराना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी पुरुष और महिला कण्डोम के प्रदर्शन के विभिन्न चरण जान पाएंगे । प्रतिभागी स्पष्ट रूप से जान पाएंगे कि स्वयं उन्हे फील्ड में कौन कौन सी बाते बतानी हैं।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : चर्चा, प्रदर्शन, प्रस्तुतिकरण, समझाना

सामग्री / तैयारी : चार्ट, मार्कर पेन, पुरुष और महिला कंडोम, लिंग का मॉडल योनि का मॉडल (यदि उपलब्ध हो)

प्रक्रिया :

कंडोम के बारे में बात करके सत्र शुरू करें । समूह की इच्छा के अनुसार पुरुष, महिला कंडोम या दोनों पर बात की जा सकती है ।

पुरुष कंडोम	महिला कंडोम
लेटेक्स से निर्मित	पालीयूथरेन से निर्मित
तेल आधारित ल्यूब्रिकेन्ट के साथ उपयोग में नहीं लाया जा सकता	पानी और तेल आधारित ल्यूबरिकेन्ट, दोनों के साथ उपयोग में ला सकते हैं
खड़ी अवस्था वाले लिंग पर ही लगा सकते हैं	लिंग की अवस्था पर निर्भरता नहीं
पुरूष लिंग एवं महिला के आंतरिक जननांगों को ढकता है	पुरूष लिंग (आधार भी), महिला के आंतरिक तथा कुछ बाहरी हिस्से को भी ढकता है
स्खलन के तुरंत बाद हटाना पड़ता है	स्खलन के तुरंत बाद हटाना आवश्यक नहीं है
गर्म और सीलन वाले जगह पर लेटेक्स खराब हो जाता है	गर्मी और सीलन से पालीयूथरेन कंडोम को नुकसान नहीं पहुंचता

पुरुष कंडोम के बारे में महत्वपूर्ण बिंदु :

- कंडोम लगाते समय यदि ऐसा लगता है कि उल्टी तरफ से लगा है तो उसी कंडोम की साइड बदलकर उपयोग में न लाया जाए चूकिं वह कंडोम पहले ही शरीर को छू चुका है तो शरीर के कुछ तरल पदार्थ उसके साथ चिपक सकते हैं और संक्रमण का खतरा हो सकता है। ऐसी अवस्था में दूसरा कंडोम इस्तेमाल करना चाहिए।
- मुख मैथुन में संक्रमण के अवसर कम होते हैं परन्तु फिर भी कंडोम का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- कंडोम लगाना एक कौशल है और इसे सहज ढंग से लगाना चाहिए ।
- कंडोम धूप और पानी से दूर सूखे तथा ठंडे स्थान पर रखा जाना चाहिए ।
- अतिरिक्त ल्यूबरिकेन्ट की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि कंडोम में ल्यूबरिकेन्ट पहले से ही होता है लेकिन फिर भी अगर जरूरत हो तो जल आधारित ल्यूबरिकेन्ट प्रयोग में लाएं। (तेल नही)
- कंडोम कई प्रकार के होते हैं जैसे फ्लेवर्ड (चॉकलेट/स्ट्राबेरी) और टेक्सचर्ड (डॉटेड / रिब्ड आदि) ।
- सरकारी और विभिन्न कंपनियां कंडोम बनाती हैं । सरकारी कंडोम निशुल्क बांटे जाते हैं और उनकी भी क्वालिटी उतनी ही बढ़िया होती है (समान रूप से प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं पर गुणवत्ता की जाँच)
- कुछ कंडोम का सामाजिक विपणन किया जाता है। उनकी कीमत बाजार से कम होती है ।
- कंडोम से दोहरी सुरक्षा मिलती है (संक्रमण और अनचाहे गर्भ से) ।
- आजकल बाजार में महिला कंडोम भी उपलब्ध है लेकिन वे बहुत महंगे हैं । किन्तु कुछ परियोजनाओं में सामाजिक विपणन के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं ।

महिला कंडोम की विशेषताएँ

- अतिरिक्त विकल्प, एसटीआई / एचआईवी / एड्स और अनचाहे गर्भ से अतिरिक्त सुरक्षा
- महिलाओं और पुरुषों को स्वीकार्य
- महिलाओं में सुरक्षा और नियंत्रण की भावना.
- विकल्प बढ़ने से बचाव अधिक हो पाता है।

लाभ

- जब पुरुष को कंडोम के लिए राज़ी करना मुश्किल हो तब महिला कंडोम प्रयोग में लाया जा सकता है।
- एसटीआई / एचआईवी / एड्स और अनचाहे गर्भ से प्रभावी सुरक्षा
- अवरोध रहित यौन संबंध
- लंबे समय तक प्रयोग किया जा सकता है
- यौन संबंध के दौरान सहजता
- आय में वृद्धि
- यदि ज़रूरत हो तो बिना साथी की जानकारी के उपयोग में लाया जा सकता है
- माहवारी के दौरान भी प्रयोग में लाया जा सकता है
- अपने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अपने हाथ में लेने की महिलाओं को स्वतंत्रता मिलती है
- जिनको लेटेक्स एलर्जी हो वह भी इसे प्रयोग में ला सकते हैं

- कंडोम पर चर्चा करने के बाद प्रतिभागियों से कहें कि वह कंडोम और कंडोम के उपयोग के बारे में प्रमुख भ्रान्ति व शंकाओं की एक सूची बनाएं । उनसे पूछें कि ग्राहक कंडोम का प्रयोग क्यों नहीं करते?
- उनके उत्तर सुनने के बाद छूटी हुई भन्तियों को सूची में जोड़ें । नीचे दी गयी सूची का संदर्भ लें:

कंडोम पर आम भ्रन्तियाँ और शंकाएं

- सेक्स के दौरान कंडोम के प्रयोग में परेशानी आती है
- संभोग के दौरान कंडोम फट जाएगा
- कंडोम के प्रयोग से यौन सुख कम मिलता है
- कंडोम चिपचिपा और तैलीय होता है
- कंडोम का प्रयोग करने से पहले लिंग ढीला पड़ जाता है
- डबल कंडोम बेहतर सुरक्षा प्रदान करेगा
- कंडोम का प्रयोग करने से साथी के लिए उसकी भावुकता में कमी आ जाती है
- कंडोम दो साथियों के बीच विश्वास में कमी लाता है

इन भ्रान्तियों को स्पष्ट करते हुए बताएं :

- कंडोम चिकनाईयुक्त और मुलायम होते हैं और कंडोम के सही इस्तेमाल से जलन नहीं होती है ।
- दो कंडोम एक साथ प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि दोनों के फटने की संभावना बढ़ जाती है ।
- कंडोम भावनात्मक जुड़ाव में कोई बाधा नहीं डालते।
- कंडोम पहनने की प्रक्रिया भी सुखद है।
- यदि ग्राहक कंडोम का उपयोग करता है तो उसे अधिक मज़ा आएगा क्योंकि उसकी एसटीआई या एचआईवी / एड्स से संक्रमित होने का तनाव या आशंका दूर हो जाएगी ।
- किसी भी 2 प्रतिभागियों को पुरुष कंडोम का प्रदर्शन करने के लिए बुलाएं । अन्य प्रतिभागियों को प्रदर्शन को ध्यान से देखने के लिए कहें ।
- प्रदर्शन करने के बाद, प्रतिभागियों से पूछें क्या यह सही ढंग से किया गया था । यदि हाँ, तो प्रयासों की सराहना करे । अगर नहीं, तो अन्य प्रतिभागियों से सुधार हेतु सुझाव देने को कहें ।
- प्रतिभागियों को फिल्म '' कमला दीदी और एक नई पियरको बनाना '' में किए गए कंडोम प्रदर्शन की याद दिलाएं और पूछें कि कौन से चरण इसमें छूट गए हैं।
- विस्तार में पुरुष कंडोम के प्रदर्शन के चरण समझाएं।

पुरूष कंडोम प्रदर्शन

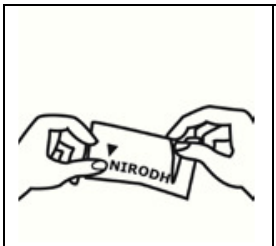	पहला चरणः जो पढ़ लिख सकते हैं वह कंडोम के पैकेट पर उसकी एक्सपायरी तिथि पढ़ लें और जो पढ़ लिख नहीं सकते वह यह जांच लें कि जब पैकेट के एक किनारे को दबाते हैं तो कंडोम आसानी से इधर उधर हो जाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो कंडोम उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है।
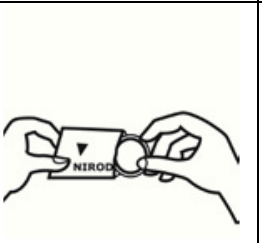	दूसरा चरणः पैकेट को एक तरफ से ध्यान से फाड़ें ताकि कंडोम सुरक्षित रहे और पैकेट से बाहर निकालें।
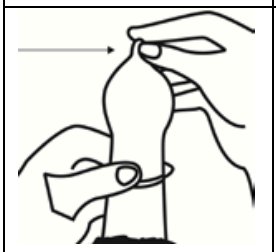	तीसरा चरणः कंडोम का सही साइड देख लें और फिर अपने अंगूठे और उंगली के बीच के हिस्से से कंडोम को पकड़ें ताकि कंडोम के निपल से हवा बाहर निकल जाए। यह सुनिश्चित करें कि कंडोम का घेरा बाहर की तरफ हो।
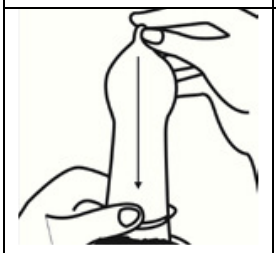	चौथा चरणः कंडोम की टिप को दो उंगलियों से पकड़ते हुए उसे खड़े लिंग पर रखें और धीरे धीरे कंडोम को लिंग की जड़ तक चढ़ाएं। साथी के मुख, गुदा एवं योनि में लिंग जाने से पहले ही उसपर कंडोम चढ़ा लेना चाहिए
	पांचवा चरणः यौन क्रिया
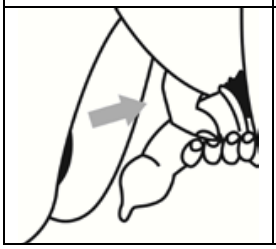	छठा चरणः स्खलन के बाद लिंग ढीला पड़ने से पहले ही उसे योनि से बाहर निकाल लें। साथी के शरीर से लिंग बाहर निकालते समय ध्यान रखें कि कंडोम फिसल न जाए। कंडोम को निकालते समय लिंग की जड़ के पास से कंडोम को पकड़े रहें।

	सातवा चरणः कंडोम को लिंग से निकाल लें, ध्यान रहे कि वीर्य साथी की योनि, मुख या गुदा के आस पास न फैले।
	आठवां चरणः कंडोम के खुले किनारे पर गांठ बांधे ताकि वीर्य फर्श पर न गिरे। कंडोम को कागज में लपेट कर कूढ़ेदान में डालें।
(Adapted from poster by PATHFINDER International Mukta Project)	

- इसके बाद प्रतिभागियों को जोड़ों में विभाजित करें और हर जोड़े को उन चरणों को ध्यान में रखते हुए जिनपर ऊपर चर्चा कर चुके हैं , कंडोम प्रदर्शन का अभ्यास करने को कहें ।
- इस बात पर ज़ोर दे कि प्रतिभागियों को यह प्रक्रिया समुदाय के सदस्यों को क्षेत्रीय स्तर पर सिखानी होगी इसलिए उन्हें बिना गलती करे यह करना आना चाहिए ।
- एक बार प्रतिभागी कंडोम प्रदर्शन में सहज महसूस करें फिर उन्हें अन्य गतिविधियों का भी अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे उनकी आँख पर कपड़ा बांधकर लिंग मॉडल पर अंधेरे में कंडोम चढ़ाने का अभ्यास (कई बार वह जगह या कमरे जहाँ ग्राहकों का मनोरंजन किया जाता है उनमें अंधेरा होता है । यह ज़रूरी है कि तब भी कंडोम को सही तरीके से चढ़ाना आना चाहिए)
- पुरूष कंडोम प्रदर्शन के बाद यदि प्रशिक्षक उचित समझे और समूह उत्सुक हो तो महिला कंडोम प्रदर्शन भी कर सकते हैं ।
- नोट : प्रदर्शन के लिए सबको अलग कंडोम नहीं मिलेगा लेकिन सीखने के लिए एक कंडोम का दुबारा प्रयोग किया जा सकता है ।

महिला कंडोम प्रदर्शन

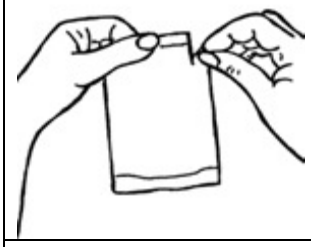	चरण 1: एक्सपाइरी तिथि चेक करें। खोलने के लिए, तीर के निशान से नीचे की तरफ फाड़ें।
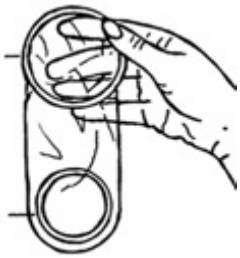	चरण 2: पैकेट से कंडोम को निकालें।
	चरण 3: कंडोम के अन्दरूनी घेरे को अंगूठे और तर्जनी उंगली से पकड़ें। अन्दरूनी घेरे को दबाते हुए मोड़कर अंग्रेज़ी 8 का आकार बनाएँ और कसकर पकड़ें।
	चरण 4: महिला कंडोम को योनि में लगाने के लिए एक आरमदायक स्थिति में आएं। यह तीन अवस्थाओं में किया जा सकता है: बैठे हुए, पालथी मारकर या लेटकर।
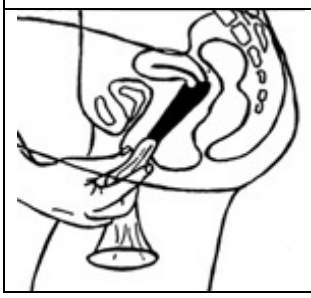	चरण 5: योनि के खुले भाग से उसके दोनों बाहरी हिस्सों को अलग करें। अब अन्दरूनी घेरे को योनि में अन्दर डालें जहाँ तक सम्भव हो।

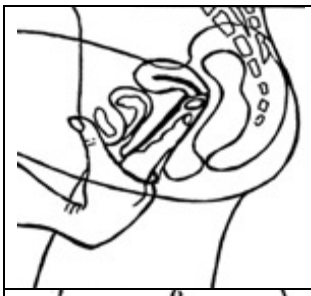	चरण 6: महिला कंडोम में तर्जनी या बीच की उंगली डालकर कंडोम को ठीक से लगा लें। अभ्यास से यह और आसान होता जाएगा।
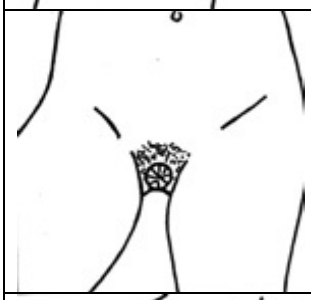	चरण 7: बाहरी घेरे के साथ कंडोम के आवरण का लगभग एक इंच हिस्सा शरीर के बाहर रहेगा।
	चरण 8: पुरूष के लिंग के प्रवेश के समय अपने हाथ से महिला कंडोम के घेरे को पकड़ें और यदि सहज हो तो लिंग को योनि में प्रवेश करने के लिए हाथ से सहयोग दें (नही तो सम्भावना है कि लिंग के योनि में प्रवेश के समय लिग महिला कंडोम के बाहरी घेरे को योनि में धकेल सकता है) या लिंग कंडोम के आवरण के बगल से महिला योनि में प्रवेश कर सकता है।
	चरण 9: महिला कंडोम को निकालने के लिए कंडोम के बाहरी घेरे को मोड़ लें ताकि वीर्य कंडोम में ही रहे और उसे सहजता से निकालें।
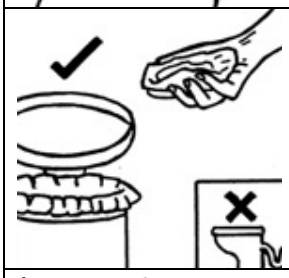	चरण 10: कंडोम को एक कागज़ में लपेटकर कूड़ेदान में डालें। टॉयलेट में न डालें।
(Adapted from www.condomdepo.com)	

निम्नलिखित द्वारा सत्र का समापन करें :

- प्रतिभागियों को ध्यान दिलाएं कि उन्हें समुदाय के सदस्यों को क्षेत्रीय स्तर पर यह जानकारी प्रदान करनी है ।
- प्रतिभागियों को बताएं कि कंडोम और कंडोम प्रदर्शन से संबंधित संदेश और सूचना, जिसका संचार उन्हें क्षेत्रीय स्तर पर करना है , उस पर संचार के अगले सत्र में विस्तार से चर्चा होगी ।

सत्र 2 ब : कंडोम की माँग एवं आपूर्ति
(भाग एक के दिवस तीन : सत्र 1 ब का संदर्भ लें)

सत्र 3 सुई और सिरिंज विनिमय (एक्सेंज) कार्यक्रम (एन.एस.ई.पी.)

सत्र 3 : सुई और सिरिंज विनिमय (एक्सेंज) कार्यक्रम (एन.एस.ई.पी)

उद्देश्य : प्रतिभागियों को सुई और सिरिंज विनिमय (एक्सेंज) कार्यक्रम (एनएसईपी) के प्रमुख उद्देश्य तथा उनके बीच एच.आई.वी. से बचाव के महत्व को समझाना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी एन.एस.ई.पी. के मुख्य उद्देश्य व उसके ऑपरेशनल पहलू समझ पाऐंगे।

समयावधि : 1 घंटा

विधि : प्रस्तुतिकरण, सुई और सिरिंज उपयोग संबंधी अभ्यास और चर्चा

सामग्री/तैयारी : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप व प्रोजेक्टर , सुई तथा सिरिंज, चिमटियां, सुई व सिरिंज फेंकने के लिए डिब्बा, लेबल, फीता, चार्ट पेपर और मार्कर पेन

प्रक्रिया :

- प्रशिक्षक पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण की सहायता से सुई एवं सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एनएसईपी) की अवधारणा व उसके ऑपरेशलन पहलुओं के बारे में प्रतिभागियों को बताएं ।
- प्रतिभागियों को सुई, सिरिंज व अन्य उपकरण प्रदान करें और सुई लगाने के सुरक्षित तरीके दिखाएं जिन्हे वह सामुदायिक सदस्यों को बता सकें। प्रतिभागियों को सुई और सिरिंज प्रदर्शन करने को कहें ।

अभ्यास के दौरान, निम्नलिखित पर जोर दें :

- एचआईवी संक्रमण का खतरा कई स्तर पर संभव है जैसे : दवा तैयार करते समय और सुई लगाते समय।

- इस्तेमाल की गई सुईयों को किसी बर्तन या ड्रग कन्टेनर में डालने से बर्तन/ड्रग कन्टेनर में एचआईवी / बीबीवी (रक्त में मौजूद वायरस द्वारा फैलने वाले संक्रमण) हो सकते हैं। (भले ही उस व्यक्ति ने अपनी ही इस्तेमाल की हुई सुई और सिरिंज क्यों न रखी हो।)

- किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा इस्तेमाल की गई सुई या सिरिंज से एच.आई.वी./बी.बी.वी. का संक्रमण हो सकता है। याद रखें कि जहां अलग सुई या सिरिंज का उपयोग किया जाता है वहां भी सुई या सिरिंज के साझा प्रयोग से एच.आई.वी. का संक्रमण हो सकता है।
- एक फिल्टर या बर्तन (कटोरी आदि) में साझेदारी करने से भी एच.आई.वी. / बी.बी.वी. का संक्रमण हो सकता है।

- किसी सार्वजनिक स्थान पर जहां अधिकांश मात्रा में सुईयां लगाई जाती हैं सही उपकरण के बाद भी एच.आई.वी. का संक्रमण हो सकता है क्योंकि जल्दबाज़ी में सुई लगाने से संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

- विभिन्न परिस्थितियों में आई.डी.यू. को अक्सर विभिन्न उपकरणों (सुई, सिरिंज, बर्तन आदि) की साझेदारी करनी पड़ती है। यह भी बहुत जल्दबाज़ी में व अचानक होता है जिससे कि स्वास्थ्य को जोखिम का डर रहता है जैसे कि एच.आई.वी. संक्रमण।

- सुई व सिरिंज को इकट्ठा करने एवं उसका निस्तारण करने में बर्ती जाने वाली सावधानियों पर चर्चा करें।

- इन बातों पर ज़ोर देते हुए सत्र का समापन करें कि नुकीले **(sharp)** उपकरणों का उचित निस्तारण करने के लिए टी.आई. यह सुनिश्चित करे कि उसके पास निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध हो।
    - पंचर प्रूफ बाक्स – क्रमबद्ध, बाईओहज़ार्ड प्रतीक के साथ चिह्नित
    - गहरे रंग से अंकित किया गया प्लास्टिक बैग – बाईओहज़ार्ड प्रतीक के साथ चिह्नित
    - मोटे रबर के दस्ताने
    - चिमटा / बड़ी फोर्सेप
    - छेद वाला प्लास्टिक बिन
    - बिना छेद का प्लास्टिक बिन
    - विसंक्रमित करने वाला घोल – सोडियम हाइपोक्लोराइट, ब्लीच
    - प्लास्टिक का बड़ा कन्टेनर (पारदर्शी सफेद या नीला रंग)
    - इस्तेमाल की गई सुईयों को नष्ट करने के लिए हब कटर, यदि सुईयों को किसी स्थान पर गाड़कर उनका निस्तारण करना हो।

सत्र 4 : ऑउट्रीच योजना

उद्देश्य	: प्रतिभागियों को आईडीयू के लिए ऑउटरीच योजना का व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करना।
अपेक्षित परिणाम	: प्रतिभागियों को आईडीयू जनसंख्या के बीच एचआईवी से बचाव हेतु आउटरीच योजना बनाने का ज्ञान प्राप्त होगा।
समयावधि	: 1 घंटा
विधि	: प्रस्तुतिकरण , छोटे समूह में कार्य और चर्चा
सामग्री/तैयारी	: पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप व प्रोजेक्टर , चार्ट पेपर , मार्कर पेन ।

प्रकिया

- पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से प्रतिभागियों को ऑउटरीच योजना के उद्देश्य और औचित्य के बारे में बताएं ।
- ऑउटरीच योजना बनाने के 6 चरणों के बारे में बताएं ।
- प्रतिभागियों को छोटे समूह में विभाजित करें और उनसे ऑउटरीच की योजना बनाने को कहें (आउटरीच योजना के चरणों का पालन करें जैसे सामाजिक मानचित्रण , स्पॉट विश्लेषण , संपर्क मानचित्रण , जोखिम/जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों का आंकलन, कार्य योजना , व्यक्तिगत स्तर पर ट्रैकिंग एवं मॉनिटरिंग)
- हर समूह को अपनी योजना प्रस्तुत करने को कहें और आउटरीच योजना की प्रक्रिया में अपनाए जाने वाले चरणों पर चर्चा करने को कहें।

सत्र का समापन निम्न बिन्दुओं द्वारा करें

- प्रभावी ऑउटरीच कार्यक्रमों के लिए योजना महत्वपूर्ण है ।
- आउटरीच योजना वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत स्तर की योजना बनाने और सेवाओं का फालो अप करने के लिए विभिन्न टूल्स का इस्तेमाल किया जाता है। यह आई.डी.यू. में व्यक्तिगत जोखिम तथा जोखिम को बढ़ाने वाले कारकों पर अधारित होते हैं।
- आउटरीच योजना यह समझने में मदद करती है कि आई.डी.यू. के लिए सामान्य और टी.आई. परियोजना से जुड़ी सेवाओं को किस प्रकार उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके द्वारा सेवाओं के अन्तराल को पहचान कर उसकी मॉनिटरिंग की जा सकती है।
- आउटरीच योजना से सेवाओं की मांग, उन तक पहुंच तथा व्यवहार परिवर्तन को जाना जा सकता है।
- एक प्रभावी आउटरीच योजना की प्रक्रिया से कार्यक्रमों में आई.डी.यू. की भागीदारी बढ़ती है।
- व्यक्तिगत स्तर पर दी जा रही सेवाओं को देखने एवं मॉनिटरिंग करने वाले फारमेट का उपयोग, इन सेवाओं को अपडेट करने के लिए साप्ताहिक आधार पर किया जाता है। यह उन रणनीतियों को पहचानने में उपयोगी है जिनके द्वारा सेवाओं की आउटरीच की गई, साथ ही नई रणनीतियों की पहचान भी कराती है।

दिवस 2 का मूल्याँकन

तिथि : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		😀	😐	😟	
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1	**यौन संचरित संक्रमण**				
2अ	**कंडोम**				
2ब	**कंडोम कि माँग और आपूर्ति (कंडोम की उपलब्धता और पहुँच का मानचित्रण, कंडोम की माँग का अनुमान, कंडोम अंतराल विश्लेषण)**				
3	**सुई और सिरिंज विनिमय (एक्सेंज) कार्यक्रम (एन.एस.ई.पी.)**				
4	**आउटरीच योजना**				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि, सामग्री, विधि, विजुअल टूल आदि पर भी टिप्पणियाँ करें

दिवस 3

दिवस 3

दूसरे दिन का पुनर्वालोकन (15 मिनट) 10.00 – 10.15

सत्र 1 : मॉनिटरिंग व डॉक्यूमेन्टेशन

- **टूल 1 : अवसर गैप विश्लेष्ण (45 मिनट)** 10.15 – 11.00
- टूल की प्रस्तुति
- समूह कार्य – टूल का अभ्यास
- समूह द्वारा प्रस्तुति

- **टूल 2 : प्रेफरेन्स रैंकिंग (30 मिनट)** 11.00 – 11.30
- टूल की प्रस्तुति
- समूह कार्य – टूल का अभ्यास
- समूह द्वारा प्रस्तुति

चाय अवकाश (15 मिनट) 11.30 – 11.45

सत्र 1 कमशः

टूल 3 : पियर मानचित्रण (30 मिनट) 11.45 – 12.15

- टूल की प्रस्तुति
- समूह कार्य – टूल का अभ्यास
- समूह द्वारा प्रस्तुति

टूल 4 : पियर साप्ताहिक योजना और गतिविधी शीट (45 मिनट) 12.15 – 01.00

- टूल की प्रस्तुति
- समूह कार्य – टूल का अभ्यास
- समूह द्वारा प्रस्तुति

भोजन अवकाश (45 मिनट) 01.00 – 01.45

सत्र 2 : घाव से बचाव एवं उसका प्रबंधन (1 घंटा) 01.45 – 02.45

- प्रस्तुति
- गतिविधि और प्रस्तुति – शारीरिक मानचित्रण – इंजेक्शन लगाने की सुरक्षित जगह
- शॉर्ट फिल्म प्रस्तुति और चर्चा

सत्र 3 : ड्राप–इन केन्द्र – डीआईसी (1 घंटा) 02.45 – 03.45

प्रस्तुति – डीआईसी का दृष्टिकोण और उद्देश्य

- केस स्टडी कार्ड

दिवस 3 : मूल्याँकन (15 मिनट) 03.45 – 04.00

सत्र 4 : प्रशिक्षण मूल्याँकन (30 मिनट) 04.00 – 04.30

सत्र 1 : मॉनिटरिंग एवं डॉक्यूमेन्टेशन

टूल 1 : अवसर अन्तराल विश्लेषण

टूल 2 : प्रैफरेन्स रैंकिंग

टूल 3 : पियर मानचित्रण

टूल 4 : पियर साप्ताहिक योजना और गतिविधि शीट

भाग 1 के दिवस 4 सत्र 1 का संदर्भ लें

सत्र 2 : घाव (abscess) से बचाव एवं उसका प्रबंधन

सत्र 2 : घाव से बचाव एवं उसका प्रबंधन

उद्देश्य : घाव कैसे बनता है और उसके विकसित होने की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में प्रतिभागियों को बताना।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागियों को घाव से बचाव एवं उनकी देखभाल व प्रबंधन के लिए नई तकनीकों की जानकारी होगी।

समयावधि : 1 घंटा

पद्धति : प्रस्तुतिकरण , शारीरिक मानचित्रण, दृष्य–श्रव्य प्रदर्शन व चर्चा

सामग्री / तैयारी : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप–प्रोजेक्टर , चार्ट पेपर , मार्कर पेन , एसपीवाईएम फिल्म

प्रक्रिया

- पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण की सहायता से प्रतिभागियों को बताएं कि घाव कैसे बनता है तथा घाव के विकसित होने की विभिन्न अवस्थाएं क्या हैं?
- इसके बाद प्रतिभागियों को घाव की देखभाल व उससे संबंधित जटिलताओं के प्रबंधन की नई तकनीकों के उद्देश्य के बारे में बताएं।
- किसी एक प्रतिभागी को शरीर की बाहरी आकृति बनाने के लिए कहें। फिर प्रतिभागियों से कहें कि वह शरीर के उन अंगों को दर्शाएं जहां पर सुई द्वारा नशा लेना सुरक्षित होगा तथा वह अंग जहां पर सुई लगाना सुरक्षित नहीं होगी।
- पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण की सहायता से प्रतिभागियों के साथ सुई लगाने की उपयुक्त तकनीकों पर चर्चा करें। (जैसे नसों व धमनियों **(arteries)** के बीच अन्तर को पहचानना और शरीर के विभिन्न अंगों में सुई लगाने के जोखिम के स्तरों की पहचान करना।)
- घाव से बचाव एवं प्रबंधन पर प्रतिभागियों को एक छोटी फिल्म दिखाएं (एस.पी.वाई.एम. द्वारा निर्मित)। फिल्म को आठवें मिनट पर रोककर फिल्म में दिखाए गए मुद्दों पर चर्चा करें।
- निम्न के आधार पर सत्र का समापन करें:
    - घाव गैर घुलनशील पदार्थों के सुई द्वारा शरीर में पहुंच जाने, सुई लगने के स्थान पर जीवाणुओं के द्वारा संदूषण **(bacteria contamination)** तथा सुई लगाने के स्थान पर मृत ऊतकों **(dead tissues)** के कारण बनते हैं।
    - बचाव संबंधी उपायों में शामिल है– संबंधित व्यक्ति को सुरक्षित सुई लगाने की विधियों के बारे में बताना, सुई लगाने की उचित तकनीक तथा सुई लगाने के सही स्थान का चयन करने में सावधानी बरतने के बारे में जानकारी देना।
    - घाव की देखभाल का उद्देश्य घाव के आकार को बढ़ने से रोकना तथा इससे होने वाली जटिलताओं से बचना है। ऐसा शीघ्र उपचार के माध्यम से किया जा

सकता है जिससे घाव जल्दी से जल्दी भर/ठीक हो जाए। इसके अलावा घाव से होने वाले दर्द से आराम दिलाने के लिए व जटिल केसों को शीघ्र ही चिकित्सीय उपचार हेतु रेफर किया जाना चाहिए।

- घाव के उचित प्रबंध के लिए समय पर उसकी पहचान, उपचार और जटिलताओं की पहचान होना बहुत ज़रूरी है।

सत्र 3 ड्रॉप–इन–केंद्र (डी.आई.सी.)

सत्र 3 : **ड्राप–इन–केंद्र (डी.आई.सी.)**

उद्देश्य : प्रतिभागियों को डीआईसी की आवश्यक्ता , कार्यप्रणाली और अर्थ समझाना ।

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी डीआईसी के उद्देश्य, डीआईसी को चलाने से संबंधित विशिष्ठ प्रक्रियाओं तथा नियमों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे।

समयावधि : 1 घंटा

विधि : प्रस्तुतिकरण , परिस्थिति कार्ड एवं चर्चा

सामग्री/तैयारी : पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण , लैपटॉप–प्रोजेक्टर , चार्ट पेपर , मार्कर पेन केस स्टडी कार्ड 1 और 2

प्रक्रिया

- पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण द्वारा प्रतिभागियों को डीआईसी की अवधारणा व उसके उद्देश्यों के बारे में बताएं।
- इसके बाद , प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित करें और केस स्टडी का प्रयोग कर के आउटरीच कार्यक्रम और आईडीयू के परिपेक्ष्य में डीआईसी के लाभों पर चर्चा करें ।
- ओआरडब्लू को समूह कार्य व चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें।

केस स्टडी 1: सुनील भीड़ को संभालते हुए

एक आई.डी.यू. परियोजना में ओआरडब्लू के रूप में कार्य कर रहा सुनील जब काम पर आता है तो पाता है कि एक उग्र भीड़ उनके मौहल्ले में डी.आई.सी. खोले जाने के विरोध में प्रदर्शन कर रही है। उन्हें डर है कि इससे उनके पड़ोस में अपराध बढ़ जाएंगे। सुनील जानता है कि इस परियोजना के लिए डी. आई.सी. कितनी महत्वपूर्ण है और यह इसी जगह पर खोली जानी चाहिए।

प्रतिभागियों से पूछें

- सुनील को क्यों लगता है कि डीआईसी आईडीयू परियोजना के लिए महत्वपूर्ण है?
- एक ड्रॉप–इन–केंद्र की स्थापना के संबंध में उस स्थान पर रहने वाले समुदाय में किस प्रकार का भय हो सकता है ?
- क्या समुदाय की स्वीकृति हासिल करना महत्वपूर्ण है ?
- ड्रॉप–इन–केंद्र की आवश्यकता के बारे में सुनील विरोध कर रहे लोगों को क्या बता सकता है ?
- क्या ऐसी स्थिति से बचा जा सकता था? यदि हां, तो कैसे?

केस स्टडी 2 माईना को डी.आई.सी. पहुंचाने का प्रयास करते हुए रिकी

मोईना पिछले 3 वर्षों से सुई से ड्रग्स ले रहा है। रिकी, जो आई.डी.यू. परियोजना में एक पियर के रूप में कार्य कर रहा है, मोईना को अपने साथ डी.आई.सी. ले जाने के लिए राज़ी करने का प्रयास करता है। लेकिन मोईना ऐसा करने में हिचकिचा रहा है। रिकी की मोईना के साथ यह दूसरी मुलाकात है।

प्रतिभागियों से पूछें

- मोईना डी.आईऋसी. जाने में क्यों हिचकिचा रहा है?
- रिकी उसे कैसे मना सकता हैं?
- वह कौन सी सेवाएं हैं जो मोईना को डी.आई.सी. में उपलब्ध हो सकती हैं ?
- मोईना के अलावा, और कौन डीआईसी जा सकता हैं?

- समूहों को उनकी चर्चा प्रस्तुत करने का अवसर दें ।
- प्रस्तुतिकरण व चर्चा के दौरान सुनिश्चित करें कि:

केस स्टडी 1 –

- चर्चा करें कि डीआईसी से किसी आउटरीच परियोजना का महत्व किस प्रकार बढ़ जाता है?
- एक डीआईसी के आदर्श स्थान के लिए ब्रेनस्टार्म करें।
- चर्चा करें कि स्थानीय लोगों की चिंताओं का निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है और आई.डी.यू. परियोजना में पैरवी के प्रयासों का क्या महत्व है?

केस स्टडी 2 –

- प्रेरणा और प्रोत्साहन के लिए रणनीतियों का निर्माण ।
- डीआईसी पर दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं (मनोरंजन/आराम, कंडोम की उपलब्धता, एसटीआई प्रबंधन, परामर्श, समूह चर्चा, रेफरल आदि) की सूची बनवाएं ।
- गोपनीयता के नियम और डी.आई.सी. में जाने की स्वीकृति से संबंधित मूल नियम पर विशेष ज़ोर दें।
- रेफरल के विभिन्न बिंदुओं के साथ साथ इस बात पर भी चर्चा करें कि डीआईसी में कौन जा सकता है (आई.डी.यू., , आईडीयू का पार्टनर, आईयूडी के परिवार के सदस्य, सामान्य समुदाय) ।
- डीआईसी के स्थान का महत्व, डीआईसी के नियम व प्रक्रियाएं, डीआईसी पर दी जाने वाली सेवाएं और डीआईसी स्टाफ और उनकी भूमिकाओं के महत्व पर चर्चा करते हुए सत्र का समापन करें।
    - डीआईसी का मुख्य उद्देश्य ऐसे केन्द्रों/क्लीनिकों के द्वारा सेवा उपलब्ध कराना है जो भौगोलिक रूप से आईडीयू से जुड़े हुए हों और वहां आसानी से पहुंचा जा सके।
    - डीआईसी द्वारा विभिन्न सामग्री व सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं जिनमें आउटरीच, एन.एस.ई.पी., आई.ई.सी. की जानकारी, मनोवैज्ञानिक सपोर्ट, घाव का प्रबंधन, एस.टी.आई. उपचार, कंडोम कार्यक्रम, रेफरल सेवाएं और मनोरंजन/आराम की सुविधाएं सम्मिलित हैं। डीआईसी एक ऐसा सुरक्षित स्थान है जहां आईडीयू एक साथ मिल सकते हैं।
    - आईडीयू के साथ डीआईसी उनकी पत्नी या पति/यौन संबंध रखने वाले साथी, आई.डी.यू. के परिवार के सदस्य और सामान्य समुदाय के लोग आ सकते हैं।

दिवस 3 का मूल्याँकन

तिथि : प्रतिभागी का नाम :

सत्र	विवरण	फीडबैक			टिप्पणियाँ
		😀	😐	☹️	
		अच्छा	ठीकठाक	बुरा	
सत्र के प्रति प्रतिक्रिया					
1	**मॉनिटरिंग व डॉक्यूमेन्टेशन**				
2	**घाव से बचाव एवं उसका प्रबंधन**				
3	**ड्राप इन केन्द्र– डी.आई.सी.**				

अन्य टिप्पणियाँ

.....
.....
.....
.....

कृपया अवधि, सामग्री, विधि, विजुअल टूल आदि पर भी टिप्पणियाँ करें

सत्र 4: प्रशिक्षण मूल्यांकन

उद्देश्य : प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रति प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया को समझना

अपेक्षित परिणाम : प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यशाला के बारे में अपने विचार व्यक्त करेंगे और प्रशिक्षक को फीडबैक दे पाएंगे।

समयावधि : 30 मिनट

विधि : अभ्यास

सामग्री/तैयारी : प्रत्येक प्रतिभागी के लिए 18 टोकन के सैट (6 लाल, 6 हरे, 6 पीले), प्रश्नों की सूची, 6 बॉक्स। यदि टोकन उपलब्ध नही हैं तो प्रशिक्षक स्थानीय सामग्री जैसे चना, मटर या पत्थर का प्रयोग कर सकते हैं।

प्रकिया

- प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यशाला पर उनके विचार/अनुभवों को ईमानदारी से व्यक्त करने /फीडबैक देने का अनुरोध करें।
- प्रत्येक प्रतिभागी को 18 टोकन का एक सैट दे (हर प्रतिभागी को 6 लाल, 6 हरे, 6 पीले टोकन मिलेंगे)। इसी दौरान प्रशिक्षक 6 बॉक्स तैयार रखेगा (हर बॉक्स में एक चीरा होना चाहिए जिससे कि टोकन को उसके अन्दर से डाला जा सके)
- प्रशिक्षक फिर प्रतिभागियों को समझायेंगे कि वह प्रश्नों की सूची में एक प्रश्न पढ़ेंगे। प्रतिभागी निर्णय लेंगे कि उक्त प्रश्न के उत्तर के लिए उनके अनुसार कौन से रंग का टोकन उपयुक्त है और उस टोकन को बॉक्स में डाल देंगे, तो यदि उनका उत्तरः–
  - बहुत अच्छा है या बहुत उपयोगी है तो हरे रंग का टोकन बॉक्स में डालें
  - अगर ठीक है तो पीले रंग का टोकन डालें
  - अगर अच्छा नही या बहुत उपयोगी नही तो लाल रंग का टोकन डालें
- प्रत्येक प्रश्न के लिए प्रशिक्षक अलग–अलग बॉक्स का उपयोग करेगा।

फीडबैक के प्रश्न

- प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान चर्चा की गई विषय–वस्तु उनके कार्य में कितनी उपयोगी है?
- प्रशिक्षण कार्यशाला में अपनाए गए तरीके कैसे थे?
- समय का प्रबंधन कैसा था?
- आवासीय व्यवस्था कैसी थी?
- भोजन की व्यवस्था कैसी थी?
- कुल मिलाकर वह प्रशिक्षण को कैसे आंकेंगे?

- प्रतिभागियों से बचे हुए टोकन एकत्रित करें फिर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करें।
- प्रतिभागियों के उन सुझावों पर चर्चा करे जिनसे उनके लिए इसी प्रकार के रिफ्रेशर प्रशिक्षण को बेहतर बनाने में सहयोग मिलेगा।
- प्रशिक्षक सभी सदस्यों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन करें।

संलग्नक

एनर्ज़ाइज़र

1. प्रतिभागियों को 5 – 5 के छोटे समूहों में बांटें। निम्न शर्तों के आधार पर समूह के लोग एक दूसरे का हाथ पकड़ें:

    - कोई भी व्यक्ति अपने बगल वाले व्यक्ति का हाथ नहीं पकड़ेगा।
    - कोई भी व्यक्ति एक ही आदमी के दोनों हाथ नहीं पकड़ेगा।
    - अतः समूह एक दूसरे से एक गांठ (knot) के रूप में बंधेगा।
    - इस खेल का उद्देश्य है इस गांठ को खोलकर एक गोला बनाना परन्तु यह ध्यान देना होगा कि किसी भी समय कोई भी व्यक्ति किसी का भी हाथ न छोड़े।
    - प्रतिभागियों से कहें कि वह गांठ को खोलने के विभिन्न तरीका अपनाएं जैसे हाथों के नीचे से जाकर, पीछे मुड़कर आदि।
    - ज़्यादातर समूह कुछ ही मिनटों में सफलता प्राप्त कर लेते है अतः उन्हें प्रोत्साहित करते रहें।
    - इसके दूसरे चरण में सभी छोटे समूह आपस में जुड़कर एक बड़ा गोला बनाएं। खेल की प्रक्रिया पहले जैसी ही रहेगी। इस चरण में गांठ को खेलना ज़्यादा मुश्किल होगा, लेकिन प्रतिभागियों को गांठ खोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
    - खेल के अन्त में एक संक्षिप्त चर्चा करें यह बताते हुए कि जैसे दूसरी गांठ खोलने में समस्याएं आई थीं उसी प्रकार एक पियर को अपने क्षेत्र में बड़ी व जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है जिनका हल उसे निकालना होगा।
    - कुछ अन्य समस्याएं वह अपनी साथियों के सहयोग व स्वयं के दृढ़ निश्चय से सुलझा लेती है।
    - एक पियर को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कुछ परेशानियां समुदाय स्वयं ही सुलझा लेता है अतः पियर को एक कैटलिस्ट के रूप में काम करके समुदाय को समस्याओं का समाधान करने में मदद करनी होती है।
2. प्रतिभागियों को जोड़ों में बांटे। हर जोड़े में एक प्रतिभागी 'अ' है और दूसरा 'ब' है। 'अ' प्रतिभागी कोई गतिविधि करेंगे व 'ब' वाले प्रतिभागी शीशे का काम करते हुए 'अ' की नकल करेंगे। कुछ समय बाद 'अ' और 'ब' की भूमिका आपस में बदल जाएगी। यानि अब 'ब' कोई गतिविधि करेगा व 'अ' उसकी नकल करेगा।
3. प्रतिभागियों से गोले में बैठने को कहें, एक व्यक्ति को स्वेच्छा से कमरे के बाहर जाने को कहें। प्रतिभागी फिर एक लीडर चुनेंगे जिसे कुछ गतिविधि करनी होगी जैसे ताली बजाना, पैरों को थपथपाना या हाल हिलाना। समूह को अपने लीडर की गतिविधि की नकल करनी होगी। अब बाहर गए व्यक्ति को अंदर बुलाएं और उसे यह बताने को कहें कि समूह का लीडर कौन है। लीडर को थोड़ी थोड़ी देर में अपनी गतिविधियों को बदलना होगा और समूह को उसका पालन करना होगा। लेकिन समूह को चौकन्ना रहना होगा कि वह लीडर को बार बार न देखें ताकि बाहर गए व्यक्ति को पता न चले। यदि लीडर पकड़ा जाता है तो वह कमरे से बाहर जाए और दूसरे लीडर का चुनाव करके इस खेल को जारी रखें।
4. प्रतिभागियों को जोड़ों में बांटे और उनसे कहें कि अपने साथी को ध्यान पूर्वक देखें। फिर जोड़े में से एक व्यक्ति को कमरे से बाहर भेजें। कमरे में जो साथी है उसको अपने में कुछ बदलाव करने के लिए कहें (उदाहरण के लिए वह अपनी चूड़ी उतार सकती है, दुपट्टे को दूसरे ढंग से पहन सकती है, यहां तक कि अपने जूते/चप्पल किसी दूसरे से बदल भी सकती है) बाहर गए व्यक्ति को अंदर बुलाएं। अब

उसे अपने साथी के बदलाव के बारे में बताना होगा। यदि वह सही बताती है तो फिर वह अपना पहनावा बदलेगी/बदलेगा और उसका साथी बाहर जाएगा।

5. प्रतिभागियों से खड़े होने को कहें और उनको बताएं कि जो निर्देश प्रशिक्षक देगा वह उसका पालन करेंगे। अब कोई गतिविधि करते हुए उनको निर्देश दें (उदाहरण के लिए अपने हाथ ऊपर उठाकर कहें कि हाथ ऊपर उठाएं, फिर आंखें बंद करें और कहें कि आंखें बंद करो), कुछ समय बाद कहें कुछ और करें कुछ (उदाहरण के लिए दांया पैर उठाएं और कहें कि दायां हाथ उठाओ)। संभावना है कि समूह आपकी गतिविधि को दोहराएगा न कि आपके कहने को। इस बात पर सबका ध्यान केन्द्रित करें। फिर कुछ देर और इस खेल को जारी रखें।
6. प्रतिभागियों को गोले में खड़े होने के लिए कहें और प्रशिक्षक बीच में खड़े हों। इस खेल का उद्देश्य एक कहानी बनाना है जिसमें हर व्यक्ति एक वाक्य बोलेगा। प्रशिक्षक अपनी तरफ से कुछ वाक्य बोलकर शुरूआत करे (उदाहरण के लिए ''एक लड़के ने महसूस किया कि बारिश होने वाली है, उसे पता नहीं था कि वह बस पकड़ पाएगा या नहीं'') और फिर किसी प्रतिभागी से कहानी को आगे बढ़ाने के लिए एक वाक्य जोड़ने को कहें (उदाहरण के लिए वह कह सकती है कि ''अचानक उसने किसी को सड़क पार करते हुए देखा'') दूसरा प्रतिभागी दूसरा वाक्य जोड़ेगा, इस तरह सभी प्रतिभागी एक एक वाक्य जोड़ते हुए कहानी को पूरा करेंगे। ध्यान दें कि प्रतिभागी यह समझें कि उनके द्वारा बताया गया वाक्य कहानी को आगे बढ़ा रहा है। यदि किसी को कोई परेशानी है तो आप एक वाक्य जोड़कर कहानी को आगे बढ़ाने में प्रतिभागियों की मदद कर सकते हैं। जब सभी प्रतिभागी कुछ न कुछ जोड़ लें या जब ऐसा लगता है कि कहानी समाप्त हो गई तो खेल का अंत करें।

GLOSSARY

AIDS : Acquired Immuno Deficiency Syndrome

ANM: Auxiliary Nurse Midwife

ART : Anti Retroviral Therapy

CBO : Community-based Organisation

DIC : Drop-In-Center

FSW : Female Sex Worker

HIV : Human Immuno-deficiency Virus

HRG : High Risk Group

ICTC : Integrated Counselling and Testing Center

IDU : Injecting Drug User

IPC: Inter-personal Communication

LAP: Lower Abdominal Pain

MSM : Men who have Sex with Men

NACO : National AIDS Control Organisation

NACP II : National AIDS Control Programme Phase 2

NACP III : National AIDS Control Programme Phase 3

NGO : Non-Government Organisation

NSEP: Needle and Syringe Exchange Programme

ORW : Outreach Worker

OST: Oral Substitution Therapy

PE : Peer Educator

PLHIV : People Living with HIV/AIDS

RTI: Reproductive Tract Infection

SACS : State AIDS Control Society

SPYM: Society for the Promotion of Youth and Masses

STI : Sexually Transmitted Infection

TG : Transgender

TI : Targeted Intervention

Translated by TSU/UPSACS